



ऐच्छिक हिन्दी – IV

Edited By
Dr. Reeta Singh

Printed by
EXCEL BOOKS PRIVATE LIMITED
Delhi: E-77, South Ext. Part-I, Delhi-110049
Noida: B-25/5&6, Sector-59, Noida-201301
for
Lovely Professional University
Phagwara

अनुक्रमणिका

इकाई 1:	संधि – विसर्ग संधि के भेद <i>Vinod Kumar, Lovely Professional University</i>	1
इकाई 2:	संधि – व्यंजन संधि के भेद <i>Vinod Kumar, Lovely Professional University</i>	8
इकाई 3:	समास – स्वरूप और भेद <i>Hardeep Kaur, Lovely Professional University</i>	13
इकाई 4:	अनुच्छेद लेखन <i>Reeta Singh, Lovely Professional University</i>	18
इकाई 5:	विज्ञापन लेखन <i>Hardeep Kaur, Lovely Professional University</i>	34
इकाई 6:	कार्यालयी पत्र लेखन <i>Reeta Singh, Lovely Professional University</i>	42
इकाई 7:	अनेक-शब्दों के लिए एक शब्द <i>Vinod Kumar, Lovely Professional University</i>	51
इकाई 8:	अनेकार्थक शब्द <i>Hardeep Kaur, Lovely Professional University</i>	59
इकाई 9:	तकनीकी शब्दावली – अंग्रेजी से हिन्दी <i>Reeta Singh, Lovely Professional University</i>	69
इकाई 10:	तकनीकी शब्दावली – हिन्दी से अंग्रेजी <i>Vinod Kumar, Lovely Professional University</i>	87
इकाई 11:	कहानी – परिभाषा, स्वरूप और तत्व <i>Hardeep Kaur, Lovely Professional University</i>	102
इकाई 12:	कहानी के प्रमुख भेद <i>Reeta Singh, Lovely Professional University</i>	109

पाठ्यविवरण
ऐच्छिक हिन्दी –IV



- छात्रों को व्याकरण से सम्बन्धित जानकारी प्रदान करना।
- छात्रों को कार्यालयी हिन्दी का ज्ञान प्रदान करना।
- छात्रों को कहानी का सैद्धान्तिक एवं व्यावहारिक ज्ञान प्रदान करना।

क्रम संख्या	विषय
1	संधि : विसर्ग सांध के भेद।
2	संधि : व्यजन सांध के भेद।
3	समास स्वरूप और भेद।
4	अनुच्छेद लेखन।
5	विग्यापन लेखन।
6	कार्यालयी पत्र- लेखन
7	अनेक शब्दों के लिए एक शब्द। अनेकार्थक शब्द।
8	तकनीकी शब्दावली अंग्रेजी से हिन्दी।
9	तकनीकी शब्दावली हिन्दी से अंग्रेजी।
10	कहानी पारभाषा स्वरूप और तत्व। कहानी के प्रमुख भेद

इकाई 1: संधि – विसर्ग संधि के भेद

Notes

अनुक्रमणिका (CONTENTS)

उद्देश्य (Objectives)

प्रस्तावना (Introduction)

1.1 संधि का अर्थ

1.1.1 विसर्ग संधि का अर्थ

1.1.2 विसर्ग संधि के भेद

1.2 सारांश (Summary)

1.3 शब्दकोश (Keywords)

1.4 अभ्यास प्रश्न (Review Questions)

1.5 संदर्भ पुस्तकें (Further Readings)

उद्देश्य (Objectives)

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी:

- संधि का अर्थ जानेंगे
- संधि के भेद व विसर्ग संधि को समझ पाएंगे
- विसर्ग संधि के भेद से परिचित होंगे

प्रस्तावना (Introduction)

हम कई बार बोलते समय एक या दो शब्द मिलाकर ही बोल देते हैं जैसे औरब (और + अब), दयानन्द (दया और आनन्द), अत्यधिक (अति + अधिक), इस प्रकार के मेल को संधि कहते हैं। दो शब्द जब पास-पास होते हैं तो उच्चारण की सुविधा के लिए पहले शब्द के अन्त वाले और दूसरे शब्द के शुरू वाले वर्णों में मेल होता है तो इसके मेल से विकार उत्पन्न होता है। कहीं-कहीं दोनों वर्णों का स्थान तीसरा वर्ण ले लेता है।

1.1 संधि का अर्थ

दो वर्णों या ध्वनियों के संयोग से होने वाले विकार को संधि कहते हैं। संधि करते समय कभी-कभी एक अक्षर में और कभी-कभी दोनों अक्षरों में परिवर्तन होता है। इस संधि पद्धति द्वारा शब्द रचना भी होती है। जैसे सुर + इन्द्र = सुरेन्द्र, सत + आनन्द = सदानन्द, विद्या + आलय = विद्यालय, इस प्रकार के मेल को संधि कहते हैं। संधियां तीन प्रकार की होती हैं:

- स्वर संधि

Notes

- व्यंजन संधि
- विसर्ग संधि



Did u know? संधि का अर्थ है – मेल अथवा मेल-मिलाप। जब दो वर्ण इतना निकट आ जाएं कि एक दूसरे से पृथक् न रह सकें तब उनका मेल सन्धि कहलाता है।

इस इकाई में हम विसर्ग संधि का अर्थ और उसके भेदों के बारे में विस्तार से जानेंगे।

1-1-1 fo lXk l fèk dk vFk

जहाँ पर विसर्ग का लोप होता है और उसके स्थान पर कोई दूसरा वर्ण आ जाता है तो उसे विसर्ग संधि कहते हैं।

जैसे: अतः + एव = अतएव

निः + चित = निश्चित

पहले उदाहरण में मात्र विसर्ग का ही लोप हुआ है और दूसरे में विसर्ग लोप के साथ-साथ 'श्' की वृद्धि हुई है।

इसके प्रमुख नियम निम्नलिखित हैं:

1. जब विसर्ग के बाद क, ख, प, फ, ट, ठ आए तो विसर्ग के स्थान पर 'ष' हो जाता है

निः + कलंक = निष्कलंक

निः + कपट = निष्कपट

दुः + ट = दुष्ट

निः + ठुर = निष्ठुर

निः + फल = निष्फल

2. विसर्ग के बाद श या स आने पर विसर्ग यथावत् बना रहता है अथवा आगे के व्यंजन का रूप ले लेता है।

दुः + शासन = दुःशासन, दुश्शासन

निः + संदेह = निःसंदेह, निस्संदेह

3. विसर्ग के बाद क, ख, प या ग आने पर विसर्ग यथावत् रहता है; हिन्दी में इस विसर्ग का प्रयोग नहीं होता।

रजः + कण = रजःकण; रजकण

4. यदि विसर्ग के पूर्व इ या उ हो और बाद में क, ख, प या ग हो तो विसर्ग ष, श में अथवा स में परिवर्तित हो जाता है।

दुः + कर्म = दुष्कर्म

दुः + प्रवृत्ति = दुष्प्रवृत्ति

निः + छल = निश्छल

5. विसर्ग के पूर्व अ, आ होने पर निम्न शब्दों में विसर्ग स् में परिवर्तित हो जाता है।

नमः + कार = नमस्कार

पुरः + कार = पुरस्कार

भाः + कर = भास्कर

6. विसर्ग के पूर्व अ, आ के अतिरिक्त कोई और स्वर हो और बाद में श वर्ण हो तो विसर्ग र में परिवर्तित हो जाता है।

निः + आशा = निराशा

आशीः + वाद = आशीर्वाद

दुः + उपयोग = दुरुपयोग

निः + अर्थक = निरर्थक

7. यदि विसर्ग के पूर्व अ तथा बाद में अ अथवा कोई सघोष व्यंजन हो तो अ और विसर्ग अ के स्थान पर ओ हो जाता है।

मनः + अनुकूल = मनोनुकूल

यशः + दा = यशोदा

मनः + हर = मनोहर

मनः + रथ = मनोरथ

8. विसर्ग के बाद र होने पर विसर्ग लुप्त हो जाता है तथा उसके पूर्व यदि ह्रस्व स्वर है तो वह दीर्घ हो जाता है।

निः + रोग = नीरोग

निः + रज = नीरज

9. यदि विसर्ग के पूर्व अ, आ हो तथा बाद में कोई अ से भिन्न स्वर आए तो विसर्ग का लोप हो जाता है।

अतः + एव = अतएव

10. अतः र अथवा स के बदले कहीं-कहीं विसर्ग होता है, जैसे:

अंतर + करण = अंतःकरण

तेजस + पुंज = तेजःपुंज; तेजोपुंज



Task

विसर्ग संधि का अर्थ बताएं।

Notes

1-1-2 folx| Ifèk d| Hkn

विसर्ग संधि के तीन भेद हैं:

1. लोप संधि
2. अपरिवर्तिता संधि
3. परिवर्तिता संधि

1. *yki Ifèk* जिनमें विसर्गों का लोप होता है, उसे विसर्ग संधि कहते हैं। इसे लोप संधि भी कहते हैं, जैसे:

अतः + एव = अतएव

निः + रोग = निरोग (नीरोग)

निः + रस = निरस (नीरस)

निः + रोगी = निरोगी (नीरोगी)

विसर्ग के बाद अ, आ, को छोड़कर कोई अन्य स्वर आता हो और दूसरे शब्द का प्रथम अक्षर "र" हो तो विसर्ग का लोप होता है तथा विसर्ग वाला शब्द (जैसे: निः) यदि ह्रस्व है तो दीर्घ भी हो जाता है। जैसा कि ऊपर देख चुके हैं।

2. *vifjofr.rk Ifèk* दूसरी विसर्ग संधि ऐसी संधि है जिसमें विसर्ग लगा हो, वह अकारान्त हो और विसर्ग "क, ख, प, फ" का कोई भी वर्ण हो तो विसर्ग में कोई परिवर्तन नहीं होता। इसे अपरिवर्तिता संधि भी कहते हैं, जैसे:

रजः + कण = रजःकण

प्रातः + काल = प्रातःकाल

पयः + पान = पयःपान

निः + संदेह = निःसंदेह (निस्सन्देह)

अन्तः + करण = अन्तःकरण

3. *ifjofr.rk Ifèk* तीसरे प्रकार की विसर्ग संधि में विसर्ग का लोप करके उसके स्थान पर दूसरा वर्ण आ जाता है। इसके इसी परिवर्तन के कारण इसे परिवर्तिता संधि भी कहते हैं।

fu;e 1 यदि विसर्ग के पहले 'अ' हो और उसके बाद कोई स्वर हो, तो विसर्ग लोप हो जाता है। जैसे –

यशः + इच्छा = यशइच्छा

निः + फल = निष्फल

निः + चल = निश्चल

बहिः + कृत = बहिष्कृत

अतः + एव = अतएव

दुः + कृत = दुष्कृत

दुः + प्राप्य = दुष्प्राप्य

निः + छल = निश्छल

पुरः + कार = पुरस्कार	दुः + साहस = दुस्साहस
मनः + रथ = मनोरथ	मनः + योग = मनोयोग
सरः + ज = सरोज	पयः + द = पयोद
पयः + धर = पयोधर	पुरः + हित = पुरोहित
तपः + वन = तपोवन	यशः + धरा = यशोधरा
पुनः + जन्म = पुनर्जन्म	निः + पाप = निष्पाप
आविः + कृत = आविष्कृत	तिरः + कार = तिरस्कार
मनः + ज = मनोज	सरः + वर = सरोवर
वाचः + पति = वाचस्पति	

नियम 2: यदि विसर्ग के पहले 'अ' को छोड़कर कोई अन्य स्वर हो और विसर्ग के बाद कोई भी स्वर हो, या किसी वर्ग का तृतीय वर्ग का तृतीय, चतुर्थ या पंचम वर्ण अथवा य, र, ल, व, ह, हों तो विसर्ग का 'र' हो जाता है। जैसे—

निः + आधार = निराधार	निः + औषध = निरौषध
निः + उपाय = निरुपाय	निः + झर = निर्झर
बहिः + गत = बहिर्गत	दुः + यश = दुर्यश
दुः + लक्ष्य = दुर्लक्ष्य	दुः + वचन = दुर्वचन
दुः + वह = दुर्वह	

अपवाद: पुनः + अपि – पुन् (अः) + अपि = पुनरपि।

नियम 3: यदि विसर्ग के पहले 'इ' या 'उ' हो, और आगे क, ख, प या फ हो, तो विसर्ग का 'ष' होता है। जैसे—

निः + कपट = निष्कपट	निः + पाप = निष्पाप
आविः + कार = आविष्कार	निः + फल = निष्फल
दुः + कर = दुष्कर	दुः + प्रज्ञ = दुष्प्रज्ञ

नियम 4: यदि विसर्ग के बाद 'च' या 'छ' हो, तो विसर्ग के पहले 'श', 'ट', या 'ठ' हो, और 'त' या 'थ' हो तो 'श्' होता है। जैसे—

निः + चय = निश्चय	निः + चल = निश्चल
धनुः + टंकार = धनुष्टंकार	ततः + ठकार = तटष्ठकार

Notes

fu;e 5 यदि विसर्ग के बाद 'श', 'ष' या 'स', हो, तो विसर्ग का क्रमशः 'श', 'ष', होता है या ज्यों का त्यों रहता है। जैसे—

दुः + शासन = दुःशासन, दुःशासन वहिः + षट् = वहिष्षट्, वहिःषट्
निः + सार = निस्सार, निःसार

fu;e 6 यदि 'इ' या 'उ' के बाद विसर्ग हो और उसके बाद 'र' हो तो 'इ' का 'ई', 'उ' का 'ऊ' होता है तथा विसर्ग लुप्त हो जाता है जैसे—

निः + रोग = नीरोग। निः + ख = नीख।
निः + रस = नीरस। दुः + राज = दूराज।

LoeY;kdu

निम्न कथनों में से सत्य और असत्य बताएँ:

- जब दो वर्ण इतना पास आ जाएं कि एक दूसरे से अलग न रह सकें तब उनका मेल संधि कहलाता है।
- विसर्ग संधि में स्वर या व्यंजन के संयोग से विकार पैदा नहीं होता।
- विसर्ग के बाद क, ख, या प, के आने पर विसर्ग में अंतर आ जाता है।
- सम् + कल्प = संकल्प, निः + छल = निश्छल, पुरः + हित = पुरोहित शब्द विसर्ग संधि के सही संधि विच्छेद हैं।

निम्न विकल्पों में से उचित विकल्प का चयन कीजिए:

- 'दुर्वचन' का संधि विच्छेद क्या है?
(क) दुः + वचन (ख) दुव + चन (ग) दुर्व + चन
- 'निरुपाय' का सही संधि विच्छेद क्या है?
(क) निरु + णय (ख) निः + उपाय (ग) निरूप + य
- 'निस्सार' का सही संधि विच्छेद क्या है?
(क) निः + सार (ख) निरु + सार (ग) निस्सा + र

1-2 I kjk'k (Summary)

- दो वर्गों या ध्वनियों के संयोग से उत्पन्न होने वाले विकार को विसर्ग संधि कहते हैं। हिन्दी में विसर्ग संधि का प्रयोग नहीं के बराबर होता है। कुछ गिने चुने विसर्ग युक्त शब्द हिन्दी में प्रयुक्त होते हैं जैसे — अतः, पुनः, प्रायः, शनैः-शनैः, आदि।
- विसर्ग संधि के ज्ञान के अभाव में हम वर्तनी की अशुद्धियों से मुक्त नहीं हो सकते, अतः इसका ज्ञान होना आवश्यक है।

1.3 शब्दकोश (Keywords)

विकार: रूप, धर्म आदि में होने वाला स्वाभाविक परिवर्तन।

संधि: दो अक्षरों के मिल जाने से होने वाला वर्ण विकार।

संताप: दुख, क्लेश, ज्वर, बुखार।

1.4 अभ्यास प्रश्न (Review Questions)

1. विसर्ग संधि का अर्थ बताते हुए उसके भेदों का वर्णन करें।
2. विसर्ग संधि के चार नियमों को सोदाहरण स्पष्ट कीजिए।
3. विसर्ग संधि को स्पष्ट करते हुए निम्नलिखित में संधि कीजिए एवं नियम बताइए—
यशः + दा, मनः + अनुकूल, निः + रोग, दु + कर
4. निम्नलिखित में संधि कीजिए एवं नियम स्पष्ट कीजिए—
नमः + कार, पुरः + कार, भाः + कर

उत्तर: स्व:मूल्यांकन

- | | |
|----------|----------|
| 1. सत्य | 2. असत्य |
| 3. असत्य | 4. सत्य |
| 5. (क) | 6. (ख) |
| 7. (क) | |

1.5 संदर्भ पुस्तकें (Further Readings)



Books

व्याकरण भारती – प्रो. सुरेन्द्र कुमार झा, डॉ. अनुपमा सेठ, एच जी पब्लिकेशंस, दिल्ली।

आधुनिक हिन्दी व्याकरण और रचना – डॉ. वासुदेव नंदन प्रसाद, भारती भवन, पटना।

इकाई 2: संधि – व्यंजन संधि के भेद

अनुक्रमणिका (CONTENTS)

उद्देश्य (Objectives)

प्रस्तावना (Introduction)

2.1 व्यंजन संधि

2.1.1 व्यंजन संधि का अर्थ

2.1.2 व्यंजन संधि के भेद

2.2 सारांश (Summary)

2.3 शब्दकोश (Keywords)

2.4 अभ्यास प्रश्न (Review Questions)

2.5 संदर्भ पुस्तकें (Further Readings)

उद्देश्य (Objectives)

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी:

- व्यंजन संधि के अर्थ से परिचित होंगे।
- व्यंजन संधि के भेदों के बारे में जानकारी प्राप्त करेंगे।
- व्यंजन संधि के नियमों के बारे में ज्ञान प्राप्त करेंगे।

प्रस्तावना (Introduction)

संधि के भेदों में स्वर संधि, विसर्ग संधि के अतिरिक्त एक और भेद है व्यंजन संधि। हिन्दी भाषा में, संस्कृत के व्यंजन संधि के नियम उसी तरह अपना लिए जाते हैं। कुछ व्यंजन ऐसे हैं जिनका प्रयोग या उच्चारण बिना स्वर की सहायता के भी किया जा सकता है।

2.1 व्यंजन संधि

संधि के तीन भेद स्वर, व्यंजन, विसर्ग संधि होते हैं। व्यंजन के साथ व्यंजन या स्वर का मेल होने से जो विकार उत्पन्न होता है, उसे व्यंजन संधि कहते हैं।

2.1.1 व्यंजन संधि का अर्थ

व्यंजन के साथ स्वर या व्यंजन के मेल से जो विकार होता है उसे व्यंजन संधि कहते हैं। कुछ व्यंजन ऐसे हैं जिनका उच्चारण बिना स्वर की सहायता के भी हो सकता है। व्यंजन संधि में प्रायः अर्द्ध ह्रस्व की मात्रा ही होती है। जैसे— फ़, च़, द़, आदि स्वर के अतिरिक्त उनकी अपनी मात्रा भी है जब संयुक्ताक्षर होता है तो अनेक व्यंजनों के योग से मात्रा काल बढ़ जाता है।



Notes दो शब्दों (वर्णों) के योग से संधि बनती है इनमें प्रथम शब्द का अंतिम अक्षर व्यंजन होता है, तथा दूसरे शब्द का प्रथम अक्षर स्वर होता है।

Notes

2.1.2 व्यंजन संधि के भेद

व्यंजन ध्वनि के बाद स्वर अथवा व्यंजन आने पर होने वाला विकार व्यंजन संधि कहलाता है। यह व्यंजन संधि निम्नलिखित प्रकार की होती है—

1. क्, च्, ट्, प् के पश्चात् अनुनासिक के अतिरिक्त कोई घोष वर्ण हो तो क्, च्, ट्, प् के स्थान पर उसी वर्ग का तीसरा वर्ण हो जाता है—

क् + ग् — दिक् + गज = दिग्गज

ट् + ड् — षट् + आनन = षडानन

प् + ब् — अप् + ज = अब्ज

2. किसी वर्ग के प्रथम वर्ण के बाद कोई नासिक्य वर्ण हो तो प्रथम वर्ण के स्थान पर उसी वर्ग का नासिक्य वर्ण आ जाता है—

वाक् + मय = वाङ्मय

षट् + मास = षण्मास

जगत् + नाथ = जगन्नाथ

अप् + मय = अम्मय,

उत् + मत्त = उन्मत्त

3. 'त्' और 'द्' सम्बन्धी कुछ नियम—

(क) त् या द् के बाद च/छ हों तो त्/द् 'च्' में परिवर्तित हो जाते हैं—

उत् + चारण = उच्चारण

उत् + छिन्न = उच्छिन्न

(ख) त् या द् के बाद ज/झ हों तो त्/द् 'ज्' में परिवर्तित हो जाते हैं—

जगत् + जननी = जगज्जननी,

सत् + जन = सज्जन

विपद् + जाल = विपज्जाल, उद् + झटिका = उज्झटिका,

उत् + ज्वल = उज्ज्वल

(ग) त् या द् के बाद ट/ड आने पर त्/द्, 'ट्/ड्' में परिवर्तित हो जाते हैं—

तत् + टीका = तट्टीका

उत् + डयन = उड्डयन

Notes

(घ) 'त्' या 'द्' के बाद 'ल्' हो तो त्/द् 'ल्' में परिवर्तित हो जाते हैं—

तत् + लीन = तल्लीन

(ङ) 'त्' या 'द्' के बाद 'श' हो तो त्/द् 'च्' में तथा श 'छ' में परिवर्तित हो जाते हैं—

सत् + शास्त्र = सच्छास्त्र,

उत् + श्वास = उच्छ्वास

(च) 'त्' या 'द्' के बाद 'ह' हो तो त्/द् 'ध्' तथा ह 'ध्' में परिवर्तित हो जाते हैं—

उत् + हरण = उद्धरण

उत् + हार = उद्धार



Did u know? स्पर्श व्यंजनों के प्रथम अक्षर के आगे कोई अनुनासिक व्यंजन तथा किसी ह्रस्व या दीर्घ स्वर के आने से संधि शब्दों में बदलाव आ जाता है।

(छ) 'त्' के बाद कोई स्वर, ग, घ, द, ध, ब, भ, य, र, व, हो तो 'त्' के स्थान पर 'द्' हो जाता है—

सत् + आनंद = सदानंद

जगत् + ईश = जगदीश

उत् + गम = उद्गम

सत् + धर्म = सद्धर्म

तत् + रूप = तद्रूप आदि।

4. 'छ' के पूर्व स्वर हो तो छ 'च्छ' में परिवर्तित हो जाता है—

अनु + छेद = अनुच्छेद, परि + छेद = परिच्छेद

5. (क) 'म्' के आगे यदि स्पर्श अथवा स्पर्श-संघर्षी व्यंजन हो तो 'म्' के स्थान पर उसी वर्ग का नासिक्य व्यंजन अथवा अनुस्वार आता है—

सम् + गम = संगम (सङ्गम)

किम् + चित् = किञ्चित् (किञ्चित्)

सम् + चय = संचय (सञ्चय)

सम् + बंध = संबंध (सम्बन्ध)

(ख) यदि 'म्' के बाद 'म' हो तो 'म्' का द्वित्व हो जाता है— सम् + मति = सम्मति। यहाँ अनुस्वार का प्रयोग नहीं हो सकता।

(ग) 'म्' के आगे अन्तःस्थ (य, र, ल, व) अथवा ऊष्म (श, ष, स, ह) हो तो 'म्' अनुस्वार हो जाता है—

सम् + योग = संयोग

सम् + हार = संहार

सम् + स्मरण = संस्मरण

6. पहले शब्द की अन्तिम ध्वनि ऋ, र और ष होने और अगले शब्द में कहीं भी 'न' आने पर न 'ण' में परिवर्तित हो जाता है, भले ही बीच में कवर्ग, पवर्ग, अनुस्वार, य, व, ह में से कोई भी ध्वनि आ जाए—

परि + मान = परिमाण,

हर + न = हरण,

कृष् + न = कृष्ण,

विष् + नु = विष्णु

ऋ + न = ऋण,

प्र + मान = प्रमाण

7. 'स' के पूर्व 'अ' अथवा 'आ' के अतिरिक्त कोई भी स्वर आने पर स 'ष' में परिवर्तित हो जाता है—

अभि + सेक = अभिषेक,

नि + सेध = निषेध,

वि + सय = विषय,

सु + सुप्ति = सुषुप्ति

अपवाद— वि + स्मरण = विस्मरण, वि + सर्ग = विसर्ग, अनु + सरण = अनुसरण



Task

जिनमें म् के आगे अन्तःस्थ अथवा ऊष्म हो और 'म' अनुस्वार हो जाए, ऐसे 5 शब्द लिखें।

स्वःमूल्यांकन

निम्न कथनों में से सत्य और असत्य बताएँ:

- स्वर या व्यंजन के मेल से जो विकार होता है, उसे व्यंजन संधि कहते हैं।
- व्यंजन संधि में संस्कृत के नियम उसी तरह नहीं अपनाए जाते।
- व्यंजन संधि में त् और द् के बाद में चवर्ग या टवर्ग का व्यंजन आता है, तो 'त' के स्थान पर 'टवर्ग' अथवा चवर्ग का अनुरूप व्यंजन बनता है।
- व्यंजन संधि में तत् + टीका = तत्टीका, उत् + डयन = उत्तडयन् में परिवर्तित हो जाता है।

2.2 सारांश (Summary)

- संधि के प्रमुख भेद 'व्यंजन संधि' में जब व्यंजन या स्वर का मेल होने से जो विकार होता है, उसे व्यंजन संधि कहते हैं।
- क्, च्, ट्, प के पश्चात् अनुनासिक के अतिरिक्त कोई छोटा वर्ग हो, तो क्, च्, ट्, प् के स्थान पर उसी वर्ग का तीसरा वर्ण हो जाता है। उदाहरणतः अच् + अत = अजंत, अप् + ज = अब्ज।

Notes

- जब किसी ह्रस्व या दीर्घ स्वर के आगे छ् आता है, तो छ् के पहले च् बढ़ जाता है जैसे परि + छेद = परिच्छेद, पद + छेद = पदच्छेद।

2.3 शब्दकोश (Keywords)

व्यंजन संधि: स्वर या व्यंजन के मेल से जो विकार पैदा हो।

संयुक्त अक्षर: इकट्ठा शब्द।

2.4 अभ्यास प्रश्न (Review Questions)

1. व्यंजन संधि का अर्थ बताते हुए, उसके भेदों का वर्णन करें।
2. व्यंजन संधि के नियमों को उदाहरण सहित स्पष्ट करें।
3. निम्न शब्दों में संधि करें और उनके नियमों को स्पष्ट करें:

(क) दिक् + दर्शन

दिक् + अम्बर

षट् + आनन

सत् + आनन्द

सत् + भावना

(ख) षट् + मुख

जगत + नाथ

उद + नीति

जगत + मान्य

तत् + मय

उत्तर: स्व:मूल्यांकन

- | | |
|---------|----------|
| 1. सत्य | 2. असत्य |
| 3. सत्य | 4. असत्य |

2.5 संदर्भ पुस्तकें (Further Readings)



Books

व्याकरण भारती – प्रो. सुरेन्द्र कुमार झा, डॉ. अनुपमा सेठ, एच जी पब्लिकेशंस, दिल्ली।

आधुनिक हिन्दी व्याकरण और रचना – डॉ. वासुदेव नंदन प्रसाद, भारती भवन, पटना।

इकाई 3: समास – स्वरूप और भेद

Notes

अनुक्रमणिका (CONTENTS)

उद्देश्य (Objectives)

प्रस्तावना (Introduction)

3.1 समास का अर्थ और स्वरूप

3.1.1 समास का अर्थ

3.1.2 समास के भेद

3.2 सारांश (Summary)

3.3 शब्दकोश (Keywords)

3.4 अभ्यास प्रश्न (Review Questions)

3.5 संदर्भ पुस्तकें (Further Readings)

उद्देश्य (Objectives)

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी:

- समास का अर्थ और परिभाषा को जानने में सक्षम होंगे।
- समास के स्वरूप को समझ सकेंगे।
- समास के भेदों का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।

प्रस्तावना (Introduction)

हम बोलते या लिखते समय कई बार दो या दो से अधिक शब्दों में लगे योजकों को छोड़ देते हैं या फिर किसी विशेष प्रकार के तरीके से बोलते हैं, जैसे – गंगा का जल की जगह गंगाजल शब्द बोलते हैं और 'का' शब्द छोड़ देते हैं या फिर चौराहा बोलते समय चार राहें न बोलकर इसका कोई और रूप बनाकर बोलते हैं। इसी प्रक्रिया को समास कहते हैं। परस्पर सम्बन्ध रखने वाले दो या दो से अधिक शब्दों को मिलाकर बनने वाले एक स्वतन्त्र सार्थक शब्द को समास कहा जाता है।

3.1 समास का अर्थ और स्वरूप

3.1.1 समास का अर्थ

समास का अर्थ है – संक्षिप्तीकरण। जब दो शब्दों को मिलाते हैं तो दोनों के बीच का सम्बन्ध सूचक शब्द लुप्त हो जाता है। इस प्रकार अनेक शब्दों के लिए एक समस्त पद बना लिया जाता है, इसे ही समास कहते हैं। कम से कम शब्दों में अधिक से अधिक अर्थ प्रकट करना समास का प्रमुख लक्ष्य है। उदाहरणतः दिन और रात व दिन-रात इसमें योजक या कारक चिह्न का लोप हो जाता है।

Notes

दो या दो से अधिक शब्दों के मेल को समास कहते हैं। अधिक शब्दों के योग से शब्द निर्माण की रीति को समास रीति कहते हैं, समास द्वारा शब्द रचना होती है। परस्पर सम्बन्ध रखने वाले दो या दो से अधिक शब्दों को मिलाकर बनने वाले एक स्वतन्त्र सार्थक शब्द को समास कहते हैं। जैसे: राजा और कुमार से मिलकर राजकुमार, राजा और पुरुष से मिलकर राजपुरुष। संज्ञा के साथ संज्ञा का, संज्ञा के साथ विशेषण का, विशेषण के साथ विशेष्य का तथा अव्यय के साथ संज्ञा का परस्पर मेल होने से समास बनता है। समास की विशेषता यह है कि जिस शब्द समूह का संक्षिप्त रूप होता है, उसके अर्थ में किसी प्रकार का परिवर्तन नहीं होता है।



Notes

दो या दो से अधिक शब्दों के परस्पर मेल को समास कहते हैं, जैसे ऊंच और नीच = ऊंच-नीच।

समास करते समय परस्पर मेल होने वाले शब्दों के बीच की विभक्तियों या योजक शब्दों का लोप होकर जो शब्द बनते हैं, उन्हें 'समस्त पद' या सामाजिक शब्द कहते हैं। जैसे—

राम और लक्ष्मण = राम-लक्ष्मण

चक्र है पाणि (हाथ) में जिसके = चक्रपाणि

यहाँ 'राम-लक्ष्मण' तथा 'चक्रपाणि' समस्त पद या सामासिक शब्द हैं।

समास के सम्बन्ध में निम्न बातें याद रखने वाली हैं:

1. हिन्दी में समास प्रायः दो शब्दों से ही बनते हैं जबकि संस्कृत में अनेक शब्दों से बनते हैं। हिन्दी में 'सुत-वित-नारी-भवन-परिवारा' ही सबसे लम्बा समास है। इसके अतिरिक्त तन-मन-धन, जन-मन-गण, धूप-दीप-नैवेद्य आदि बहुत थोड़े शब्द हैं, जो दो से अधिक शब्दों के मेल से बने हैं।
2. सामासिक शब्द बनते समय परस्पर मिलने वाले दोनों शब्दों की विभक्तियों या योजक शब्दों का लोप हो जाता है। जैसे राम और कृष्ण का समास राम-कृष्ण होने पर 'और' योजक शब्द का लोप हो गया है।
3. समास कुछ अपवादों को छोड़कर प्रायः दो सजातीय शब्दों में ही होता है। जैसे रसोई-घर का रसोईशाला नहीं बनेगा अथवा पाठशाला का पाठ घर शब्द नहीं बनेगा। रेल-गाड़ी, जिला-धीश, धन-दौलत, मनमौजी, दुःख-सुख आदि इनके अपवाद हैं।
4. हिन्दी में मुख्यतः तीन ही प्रकार के शब्दों के सामासिक शब्द प्रयोग में आते हैं। जैसे:

ILÑr 'kCn & यथा-शक्ति, मनसिज, पुरुषोत्तम, युधिष्ठिर आदि।

fgUnh 'kCn — भरपेट, अनबन, नीलकमल, बैलगाड़ी।

vixth 'kCn — रेलवे स्टेशन, बुकिंग आफिस, टिकट-चैकर, टाइम टेबल।



Did u know? 'समास' शब्द संस्कृत भाषा का है, जिसका अर्थ है संक्षेपीकरण अर्थात् संक्षिप्त करना।

3.1.2 समास के भेद

समास के भेद उसके पदों की प्रधानता-अप्रधानता के आधार पर किये जाते हैं। अर्थात् समास में कभी पहला पद प्रधान होता है तो कभी दूसरा और कभी-कभी दोनों ही पद प्रधान होते हैं अथवा कोई भी पद प्रधान नहीं होता है जैसे रमेश गांधी-भक्त है। यहां गांधी-भक्त में भक्त प्रधान है क्योंकि रमेश भक्त है गांधी नहीं।

समास के परम्परागत छः भेद हैं—

1. द्वन्द्व समास
2. कर्मधारय समास
3. द्विगु समास
4. बहुव्रीहि समास
5. अव्ययी भाव समास
6. तत्पुरुष समास

उपरोक्त समासों का विस्तृत वर्णन निम्नलिखित है—

1. **द्वन्द्व समास:** इसमें समास के दोनों पद प्रधान होते हैं। जोड़ते समय **और, तथा, एवं,** का लोप हो जाता है। जिस समास में पूर्वपद और उत्तरपद दोनों ही प्रधान हों अर्थात् अर्थ की दृष्टि से दोनों का स्वतन्त्र अस्तित्व हो और उनके मध्य संयोजक शब्द का लोप हो तो द्वन्द्व समास कहलाता है। जैसे: माता-पिता व माता और पिता, राम-कृष्ण = राम और कृष्ण, भाई-बहन = भाई और बहन, पाप-पुण्य = पाप और पुण्य।
2. **कर्मधारय समास:** जब समास में दूसरा पद प्रधान हो और दोनों में **विशेषण-विशेष्य** का या उपमान-उपमेय का संबंध हो, तो वह कर्मधारय समास कहलाता है। जैसे: महापुरुष = जो पुरुष महान है, नीलागगन = गगन, जो नीला है, परमानन्द = आनन्द, जो परम है, मुख कमल = कमल के समान मुख, वचनामृत = वचन रूपी अमृत।
3. **द्विगु समास:** जब समास में पहला पद संख्यावाचक हो और दूसरा प्रधान हो, तो यह द्विगु समास कहलाता है। जैसे: नवरात्रे = नौ रातों का समाहार (समूह), चौराहा = चार राहों का समाहार, त्रिभुज = तीन भुजाओं का समूह।
4. **बहुव्रीहि समास:** जब समास में दोनो पद प्रधान हों परन्तु समस्त पद का अर्थ विशेष हो, तो उसे बहुव्रीहि समास कहते हैं। जैसे: दशानन = जिसके (रावण) आनन (मुख) दस हैं, त्रिलोकी = तीनों लोकों का स्वामी (विष्णु), चतुर्भुज = जिसकी (विष्णु) चार हैं भुजाएं, पीताम्बर = जिसका (कृष्ण) अम्बर पीला है।
5. **अव्ययीभाव समास:** जब समास में पहला पद प्रधान हो और समस्त पद अव्यय (अविकारी), उसे अव्ययीभाव समास कहते हैं। यह वाक्य में क्रिया विशेष का कार्य करता है। जैसे: प्रतिवर्ष = हरवर्ष, प्रत्येक = हर एक, प्रतिक्षण = हर क्षण, आजीवन = जीवन तक, आमरण = मरण तक, यथा शक्ति = शक्ति के अनुसार, रातों रात = रात ही रात में।

Notes

6. *rRi/ : "k lek/* जिस समास में पूर्वपद गौण तथा उत्तरपद प्रधान हो, तत्पुरुष कहलाता है। दोनों पदों के बीच परासर्ग का लोप रहता है। परासर्ग लोप के आधार पर तत्पुरुष समास के छः भेद हैं:
- (क) *कर्म तत्पुरुष* ('को' का लोप): जैसे: मतदाता = मत को देने वाला, गिरहकट = गिरह को काटने वाला, कमलनयन = कमल के समान नयन।
- (ख) *करण तत्पुरुष*: जहाँ करण-कारण चिन्ह का लोप हो, जैसे: जन्मजात = जन्म से उत्पन्न, मुंहमांगा = मुंह से मांगा, गुणहीन = गुणों से हीन।
- (ग) *सम्प्रदान तत्पुरुष*: जहाँ सम्प्रदान कारक चिन्ह का लोप हो, जैसे: हथकड़ी = हाथ के लिए कड़ी, सत्याग्रह = सत्य के लिए आग्रह, युद्धभूमि = युद्ध के लिए भूमि।
- (घ) *अपादान तत्पुरुष*: जहाँ अपादान कारक चिन्ह का लोप हो, जैसे: धनहीन = धन से हीन, भयभीत = भय से भीत, जन्मान्ध = जन्म से अंधा।
- (ङ) *सम्बन्ध तत्पुरुष*: जहाँ सम्बन्ध कारक चिन्ह का लोप, जैसे: प्रेमसागर = प्रेम का सागर, दिनचर्या = दिन को चर्या, भारतरत्न = भारत का रत्न।
- (च) *अधिकरण तत्पुरुष*: जहाँ अधिकरण कारक चिन्ह का लोप हो, जैसे: नीतिनिपुण = नीति में निपुण, आत्मविश्वास = आत्मा पर विश्वास, घुड़सवार = घोड़े पर सवार।

LoeY;kdu

रिक्त स्थान भरें:

1. दो या दो से अधिक शब्दों के को समास कहते हैं।
2. समास के छः भेद द्वन्द्व समास, कर्मधारय समास, ... , ... , ... , ... , ... तत्पुरुष समास है।
3. द्विगु समास में पहला पद हो और दूसरा प्रधान होता है।

3-2 I kjk'k (Summary)

- समास का अर्थ है – संक्षेप करना। जब दो शब्दों को मिलाते हैं तो दोनों के बीच का सम्बन्ध सूचक शब्द लुप्त हो जाता है।
- कम से कम शब्दों में अधिक से अधिक अर्थ प्रकट करना समास का प्रमुख लक्ष्य है।
- समास के छः भेद हैं— (1) द्वन्द्व समास, (2) कर्मधारय समास, (3) द्विगु समास, (4) बहुव्रीहि समास, (5) अव्ययी भाव समास और (6) तत्पुरुष समास।
- समास में शब्द या तो किसी विशेष सम्बन्ध में मिलते हैं या फिर इनमें किसी योजक या कारक चिह्न का लोप हो जाता है।

3.3 शब्दकोश (Keywords)

समास: संक्षिप्त करना या दो या दो से अधिक शब्दों का परस्पर मेल।

विग्रह: शब्द को अलग-अलग करना।

बहुव्रीहि: विशेष अर्थ वाला।

3.4 अभ्यास प्रश्न (Review Questions)

1. समास का अर्थ लिखकर इसके भेदों के नाम बताएं।
2. समास का स्वरूप और उसके भेद का संक्षिप्त वर्णन करें।
3. द्विगु, कर्मधारय और बहुव्रीहि समासों में अन्तर बताइए।
4. अव्ययीभाव समास के पांच उदाहरण दीजिए।

उत्तर: स्व:मूल्यांकन

1. परस्पर मेल
2. द्विगु समास, बहुव्रीहि समास, अव्ययी भाव समास,
3. संख्यावाचक।

3.5 संदर्भ पुस्तकें (Further Readings)



Books

हिन्दी व्याकरण – बृजकिशोर प्रसाद सिंह, नमन प्रकाशन।

अभिनव हिंदी व्याकरण – डॉ. मीनाक्षी अग्रवाल, राधाकृष्ण प्रकाशन।

हिंदी व्याकरण – एच जी पब्लिकेशन, दिल्ली।

आधुनिक हिंदी व्याकरण एवं रचना – डॉ. वासुदेव नंदन प्रसाद, भारती भवन, पटना।

बुक 4: अनुच्छेद लेखन

बुक (CONTENTS)

उद्देश्य (Objectives)

प्रस्तावना (Introduction)

4.1 अनुच्छेद लेखन

4.1.1 अनुच्छेद लेखन का अर्थ और परिभाषा

4.1.2 अनुच्छेद लेखन का उद्देश्य और विशेषताएँ

4.1.3 अनुच्छेद लेखन के भेद

4.2 विभिन्न विषयों से सम्बन्धित अनुच्छेद

4.2.1 निजी अनुभव पर आधारित संस्मरणात्मक अनुच्छेद

4.2.2 विचारात्मक अनुच्छेद

4.3 सारांश (Summary)

4.4 शब्दकोश (Keywords)

4.5 अभ्यास प्रश्न (Review Questions)

4.6 संदर्भ पुस्तकें (Further Readings)

मं: (Objectives)

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी:

- अनुच्छेद लेखन का अर्थ और उद्देश्य जान सकेंगे।
- अनुच्छेद लेखन की विशेषताओं और उनके भेदों का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।
- अनुच्छेद लेखन की कला से परिचित होंगे।

इ: (Introduction)

किसी एक भाव या विचार को व्यक्त करने के लिए लिखे गए संबद्ध और लघु वाक्य समूह को अनुच्छेद लेखन कहते हैं। इसमें एक विषय पर विचारों को इस तरह से लिखना होता है, जिससे सभी वाक्य एक दूसरे से बँधे हों। एक भी वाक्य अनावश्यक और बेकार नहीं होना चाहिए।

4-1 अनुच्छेद लेखन

अनुच्छेद अपने आप में स्वतंत्र और पूर्ण होते हैं। अनुच्छेद लेखन में विचारों को इस क्रम में रखा जाता है कि उनका आरम्भ, मध्य और अन्त आसानी से व्यक्त हो जाए। भाषा की सरलता, स्पष्टता, शुद्धता प्रभावशाली अनुच्छेद की विशेषता होती है।

4.1.1 अनुच्छेद लेखन का अर्थ और परिभाषा

अनुच्छेद लेखन का अर्थ है कि किसी कथन, निजी अनुभव अथवा संस्करण को संक्षेप में किंतु सार गर्भित ढंग से लिखना। इसमें एक विषय पर अपने विचारों को केवल एक अनुच्छेद (One Paragraph) में लिखना होता है। अनुच्छेद विषयानुसार छोटा या बड़ा हो सकता है।

अंग्रेजी शिक्षक नरेन्द्र कालिया के अनुसार,

"A paragraph is a number of sentences grouped together and relating to one topic; or a group of related sentences that develop a single point".

अनुच्छेद, किसी विशेष घटना, निजी अनुभव या कथन, के वाक्यों की संख्या (समूह) है, यह किसी महापुरुष के कथन, किसी मुहावरे या विचारात्मक विषय पर लिखे जाते हैं। उदाहरणतः भीड़ भरी बस की यात्रा, मतदान केन्द्र, सवै दिन जात न एक समान, परहित सरिस धर्म नहीं भाई, बढ़ता फैशन और युवा वर्ग आदि।



Notes अनुच्छेद लेखन में भाव और विचारों को व्यक्त करने के लिए सभी वाक्य एक दूसरे से बँधे हुए होने चाहिए।

4.1.2 अनुच्छेद लेखन का उद्देश्य और विशेषताएँ

1. अनुच्छेद लेखन में वाक्य समूह में उद्देश्य की एकता रहती है। अप्रासंगिक बातों को हटा दिया जाता है।
2. विद्यार्थी की मौलिक सूझ-बूझ, कल्पना शक्ति, स्मरण शक्ति का विकास करने में अनुच्छेद बहुत सहायता करते हैं। विद्यार्थी के भावी विकास में इनका काफी योगदान होता है।
3. अनुच्छेद एक स्वतंत्र और पूर्ण रचना है, जिसका कोई भी वाक्य अनावश्यक नहीं होता।
4. उच्च कोटि के अनुच्छेद लेखन में विचारों को इस क्रम में रखा जाता है कि उनका आरम्भ, मध्य, और अन्त प्रभावशाली एवं क्रमानुसार होता है।
5. अनुच्छेद को प्रभावशाली बनाने के लिए संक्षिप्तता का ध्यान रखना अति आवश्यक है।
6. अनुच्छेद सामान्यतः छोटा होता है, किन्तु इसकी लघुता या विस्तार विषयवस्तु पर निर्भर करता है।



Task "रेलवे प्लेटफार्म का दृश्य" तथा "स्वप्न में गांधीजी से भेंट" विषय पर अनुच्छेद लिखें।

4.1.3 अनुच्छेद लेखन के भेद

मुख्यतः अनुच्छेद लेखन दो प्रकार का होता है:

1. **निजी अनुभव पर (किसी घटना आदि से संबंधित) संस्मरणात्मक अनुच्छेद:** इनमें लेखक आप बीती घटना उत्तम पुरुष एक वचन में लिखता है। जैसे – आँखों देखा गोली काण्ड, जब मैं घर से बाहर पढ़ने गया, मतदान केन्द्र।

Notes

2. **विचारात्मक अनुच्छेद:** ऐसे अनुच्छेद किसी महापुरुष के कथन, किसी मुहावरे या विचारात्मक विषय पर लिखे जाते हैं। जैसे: अबला जीवन हाथ तेरी यही कहानी, अंग्रेजी हटाओ राष्ट्रभाषा लाओ, भाषण नहीं राशन चाहिए, शक्ति अधिकार की जननी है।



Did u know? मुख्यतः अनुच्छेद निजी अनुभव या विचारों से संबंधित होते हैं।

4.2 विभिन्न विषयों से सम्बन्धित अनुच्छेद

निजी अनुभव, घटना से संबंधित संस्मरणात्मक अनुच्छेद और विचारात्मक अनुच्छेद निम्नांकित हैं—

4.2.1 निजी अनुभव पर आधारित संस्मरणात्मक अनुच्छेद

मेरे जीवन का लक्ष्य

संसार में जितने भी प्राणी जन्म लेते हैं सब का कोई न कोई उद्देश्य अवश्य होता है। मनुष्य प्राणियों में सर्वश्रेष्ठ माना जाता है तब उसके जीवन का कोई न कोई लक्ष्य अवश्य होगा। शास्त्रों में लिखा है कि मानव जीवन बड़ा दुर्लभ है अतः इसी जन्म में व्यक्ति अपने आध्यात्मिक लक्ष्य अर्थात् ईश्वर प्राप्ति के लक्ष्य को पूरा कर सकता है। किन्तु भूखे, पेट तो भजन भी नहीं होता है। अतः पेट पालने के लिए प्रत्येक मनुष्य को कुछ न कुछ करना ही पड़ता है। इसी को हम भौतिक लक्ष्य की प्राप्ति करना कहते हैं।

भौतिक लक्ष्य की प्राप्ति का अर्थ है कि जीवन जीने के लिए किया जाने वाला ऐसा काम-काज ताकि उसे करने से उचित आर्थिक लाभ प्राप्त हो सके। ऐसा धन्धा, जिससे प्राप्त होने वाले लाभ से जीविका चल सके, घर-परिवार का लालन-पालन सम्भव हो सके तथा सभी प्रकार के भौतिक सुख प्राप्त हो सकें।

आज जीवन मूल्य बड़ी तेजी से बदल रहे हैं। समाज में व्याप्त भ्रष्टाचार और भाई-भतीजावाद ने हमारे जैसे मध्यवर्गीय परिवारों के युवकों को बहुत गम्भीरता से अपने भौतिक लक्ष्य पर विचार करने पर विवश कर दिया है। वह युग बीत गया जब सुनार का बेटा सुनार बनता था, किन्तु आज तो विज्ञान की और उद्योग-धन्धों की उन्नति ने सारी वस्तु स्थिति ही बदल दी है। अंग्रेजों की चलाई शिक्षा नीति के अनुसार, आज स्वतंत्रता के साठ वर्ष बाद भी शिक्षा केवल नौकरी प्राप्त करने के लिए प्राप्त की जाती है। देश की जनसंख्या इतनी तीव्र गति से बढ़ी है कि नौकरी पाना सब के लिए सम्भव नहीं है। आज नौकरी पाने के लिए कई तरह के पापड़ बेलने पड़ते हैं।

इन्हीं कारणों को ध्यान में रखकर मैंने निर्णय लिया है कि मैं नौकरी नहीं करूँगा। बारहवीं की परीक्षा पास करके मैं कोई तकनीकी कोर्स करूँगा। ऐसा कोर्स जिसको पास करके मैं कोई अपना काम-धन्धा शुरू कर सकूँ। सरकार ने जवाहर रोजगार योजना चला रखी है, जिसके अन्तर्गत मुझे सरकारी सहायता मिल सकेगी। दूसरे आजकल बैंकों से भी आसान शर्तों और कम ब्याज पर रुपया उधार मिल जाता है। मेरा विचार है कि मैं अपने गाँव में ही किसी छोटी-मोटी चीज़ को बनाने का काम शुरू करूँ। आजकल वस्तु निर्माण के साथ-साथ उसकी मार्केटिंग करना भी कोई सरल काम नहीं है। इस काम के लिए मैं अपने ही गाँव के कुछ पढ़े-लिखे बेरोज़गार नवयुवकों को लगाऊँगा।

इस तरह वे युवक पैसा भी कमाने लगेंगे और अपने माता-पिता के साथ रहकर उनकी सेवा भी कर सकेंगे।

बचपन से ही मेरी यह इच्छा रही है कि मैं कोई ऐसा व्यवसाय चुनूँ जिसमें मुझे पूर्ण स्वतंत्रता रहे। मुझे भी सुख मिले और राष्ट्र तथा समाज का भी कल्याण हो। काम चाहे कितना ही छोटा क्यों न हो उसे दिल लगाकर करना चाहिए।

मैं समझता हूँ मेरे उद्देश्य की पूर्ति में यदि बाधाएँ भी आएँ तो भी घबराऊँगा नहीं। मुझे पूर्ण विश्वास है कि ईश्वर और बड़ों के आशीर्वाद से मुझे अपने उद्देश्य में अवश्य सफलता मिलेगी और मैं अपने माता-पिता, अपने समाज और अपने राष्ट्र की सेवा कर सकूँगा।

विद्यार्थी और अनुशासन

अनुशासन का अर्थ है नियन्त्रण में रहकर नियमों का पालन करना। विद्यार्थी जीवन में तो अनुशासन का सर्वाधिक महत्त्व है क्योंकि विद्यार्थी जीवन मनुष्य के जीवन का ऐसा भाग है जिसमें व्यक्ति नए जीवन में प्रवेश करता है। वैसे तो व्यक्ति को प्रत्येक भाग में अनुशासन का पालन करना चाहिए, किन्तु विद्यार्थी काल में तो इसकी अधिक आवश्यकता है। विद्यार्थी काल में अनुशासन उसे भावी जीवन में सफल बनाने में सहायक होता है। गुरुसेवा, माता-पिता की आज्ञा का पालन करना और उनकी सेवा करना, छोटों के प्रति स्नेह और बड़ों के प्रति आदर भाव रखना। ये सभी अनुशासन के अन्तर्गत आते हैं।

अनुशासन एक ऐसी वस्तु है जिसकी अवहेलना कभी भी कहीं भी सहन नहीं की गई। आज का विद्यार्थी, कल का नेता एवं शासक होगा। देश की बागडोर उसी के हाथों में होगी। अनुशासन का व्यक्ति के जीवन और व्यवहार से गहरा संबंध है। अपने अध्यापकों का, माता-पिता का, बड़े-बुजुर्गों का मान करना, आदर सत्कार करना, उन्हें प्रणाम करना अनुशासन का ही एक अंग है। जो विद्यार्थी इस प्रकार के अनुशासन का पालन करता है वह समाज के दूषित वातावरण के प्रभाव से बचा रहता है तथा बुरी आदतों व विचारों से अपनी रक्षा कर पाता है। अनुशासन ही विद्यार्थी के भावी जीवन को एक आदर्श जीवन बना सकता है।

यह कहना गलत होगा कि विद्यार्थी को अनुशासन का पाठ केवल स्कूल या कॉलेज में ही पढ़ाया जाता है। स्कूल या कॉलेज में तो विद्यार्थी मात्र चार से छः घंटे ही रहता है। शेष समय तो वह अपने माता-पिता या समाज में रहकर ही बिताता है। यदि घर या समाज में विद्यार्थी को अनुशासनहीनता का सामना करना पड़ता है तो स्कूल/कॉलेज में उसे सिखाए गए इन अनुशासनों के पाठ पर पानी फिर जाता है। अतः विद्यार्थी को अनुशासन का पाठ सबसे पहले उसके माता-पिता से ही मिलता है। जो माता-पिता अपने बच्चों को कुछ नहीं कहते, उनका ध्यान नहीं रखते, वे अपने बच्चों को अनुशासनहीन बना देते हैं। परिणामस्वरूप वे स्कूल या कॉलेज में भी अपने अध्यापकों का सम्मान नहीं करते। जो माता-पिता अपने बच्चों के सामने गन्दी-गन्दी गालियाँ निकालते हैं, सिगरेट, शराब पीते हैं वे अपने बच्चों को कैसे रोक सकते हैं। अध्यापकों को चाहिए कि कक्षा में अपने विद्यार्थियों को अनुशासन की महत्ता पर अवश्य बताएँ। विद्यार्थी में उत्तरदायित्व की भावना पैदा करें। उन्हें स्कूल या कॉलेज के प्रबंध में अथवा वहाँ मनाए जा रहे समारोहों में सक्रिय रूप से भाग लेने का अवसर दें। ऐसा विद्यार्थी अपने आप अनुशासन की महत्ता को समझने लगेगा। विद्यार्थी को उसके धर्म के विषय में पूरी जानकारी अवश्य दें क्योंकि धार्मिक शिक्षा अनुशासन पैदा करने का सबसे बड़ा साधन

Notes

है। हमारा ऐसा मानना है, कि विद्यार्थी को यदि कोई अनुशासन का प्रशिक्षण दे सकता है तो वह अध्यापक ही है।

समय का सदुपयोग

कहा जाता है कि आज का काम कल पर मत छोड़ो। जिस किसी ने भी यह बात कही है उसने समय के महत्त्व को ध्यान में रखकर ही कही है। समय सबसे मूल्यवान वस्तु है। खोया हुआ धन फिर प्राप्त हो सकता है, किंतु खोया हुआ समय फिर लौट कर नहीं आता। इसीलिए कहा गया है 'The Time is Gold' क्योंकि समय बीत जाने पर सिवाय पछतावे के कुछ हाथ नहीं आता है। जो व्यक्ति समय को सामने से पकड़ता है, समय उसी के काबू में आता है, बीत जाने पर हाथ कुछ नहीं आता। कछुआ और खरगोश की कहानी में भी कछुआ दौड़ इसलिए जीत गया था कि उसने समय के मूल्य को समझ लिया था। इसीलिए वह दौड़ जीत पाया। विद्यार्थी जीवन में भी समय के महत्त्व को एवं उसके सदुपयोग को जो नहीं समझता और विद्यार्थी जीवन आवारागर्दी और ऐशो आराम में व्यतीत कर देता है, वह जीवन भर पछताता रहता है।

इतिहास साक्षी है कि संसार में जिन लोगों ने भी समय के महत्त्व को समझा वे जीवन में सफल रहे। पृथ्वी राज चौहान समय के मूल्य को न समझने के कारण ही गौरी से पराजित हुआ। नेपोलियन भी वाटरलू के युद्ध में पाँच मिनटों के महत्त्व को न समझ पाने के कारण पराजित हुआ। इसके विपरीत जर्मनी के महान् दार्शनिक कांट, जो अपना जीवन समय के बंधन में बाँधकर कुछ इस तरह बिताते थे कि लोग उन्हें दफ्तर जाते देख अपनी घड़ियाँ मिलाया करते थे।

आधुनिक जीवन में तो समय का महत्त्व और भी ज्यादा बढ़ गया है। आज जीवन में भागम-भाग और जटिलता इतनी अधिक बढ़ गई है कि यदि हम समय के साथ-साथ कदम मिलाकर न चलें तो जीवन की दौड़ में पिछड़ जाएँगे। शायद इसी कारण आज कलाई घड़ियाँ प्रत्येक की कलाईयों पर बँधी दिखाई देती हैं। आज सभी समय के प्रति बहुत जागरूक दिखाई देते हैं। आज के युग को प्रतिस्पर्धा का युग भी कहा जाता है। इसलिए हर कोई समय का सदुपयोग करना चाहता है। आज समय का सदुपयोग करते हुए सही समय पर सही काम करना हमारे जीवन की सबसे बड़ी आवश्यकता है।

विद्यार्थी जीवन में समय का सदुपयोग करना बहुत जरूरी है। क्योंकि विद्यार्थी जीवन बहुत छोटा होता है। इस जीवन में प्राप्त होने वाले समय का जो विद्यार्थी सही सदुपयोग कर लेते हैं वे ही भविष्य में सफलता की सीढ़ियाँ चढ़ते हैं और जो समय को नष्ट करते हैं, वे स्वयं नष्ट हो जाते हैं।

इसलिए हमारे दार्शनिकों, संतों आदि ने अपने काम को तुरन्त मनोयोग से करने की सलाह दी है। उन्होंने कहा है कि 'कल करे सो आज कर आज करे सो अब।' कल किसने देखा है अतः दृष्टि वर्तमान पर रखो और उसका भरपूर प्रयोग करो। कर्मयोगी की यही पहचान है। जीवन दुर्लभ ही नहीं क्षणभंगुर भी है अतः जब तक सांस है तब तक समय का सदुपयोग करके हमें अपना जीवन सुखी बनाना चाहिए।

खेलों का जीवन में महत्त्व

खेल-कूद हमारे जीवन की एक महत्त्वपूर्ण आवश्यकता है। ये हमारे मनोरंजन का प्रमुख साधन भी है। पुराने ज़माने में जो लोग व्यायाम नहीं कर सकते थे अथवा खेल-कूद में भाग नहीं ले सकते थे वे शतरंज, ताश जैसे खेलों से अपना मनोरंजन कर लिया करते थे। किन्तु जो लोग स्कूल या कॉलेज

में पढ़ा करते थे, वे स्कूल या कॉलेज की पढ़ाई के पश्चात् कुछ देर खेल-कूद में भाग लेकर पढ़ाई की थकावट को दूर कर लिया करते थे। दौड़ना, भागना, कूदना इत्यादि भी खेलों का ही एक अंग है। इस तरह खेलों में भाग लेकर हमारे शरीर की मांसपेशियाँ तथा शरीर के दूसरे अंग स्वस्थ हो जाया करते हैं। खेल-कूद में भाग लेकर व्यक्ति की मानसिक थकावट दूर हो जाती है।

अंग्रेजी की एक प्रसिद्ध कहावत है कि All work and no play makes jack a dull boy. इस कहावत का अर्थ है कि यदि कोई सारा दिन काम में जुटा रहेगा, खेल-कूद या मनोरंजन के लिए समय नहीं निकालेगा तो वह कुंठित हो जाएगा उसका शरीर रोगी बन जाएगा तथा वह निराशा का शिकार हो जाएगा। अतः स्वस्थ जीवन के लिए खेलों में भाग लेना अत्यावश्यक है। इस तरह व्यक्ति का मन भी स्वस्थ होता है। उसकी पाचन शक्ति भी ठीक रहती है, भूख खुलकर लगती है, नींद डटकर आती है, परिणामस्वरूप कोई भी बीमारी ऐसे व्यक्ति के पास आने से डरती है।

खेलों से अनुशासन और आत्म-नियंत्रण भी पैदा होता है और अनुशासन जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में आवश्यक है। बिना अनुशासन के व्यक्ति जीवन में उन्नति और विकास नहीं कर सकता। खेल हमें अनुशासन का प्रशिक्षण देते हैं।

रेलवे प्लेटफार्म का दृश्य

एक दिन संयोग से मुझे अपने बड़े भाई को लेने रेलवे स्टेशन पर जाना पड़ा। मैं प्लेटफार्म टिकट लेकर रेलवे स्टेशन के अन्दर गया। पूछताछ खिड़की से पता लगा कि दिल्ली से आने वाली गाड़ी प्लेटफार्म नं. 4 पर आएगी। मैं रेलवे पुल पार करके प्लेटफार्म नं. 4 पर पहुँच गया। वहाँ यात्रियों की काफी बड़ी संख्या मौजूद थी। कुछ लोग मेरी तरह अपने प्रियजनों को लेने के लिए आये थे तो कुछ लोग अपने प्रियजनों को गाड़ी में सवार कराने के लिए आये हुए थे। जाने वाले यात्री अपने-अपने सामान के पास खड़े थे। कुछ यात्रियों के पास कुली भी खड़े थे। मैं भी उन लोगों की तरह गाड़ी की प्रतीक्षा करने लगा। इसी दौरान मैंने अपनी नज़र रेलवे प्लेटफार्म पर दौड़ाई। मैंने देखा कि अनेक युवक और युवतियाँ अत्याधुनिक पोशाक पहने इधर-उधर घूम रहे थे। कुछ युवकों को देखने से लगता था कि वे यहाँ केवल मनोरंजन के लिए ही आए हैं। ऐसे युवक दो-दो, चार-चार के ग्रुप में थे। कुछ यात्री टी-स्टाल पर खड़े चाय की चुस्कियाँ ले रहे थे, परन्तु उनकी नज़रें बार-बार उस तरफ उठ जाती थीं, जिधर से गाड़ी आने वाली थी। कुछ यात्री बड़े आराम से अपने सामान के पास खड़े थे, लगता था कि उन्हें गाड़ी आने पर जगह प्राप्त करने की कोई चिन्ता नहीं। उन्होंने पहले से ही अपनी सीट आरक्षित करवा ली थी। कुछ फेरी वाले भी अपना माल बेचते हुए प्लेटफार्म पर घूम रहे थे। सभी लोगों की नज़रें उस तरफ थीं जिधर से गाड़ी ने आना था। तभी लगा जैसे गाड़ी आने वाली हो। प्लेटफार्म पर भगदड़ सी मच गई। सभी यात्री अपना-अपना सामान उठा कर तैयार हो गये। कुलियों ने सामान अपने सिरों पर रख लिया। सारा वातावरण उत्तेजना से भर गया। देखते ही देखते गाड़ी प्लेटफार्म पर आ पहुँची। कुछ युवकों ने तो गाड़ी के रुकने की भी प्रतीक्षा नहीं की। वे गाड़ी के साथ दौड़ते-दौड़ते गाड़ी में सवार हो गये। गाड़ी रुकी तो गाड़ी में सवार होने के लिए धक्कम-पेल शुरू हो गयी। उन्हें दूसरों की नहीं केवल अपनी चिन्ता थी। मेरे भाई मेरे सामने वाले डिब्बे में थे। उनके गाड़ी से नीचे उतरते ही मैंने उनके चरण स्पर्श किये और उनका सामान उठाकर स्टेशन से बाहर की ओर चल पड़ा। चलते-चलते मैंने देखा जो लोग अपने प्रियजनों को गाड़ी में सवार कराकर लौट रहे थे उनके चेहरे उदास थे और मेरी तरह जिनके प्रियजन गाड़ी से उतरे थे उनके चेहरों पर रौनक थी, खुशी थी।

Notes

बस अड्डे का दृश्य

आजकल पंजाब में लोग अधिकतर बसों से ही यात्रा करते हैं। पंजाब का प्रत्येक गाँव मुख्य सड़क से जुड़ा होने के कारण बसों का आना-जाना अब लगभग हर गाँव में होने लगा है। बस अड्डों का जब से प्रबंध पंजाब रोडवेज़ के अधिकार क्षेत्र में आया है बस अड्डों का हाल दिनों-दिन बुरा हो रहा है। हमारे शहर का बस अड्डा भी उन बस अड्डों में से एक है जिसका प्रबंध हर दृष्टि से नाकारा हुआ है। इस बस अड्डे के निर्माण से पूर्व बसें अलग-अलग स्थानों से अलग-अलग अड्डों से चला करती थीं। सरकार ने यात्रियों की असुविधा को ध्यान में रखते हुए सभी बस अड्डे एक ही स्थान पर कर दिये। शुरु-शुरु में तो लोगों को लगा कि सरकार का यह कदम बड़ा सराहनीय है किंतु ज्यों-ज्यों समय बीतता गया जनता की कठिनाइयाँ, परेशानियाँ बढ़ने लगीं। हमारे शहर के बस अड्डे पर भी अन्य शहरों की तरह अनेक दुकानें बनाई गई हैं। जिनमें खान-पान, फल-सब्जियाँ आदि की दुकानों के अतिरिक्त पुस्तकों की, मनियारी आदि की भी अनेक दुकानें हैं। हलवाई की दुकान से उठने वाला धुआँ सारे यात्रियों की परेशानी का कारण बनता है। चाय-पान आदि की दुकानों की साफ सफाई की तरफ कोई ध्यान नहीं देता। वहाँ माल भी महँगा मिलता है और गंदा भी। बस अड्डे में अनेक फलों की रेहड़ी वालों को भी माल बेचने की आज्ञा दी गई है। ये लोग काले लिफाफे रखते हैं जिनमें वे सड़े गले फल पहले से ही तोल कर रखते हैं और लिफाफा इस चतुराई से बदलते हैं कि यात्री को पता नहीं चलता। घर पहुँच कर ही पता चलता है कि उन्होंने जो फल (सेब या आम) चुने थे वे बदल दिये गये हैं। अड्डा इन्चार्ज इस संबंध में कोई कार्यवाही नहीं करते। बस अड्डे की शौचालय की साफ-सफाई न होने के बराबर है। यात्रियों को टिकट देने के लिए लाइन नहीं लगवाई जाती। बस आने पर लोग भाग दौड़ कर बस में सवार होते हैं। औरतों, बच्चों और वृद्ध लोगों का बस में चढ़ना बहुत ही कठिन होता है। बहुत बार देखा गया है कि जितने लोग बस के अंदर होते हैं उतने ही बस के ऊपर चढ़े होते हैं। पंजाब में एक कहावत प्रसिद्ध है कि रोडवेज़ की लारी न कोई शीशा न बारी। पर बस अड्डों का हाल तो उनसे भी बुरा है। जगह-जगह खड़बे, कीचड़, मक्खियाँ, मच्छर और न जाने क्या-क्या। आज यह बस अड्डे जेब कतरों और नौसर बाज़ों के भी अड्डे बने हुए हैं। हर यात्री को अपने-अपने घर पहुँचने की जल्दी होती है, इसलिए कोई भी बस अड्डे की इस दुर्दशा की ओर ध्यान नहीं देता।

सूर्योदय का दृश्य

पूर्व दिशा की ओर उभरती हुई लालिमा को देखकर पक्षी चहचहाने लगते हैं उन्हें सूर्य के आगमन की सबसे पहले सूचना मिल जाती है। वे अपनी चहचहाहट द्वारा समस्त प्राणी जगत् को रात के बीत जाने की सूचना देते हुए जागने की प्रेरणा देते हैं। सूर्य देवता का स्वागत करने के लिए प्रकृति रूपी नटी भी प्रसन्नता में भर कर नाच उठती है। फूल खिल उठते हैं, कलियाँ चटक जाती हैं और चारों ओर का वातावरण सुगन्धित हो उठता है। सूर्य देवता के आगमन के साथ ही मनुष्य रात भर के विश्राम के बाद ताज़ा दम होकर जाग उठते हैं। हर तरफ चहल-पहल नज़र आने लगती है। किसान हल और बैलों के साथ अपने खेतों की ओर चल पड़ते हैं। गृहणियाँ घरेलू काम-काज में व्यस्त हो जाती हैं। मन्दिरों एवं गुरुद्वारों में लगे लाउडस्पीकर और भी ऊँची आवाज़ में भजन कीर्तन के कार्यक्रम प्रसारित करने लगते हैं। भक्तजन स्नानादि से निवृत्त हो पूजा पाठ में लग जाते हैं। कई लोग मन्दिरों, गुरुद्वारों में माथा टेकने के लिए घर से निकल पड़ते हैं। स्कूली बच्चों की माताएँ उन्हें झिंझोड़-झिंझोड़ कर जगाने लगती हैं। दफ्तरों को जाने वाले बाबू जल्दी-जल्दी तैयार होने लगते हैं ताकि समय पर बस

पकड़ कर अपने दफ्तर पहुँच सकें। थोड़ी देर पहले जो शहर सन्नाटे में लीन था आवाज़ों के घेरे में घिरने लगता है। सड़कों पर मोटरों, स्कूटरों, कारों के चलने की आवाज़ें सुनाई देने लगती हैं। ऐसा लगता है मानो सड़कों भी नींद से जाग उठी हों। सूर्योदय समय की प्राकृतिक सुषमा का असली नज़ारा तो किसी गाँव, किसी पहाड़ी क्षेत्र अथवा किसी नदी तट पर ही देखा जा सकता है। प्रातः वेला में सोये रहने वाले लोग प्रकृति की इस सुन्दरता के दर्शन नहीं कर सकते। कौन उन्हें बताए कि सूर्योदय के समय सूर्य के सामने आँखें बन्द कर दो-चार मिनट खड़े रहने से आँखों की ज्योति कभी क्षीण नहीं होती। पर जो विद्यार्थी उठते ही सूर्योदय के बाद हैं वे इस पावन दृश्य से लाभ कैसे उठा पाएँगे। अतः सूर्योदय से पहले जागना स्वास्थ्य के लिए अत्यन्त लाभप्रद है।

घरों में घर अपना घर

कहते हैं कि घरों में घर अपना घर। सच है अपना घर अपना ही होता है। अपने घर में चाहे सारी सुख-सुविधाएँ न भी प्राप्त हों तो भी वह अच्छा लगता है। जो स्वतन्त्रता व्यक्ति को अपने घर में होती है वह किसी बड़े आलीशान घर में भी नहीं प्राप्त होती। पराये घर में जो झिझक, असुविधा होती है वह अपने घर में नहीं होती। अपने घर में व्यक्ति अपनी मर्जी का मालिक होता है। दूसरे के घर में उस घर के स्वामी की इच्छानुसार अथवा उस घर के नियमों के अनुसार चलना होता है। अपने घर में आप जो चाहें करें, जो चाहें खाएँ, जहाँ चाहें बैठें, जहाँ चाहें लेटें पर दूसरे के घर में यह सब सम्भव नहीं। इसीलिए तो किसी ने कहा है—जो सुख छज्जू दे चौबारे वह न बलख, न बुखारे। शायद यही कारण है कि आजकल नौकरी करने वाले प्रतिदिन मीलों का सफर करके नौकरी पर जाते हैं परंतु रात को अपने घर वापिस आ जाते हैं। पुरुष तो पहले भी नौकरी करने बाहर जाते थे। आजकल स्त्रियाँ भी नौकरी करने घर से कई मील दूर जाती हैं परंतु सभी अपने-अपने घरों को लौटना पसंद करते हैं। मनुष्य ही नहीं पशु-पक्षी तक भी अपने घर के महत्त्व को समझते हैं। सारा दिन जंगल में चरने वाली गाएँ, भैंसें, भेड़, बकरियाँ संध्या होते ही अपने-अपने घरों को लौट आते हैं। पक्षी भी दिन भर दाना दुनका चुगकर संध्या होते ही अपने-अपने घोंसलों (घरों) को लौट कर आते हैं। घर का मोह ही उन्हें अपने घोंसलों में लौट आने के लिए विवश करता है, क्योंकि जो सुख अपने घर में मिलता है वह और कहीं नहीं मिलता। इसीलिए कहा गया है कि घरों में घर अपना घर।

मतदान केन्द्र का दृश्य

प्रजातन्त्र में चुनाव अपना विशेष महत्त्व रखते हैं। गत 22 फरवरी को हमारे कस्बे में नवाँ शहर विधानसभा क्षेत्र के लिए उप-चुनाव हुआ। चुनाव से कोई महीना भर पहले विभिन्न राजनीतिक दलों द्वारा बड़े जोर-शोर से चुनाव प्रचार किया गया। धन और शराब का खुलकर वितरण किया गया। पंजाब में एक कहावत प्रसिद्ध है कि चुनाव के दिनों में यहाँ नोटों की वर्षा की जाती है और शराब की नदियाँ बहती हैं। चुनाव आयोग ने लाख सिर पटका पर ढाक के तीन पात ही रहे। आज मतदान का दिन है। मतदान से एक दिन पूर्व ही मतदान केन्द्रों की स्थापना की गई है। मतदान वाले दिन जनता में भारी उत्साह देखा गया। इस बार पंजाब में पहली बार इलेक्ट्रॉनिक मशीनों का प्रयोग किया जा रहा था। अब मतदाताओं को मतदान केन्द्र पर मत-पत्र नहीं दिये जाने थे और न ही उन्हें अपने मत मतपेटियों में डालने थे। अब तो मतदाताओं को अपनी पंसद के उम्मीदवार के नाम और चुनाव चिह्न के आगे लगे बटन को दबाना भर था। इस नए प्रयोग के कारण भी मतदाताओं में काफी उत्साह देखने में आया। मतदान प्रातः आठ बजे शुरू होना था किन्तु मतदान केन्द्रों के बाहर विभिन्न

Notes

राजनीतिक दलों ने अपने-अपने पंडाल समय से काफी पहले सजा लिये। उन पंडालों में उन्होंने अपनी-अपनी पार्टी के झण्डे एवं उम्मीदवार के चित्र भी लगा रखे थे। दो तीन मेजें भी पंडाल में लगाई गई थीं जिन पर उम्मीदवार के कार्यकर्ता मतदान सूचियाँ लेकर बैठे थे और मतदाताओं को मतदाता सूची में से उनकी क्रम संख्या तथा मतदान केन्द्र की संख्या तथा मतदान केन्द्र का नाम लिखकर एक पर्ची दे रहे थे। आठ बजने से पूर्व ही मतदान केन्द्रों पर मतदाताओं की लम्बी-लम्बी कतारें लगनी शुरू हो गई थीं। दोपहर होते-होते मतदाताओं की भीड़ में कमी आने लगी। राजनीतिक पार्टियों के कार्यकर्ता मतदाताओं को घर-घर कर ला रहे थे। हालांकि चुनाव आयोग ने मतदाताओं को किसी प्रकार के वाहन में लाने की मनाही की है किन्तु सभी उम्मीदवार अपने-अपने मतदाताओं को रिक्शा, जीप या कार में बिठा कर ला रहे थे। सायं चार बजते-बजते यह मेला उजड़ने लगा। भीड़ मतदान केन्द्र से हट कर उम्मीदवारों के पंडालों में जमा हो गयी थी और सभी अपने-अपने उम्मीदवार की जीत के अनुमान लगाने में मस्त थे।

रेल यात्रा का अनुभव

हमारे देश में रेलवे ही एक ऐसा विभाग है जो यात्रियों को टिकट देकर सीट की गारंटी नहीं देता। रेल का टिकट खरीद कर सीट मिलने की बात तो बाद में आती है पहले तो गाड़ी में घुस पाने की भी समस्या सामने आती है और यदि कहीं आप बाल-बच्चों अथवा सामान के साथ यात्रा कर रहे हों तो यह समस्या और भी विकट हो उठती है। कभी-कभी तो ऐसा भी होता है कि टिकट पास होते हुए भी आप गाड़ी में सवार नहीं हो पाते और 'दिल की तमन्ना दिल में रह गयी' गाते हुए या रोते हुए घर लौट आते हैं। रेलगाड़ी में सवार होने से पूर्व गाड़ी की प्रतीक्षा करने का समय बड़ा कष्टदायक होता है। मैं भी एक बार रेलगाड़ी में मुम्बई जाने के लिए स्टेशन पर गाड़ी की प्रतीक्षा कर रहा था। गाड़ी कोई दो घण्टे लेट थी। यात्रियों की बेचैनी देखते ही बनती थी। गाड़ी आई तो गाड़ी में सवार होने के लिए ज़ोर आजमाई शुरू हो गयी। किस्मत अच्छी थी कि मैं गाड़ी में सवार होने में सफल हो सका। गाड़ी चले अभी घण्टा भर ही हुआ था कि कुछ यात्रियों के मुख से मैंने सुना कि यह डिब्बा जिसमें मैं बैठा था अमुक स्थान पर कट जाएगा। यह सुनकर मैं तो दुविधा में पड़ गया। गाड़ी रात के एक बजे उस स्टेशन पर पहुँची जहाँ हमारा वह डिब्बा मुख्य गाड़ी से कटना था और हमें दूसरे डिब्बे में सवार होना था। उस समय अचानक तेज़ वर्षा होने लगी। स्टेशन पर कोई भी कुली नज़र नहीं आ रहा था। सभी यात्री अपना-अपना सामान उठाये वर्षा में भीगते हुए दूसरे डिब्बे की ओर भागने लगे। मैं अपना अटैची लेकर उतरने लगा कि एक दम से वह डिब्बा चलने लगा। मैं गिरते-गिरते बचा और अटैची मेरे हाथ से छूट कर प्लेटफार्म पर गिर पड़ा और पता नहीं कैसे झटके के साथ खुल गया। मेरे कपड़े वर्षा में भीग गये। मैंने जल्दी-जल्दी अपना सामान समेटा और दूसरे डिब्बे की ओर बढ़ गया। गर्मी का मौसम और उस डिब्बे के पंखे बन्द। खैर गाड़ी चली तो थोड़ी हवा लगी और कुछ राहत मिली। बड़ी मुश्किल से मैं मुम्बई पहुँचा।

बस यात्रा का अनुभव

पंजाब में बस-यात्रा करना कोई आसान काम नहीं है। एक तो पंजाब की बसों के विषय में पहले ही कहावत प्रसिद्ध है कि 'रोडवेज़ दी लारी न कोई-शीशा न कोई बारी' दूसरे 52 सीटों वाली बस में ऊपर-नीचे कोई सौ सवा सौ आदमी सवार होते हैं। ऐसे अवसरों पर कण्डक्टर महाशय की तो चाँदी होती है। वे न किसी को टिकट देते हैं और न किसी को बाकी पैसे। मुझे भी एक बार ऐसी ही बस में यात्रा करने का अनुभव प्राप्त हुआ। मैं बस अड्डे पर उस समय पहुँचा जब बस चलने वाली ही

थी अतः मैं टिकट खिड़की की ओर न जाकर सीधा बस की ओर बढ़ गया। बस ठसा ठसा भरी हुई थी। मुझे जाने की जल्दी थी इसलिए मैं भी उस बस में घुस गया। बड़ी मुश्किल से खड़े होने की जगह मिली। मेरे बस में सवार होने के बाद भी बहुत से यात्री बस में चढ़ना चाहते थे। कण्डक्टर ने उन्हें बस की छत के ऊपर चढ़ने के लिए कहा। पुरुष यात्री तो सभी छत पर चढ़ गये परन्तु स्त्रियाँ और बच्चे न चढ़े। बस चली तो लोगों ने सुख की सांस ली। थोड़ी देर में बस कण्डक्टर टिकटें काटता हुआ मेरे पास आया। मुझे लगा उसने शराब पी रखी है। मुझ से पैसे लेकर उसने बकाया मेरी टिकट के पीछे लिख दिया और आगे बढ़ गया। मैंने अपने पास खड़े एक सज्जन से कण्डक्टर के शराब पीने की बात कही तो उन्होंने कहा कि शाम के समय ये लोग ऐसे ही चलते हैं। हराम की कमाई है शराब में नहीं उड़ाएँगे तो और कहाँ उड़ाएँगे। थोड़ी ही देर में एक बूढ़ी स्त्री का उस कण्डक्टर से झगड़ा हो गया। कण्डक्टर उसे फटे हुए नोट बकाया के रूप में वापस कर रहा था और बुढ़िया उन नोटों को लेने से इन्कार कर रही थी। कण्डक्टर कह रहा था ये सरकारी नोट हैं हमने कोई अपने घर तो बनाये नहीं। इसी बीच उसने उस बुढ़िया को कुछ अपशब्द कहे। बुढ़िया ने उठ कर उसको गले से पकड़ लिया। सारे यात्री कण्डक्टर के विरुद्ध हो गये। कण्डक्टर बजाए क्षमा माँगने के और भी गर्म हो रहा था। अभी उन में यह झगड़ा चल ही रहा था कि मेरे गाँव का स्टाप आ गया। बस रुकी और मैं जल्दी से उतर गया। बस क्षण भर रुकने के बाद आगे बढ़ गयी। मेरी सांस में सांस आई। जैसे मुझे किसी ने शिकंजे में दबा रखा हो। इसी घबराहट में मैं कण्डक्टर से अपने बकाया पैसे लेना भी भूल गया।

हमारे पड़ोसी

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। वह अकेला नहीं रह सकता। वह सदा एक समुदाय के रूप में रहना पसंद करता है। इसीलिए कहा है कि अकेला तो वृक्ष भी अच्छा नहीं लगता। मनुष्य ने जब से गाँवों और शहरों में रहना शुरू किया है, उसके लिए उसके पड़ोसी विशेष महत्त्व रखने लगे। पड़ोसी ही हमारे सुख-दुःख के साझीदार होते हैं। समय कुसमय में हमारी सहायता करते हैं। सगे-सम्बन्धी तो हम से दूर होते हैं और फिर वे कुछ ही दिनों के लिए हमारे पास आते हैं। इसलिए पड़ोसियों से हमें सदा बना कर रखनी पड़ती है। इसका कारण यह है कि रिश्तेदार तो जब आएगा तभी लड़ेगा किन्तु यदि पड़ोसी प्रतिदिन लड़ाई झगड़ा करेगा तो जीना दूभर हो जाता है। भले ही आज परिस्थितियाँ बदलने के कारण तथा महानगरीय सभ्यता के प्रभाव के कारण पड़ोसियों का कोई महत्त्व नहीं रह गया है, किन्तु हम इस दृष्टि से भाग्यवान हैं कि हमें अच्छे पड़ोसी मिले हैं। किसी के घर विवाह-शादी हो तो सारे पड़ोसी मिल-जुल कर विवाह कार्यों में हाथ बंटाते हैं। किसी को कोई दुःख तकलीफ हो तो सारे पड़ोसी इकट्ठे हो जाते हैं। आज के स्वार्थी युग में ऐसे पड़ोसी मिलना बहुत कठिन है। हमारे पड़ोस में एक अवकाश प्राप्त अध्यापक रहते हैं। वे सारे मुहल्ले के बच्चों को मुफ्त पढ़ाते हैं। एक दूसरे सज्जन हैं जो सभी पड़ोसियों के छोटे-छोटे काम बड़ी प्रसन्नता से करते हैं। किन्तु जैसे चाँद में भी दाग होता है हमारे पड़ोस में एक प्रौढ़ महिला भी रहती हैं जिन्हें सारे मुहल्ले वाले मौसी कह कर पुकारते हैं। यह मौसी मुहल्ले भर के लड़के-लड़कियों की खबर रखती है। यहाँ तक कि किस की लड़की अधिक फैशन करती है, किस का लड़का लड़कियों के पीछे घूमता है। मौसी को सारे मुहल्ले की ही नहीं, सारे शहर की खबर रहती है। मौसी ने कई बार झूठी चुगली करके कुछ पड़ोसियों को आपस में लड़वाने की कोशिश भी की। परन्तु मुहल्ले वाले उसकी चाल को समझते हैं। संक्षेप में कहें तो हमारे सारे पड़ोसी बहुत अच्छे हैं। एक-दूसरे का ध्यान रखते हैं और समय पड़ने पर उचित सहायता भी करते हैं। हम बच्चे भी सभी का समान रूप से आदर करते हैं।

4.2.2 विचारात्मक अनुच्छेद

चरित्र की हानि से बढ़ कर कोई हानि नहीं

एक कहावत है कि यदि धन की हानि हो जाए तो समझो कुछ हानि नहीं हुई, यदि स्वास्थ्य की हानि हो जाए तो समझो कुछ हानि हुई किन्तु यदि चरित्र की हानि हो जाए तो समझो सब कुछ नष्ट हो गया। धन तो फिर भी कमाया जा सकता है, स्वास्थ्य लाभ उपचार से प्राप्त किया जा सकता है किन्तु एक बार चरित्रहीन हो जाने पर, लाख भला बनने की कोशिश करने पर भी कोई विश्वास नहीं करेगा। यह ऐसा कलंक है जो किसी सूरत में धुलता नहीं। रहीम जी ने चन्द्रमा का उदाहरण देते हुए इसी की पुष्टि की है। चन्द्रमा में कलंक है, किन्तु जब-जब चन्द्रमा को लोग निष्कलंक देखते हैं तो किसी भयानक उत्पात की आशंका करते हैं। यही कारण है कि प्रत्येक स्कूल में सुबह-सुबह प्रार्थना करते हुए विद्यार्थी ईश्वर से सदाचारी बनाए जाने की प्रार्थना करते हैं। ऐसा इस कारण है कि मानव के व्यक्तित्व का निर्माण करने वाले विभिन्न तत्त्वों में चरित्र का सबसे अधिक महत्त्व है। चरित्र एक ऐसी शक्ति है, जो मानव जीवन को सफल बनाती है। चरित्र की शक्ति ही मानव जीवन में आत्मविश्वास और आत्म-निर्भरता उत्पन्न करती है। चरित्र मनुष्य के कार्यकलाप और आचरण के समूह का नाम है। चरित्र रूपी शक्ति, विद्या, बुद्धि और सम्पत्ति की शक्ति से भी महान होती है। इतिहास इस बात का गवाह है कि कई चक्रवर्ती सम्राट् धन, पद और विद्या के स्वामी थे किन्तु चरित्र के अभाव में अस्तित्वहीन हो गये। रावण जैसा प्रकाण्ड पण्डित, चारों वेदों का ज्ञाता, महान भक्त और योद्धा अपनी चरित्रहीनता के कारण आज तक घृणा का पात्र बना हुआ है। तन मन की पवित्रता, कर्तव्य की भावना, परोपकार और समाज की सेवा भी चारित्रिक गुणों से ही आती है। मानव जीवन की सम्पूर्ण सफलता, यश और गौरव अर्जित करने के लिए यह आवश्यक है कि प्रत्येक व्यक्ति अपने चरित्र को ऊँचा बनाए। चारित्रिक दृष्टि से हमें जो हानि हो रही है उसकी भरपाई करना कठिन हो जाता है। हमारा राष्ट्रीय चरित्र दो कौड़ी का रह जाएगा। अतः अपने चरित्र की ओर ध्यान दीजिए, विशेषकर विद्यार्थी जीवन में। इस से आप में आत्म-विश्वास जागेगा। आप उन्नति कर सकेंगे। सब से बड़ी बात इस से भारतीयता की भी रक्षा हो सकेगी।

कथनी से करनी भली

कहते हैं कहना तो आसान है किन्तु करके दिखाना बड़ा कठिन होता है। किन्तु स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद हमारे राजनीतिज्ञों ने इसे सच करके दिखा दिया है। चुनाव के समय बड़े-बड़े वादे किये जाते हैं। हम यह कर देंगे, हम वो कर देंगे। हम देश से गरीबी हटा देंगे, भूख भगा देंगे इत्यादि इत्यादि। किन्तु ज्योंही चुनाव में विजयी हुए उनकी सूरत तक देखने को वोटर बेचारा तरस जाता है। हाँ, कहीं सौभाग्य से वे नेता जी मंत्री बन जाएँ तो उनकी फोटो प्रतिदिन समाचार-पत्रों में देखने को मिल जाती है। बड़ों ने कहा है कि जो व्यक्ति केवल कहता है करता कुछ नहीं, तो लोगों का विश्वास उस पर से उठ जाता है। हम इस बात को नहीं मानते। कितने ही नेता हैं जो केवल कहते हैं करते कुछ नहीं वे हर बार चुनाव जीत जाते हैं। हर बार लोग उनकी कथनी पर विश्वास करके उन्हें बोट देते हैं। वह युग गया जब महात्मा गाँधी के पास कोई व्यक्ति यह पूछने गया था कि महात्मा जी गुड़ कैसे छोड़ा गए। गाँधी जी ने उसे परसों आने को कहा। उस दिन जाने पर गाँधी ने उस व्यक्ति को कहा—तुम गुड़ खाना छोड़ दो। उस व्यक्ति ने कहा महात्मा जी यह वाक्य तो आप बीते परसों भी कह सकते थे। गाँधी जी ने उत्तर दिया उस दिन मैं स्वयं गुड़ खाता था। यदि उस दिन मैं तुम्हें गुड़

छोड़ने को कहता तो तुम्हारा गुड़ भी खाना छूटता नहीं। आज मैंने स्वयं गुड़ खाना छोड़ दिया है इसलिए तुम्हें भी गुड़ खाना छोड़ने को कह रहा हूँ। गाँधी जी को लोग बापू और राष्ट्र पिता इसीलिए कहते हैं कि वह जो कहते थे उसे करते भी थे। यदि नेताओं की बात छोड़ दें तो क्या आज के युग में ऐसे साधु प्रचारक देखने को नहीं मिलते जो दूसरों को तो मोह माया त्यागने का उपदेश देते हैं परन्तु स्वयं लम्बी-लम्बी कीमती गाड़ियों में घूमते हैं। इतिहास साक्षी है कि जिन-जिन लोगों की कथनी और करनी समान थी वे अमर हो गए। हमें भी चाहिए कि जो कहें उसे कर दिखाएँ नहीं तो कहें ही नहीं व्यर्थ की डींगें मारने से कोई लाभ नहीं। दूसरों को उपदेश देने वाले तो बहुत मिल जायेंगे पर स्वयं उस पर अमल करने वाले कम लोग ही मिलेंगे। काश हमारे राजनीतिज्ञ गद्दी का मोह छोड़कर वही कहें जो वे करना चाहते हैं। करके दिखाएँ तो जानें।

अंग्रेजी हटाओ राष्ट्रभाषा व प्रान्तीय भाषा लाओ

संविधान के निर्णयानुसार 15 वर्षों के भीतर, अर्थात् सन् 1965 तक हिन्दी का राज भाषा विषयक रूप विकसित हो जाना चाहिए था अर्थात् उस समय तक कानून की सभी पुस्तकों का हिन्दी में अनुवाद हो जाना चाहिए, साहित्य एवं विज्ञान की इतनी पुस्तकें प्रकाशित हो जानी चाहिए कि हिन्दी के माध्यम से विश्वविद्यालयों में ऊँची से ऊँची शिक्षा दी जा सके तथा न्यायालयों एवं महान्यायालयों में हिन्दी के माध्यम से विचार और विमर्श किया जा सके। साथ ही हिन्दी प्रान्तों में तब तक हिन्दी का इतना प्रचार भी कर देना है कि उन प्रान्तों के साथ केन्द्रीय एवं अन्य प्रान्तीय शासनों का पत्राचार हिन्दी में चल सके तथा जो व्यक्ति सार्वदेशीय धरातल से देश के साथ हिन्दी में बोलना चाहें, उन्हें शिक्षा साधनों के सीमित होने के कारण कोई कठिनाई नहीं हो। प्रायः लोग इस भ्रम में पड़ जाते हैं कि अंग्रेजी के हटने पर जो स्थान रिक्त होगा वह सब का सब हिन्दी को मिल जाएगा। यह हिन्दी के पक्ष में अनुचित उत्साह है। अंग्रेजी केवल हिन्दी का अधिकार दबा कर नहीं बैठी है। वह अधिक स्थान तो क्षेत्रीय भाषाओं के ही दबाए हुए है। अंग्रेजी के हटने पर भी प्रान्तीय शासन और जनता चाहे तो, शिक्षा के भी काम वहाँ की प्रान्तीय भाषाओं में ही चलेंगे। अतएव आवश्यकता है कि प्रत्येक क्षेत्र की जनता में अपनी मातृभाषा के लिए अनुराग उत्पन्न किया जाए। इसी अनुराग को जगाकर हम अंग्रेजी को वर्तमान पद से हटा सकते हैं। जब तक जनता में मातृभाषा के लिए प्रेम नहीं जागता, तब तक प्रान्तीय भाषाओं के क्षेत्रों में राष्ट्रभाषा का मार्ग भी वंचित रहेगा। प्रसन्नता की बात है कि हिन्दी प्रान्तों में शासन के कार्यों में हिन्दी का प्रयोग बढ़ने लगा है। इसका अनुकरण अन्य भाषा-भाषी क्षेत्रों में भी होना चाहिए जिससे वहाँ के भी शासन सम्बन्धी कार्य क्षेत्रीय भाषाओं में किये जा सकें। प्रान्तों में जब क्षेत्रीय भाषाओं का प्रयोग होना आरम्भ हो जाएगा, तभी वहाँ की जनता अंग्रेजी के स्थान पर अपनी राष्ट्रभाषा सीखने के महत्त्व को सरलता से समझेगी और तभी यह आशंका भी दूर हो जाएगी जिससे ग्रसित होने के कारण कहीं-कहीं लोग यह समझ रहे हैं कि राष्ट्रभाषा के प्रचार से क्षेत्रीय भाषाओं का दलन होने वाला है।

अबला जीवन हाथ तेरी यही कहानी

हिंदू नारी का घर और समाज इन्हीं दो से विशेष सम्पर्क रहता है। परन्तु इन दोनों ही स्थानों में उसकी स्थिति कितनी करुण है उसके विचार मात्र से ही किसी भी सहृदय का हृदय काँपे बिना नहीं रहता। अपने पितृ गृह में उसे वैसे ही स्थान मिलता है जैसा किसी दुकान में उस वस्तु को प्राप्त होता है जिसके रखने और बेचने दोनों में ही दुकानदार हो हानि की सम्भावना रहती है। जिस घर में उसके

Notes

जीवन को ढलकर बनना पड़ता है, उसके चरित्र को एक विशेष रूप रेखा धारण करनी पड़ती है जिस पर वह शैशव का सारा स्नेह ढुलकाकर भी तृप्ति नहीं होती उसी घर में वह भिक्षुक के अतिरिक्त और कुछ नहीं है। दुःख के समय अपने आहत हृदय और शिथिल शरीर को लेकर वह उसमें विश्राम नहीं पाती, भूल के समय वह अपना लज्जित मुख उसके स्नेहांचल में नहीं छिपा सकती और आपत्ति के समय एक मुट्ठी अन्न की भी उस घर से आशा नहीं रख सकती। ऐसी ही है उसकी वह अभागी जन्म भूमि, जो जीवित रहने के अतिरिक्त और कोई अधिकार नहीं देती। पति गृह, जहाँ उस उपेक्षित प्राणी को जीवन का शेष भाग व्यतीत करना पड़ता है, अधिकार में उससे कुछ अधिक परन्तु सहानुभूति में उससे बहुत कम है इसमें सन्देह नहीं। यहाँ उसकी स्थिति पल-भर भी आशंका से रहित नहीं। यदि वह विद्वान् पति की इच्छानुकूल विदुषी नहीं तो उसका स्थान दूसरी को दिया जा सकता है। यदि वह सौंदर्योपासक पति की कल्पना के अनुरूप अप्सरा नहीं है तो उसे अपना स्थान रिक्त कर देने का आदेश दिया जा सकता है। यदि वह पति कामना का विचार करके संतान या पुत्रों की सेना नहीं दे सकती, यदि वह रुग्ण है या दोषों का नितांत अभाव होने पर भी पति की अप्रसन्ता की दोषी है तो भी उसे घर में दासत्व स्वीकार करना पड़ेगा।

कायर मन महुं एक अधारा। दैव दैव आलसी पुकारा।।

संसार में मनुष्य दो तरह के होते हैं। पहले वे जो कर्म करने में विश्वास रखते हैं — ऐसे लोगों को कर्मवीर कहा जाता है। दूसरे वे लोग जो कर्म करने से जी चुराते हैं। भाग्य के सहारे रहते हैं। जो वह देगा खा लेंगे नहीं देगा तो नहीं खाएँगे। ऐसे लोगों को कर्मभीरु कहा जाता है। जो कर्मवीर हैं वे अपने अधिकारों की भिक्षा नहीं माँगते। अपने कार्यों के बल पर उन्हें प्राप्त कर लेते हैं। जबकि कायर अपना अधिकार छीने जाने पर ईश्वर इच्छा का नाम देकर चुप बने रहते हैं। संसार में जितने भी बड़े आदमी हुए हैं उन्होंने भाग्य के भरोसे नहीं कर्म के भरोसे ही सब कुछ प्राप्त किया। बड़े बने और बड़े कहलाये। नीतिशतक में भर्तृहरि जी ने लिखा है कि उद्योग करने वाला मनुष्य पुरुष-सिंह होता है, लक्ष्मी उसी का वरन करती है। 'भाग्य देगा' या 'भाग्य में जो लिखा है, वह मिलेगा जरूर' ऐसी बात कायर कहते हैं। भाग्य को अलग रखकर परिश्रम करो। यत्न करने पर भी यदि कुछ नहीं मिलता तो इस में तुम्हारा क्या दोष है। इसके विपरीत आलसी व्यक्ति संत मलूकदास जी के निम्न वचनों का सहारा लेकर कुछ कर्म करने को तैयार नहीं होते। संत मलूक दास ने कहा था—“अजगर करे न चाकरी, पंछी करे न काम। दास मलूका कह गये, सबके दाता राम”। किन्तु आलसी लोग यह नहीं जानते कि यदि भाग्य में पास होना लिखा है तो फिर पढ़ने से क्या लाभ? अरे भई! पास होना है तो पढ़ना तो पड़ेगा ही। कर्म तो करना ही पड़ेगा। तुलसी दास जी ने भी इस सम्बन्ध में कहा है—सकल पदार्थ हैं जग माहीं। कर्महीन नर पावत नाहीं। श्रीमद्भगवद् गीता में भगवान् श्री कृष्ण ने कर्म करने और फल की चिन्ता न करने की बात इसीलिए कही है। कर्महीन (आलसी) मनुष्य का जीवन नरक समान होता है। कर्मवीर अपने को अपशब्द कहने वाले को मुँह तोड़ जवाब देता है किन्तु कर्महीन या आलसी व्यक्ति के मुँह से एक शब्द भी नहीं निकलता। इसीलिए कहा गया है कि आलस्य शरीर और आत्मा के लिए शाप है। आलस्य शरारत को पोषित करता है और अनिष्ट का प्रवर्तक है। शैतान मनुष्य को बहका सकता है परन्तु आलसी व्यक्ति पर उस का भी जादू नहीं चलता। उलटे आलसी शैतान को ही प्रलोभन देने लगता है। इसलिए ज्ञानी लोग सलाह देते हैं कि आलस्य को अपने पास फटकने न दो। आपने उसे यदि अपना आज दे दिया तो उसे आपके आने वाले कल को झटक लेने में भी देर नहीं लगेगी।

कबिरा संगति साधु की हरै और की व्याधि अथवा जैसी संगति बैठिये तैसोई फल होई अथवा सठ सुधरहिं सत्संगति पाय

मनुष्य और पशु में अन्तर करने वाली बात ज्ञानार्जन की शक्ति है। मनुष्य के पास बुद्धि का बल है पशु के पास उतना नहीं। मनुष्य की बुद्धि का विकास ज्ञान से होता है और ज्ञान सज्जन पुरुषों की संगति से प्राप्त होता है। खरबूजे को देखकर खरबूजा रंग संगति के कारण ही पकड़ता है और एक मछली सारे तालाब को गन्दा संगति के कारण ही कर देती है। इसीलिए कहा गया है कि 'जैसी संगति बैठिये तैसोई फल होई'। कोई माने न माने साधु की अर्थात् सज्जन व्यक्ति की संगति कभी-कभी मनुष्य के जीवन की धारा ही बदल देती है। कोई व्यक्ति किसी साधु महात्मा को कत्ल करने के लिए छुरा लेकर वहाँ गया, किन्तु वहाँ पहुँचते ही उसने छुरे को उनके चरणों में रखकर उनसे न केवल क्षमा मांगी अपितु उनका अनन्य भक्त भी हो गया। इस उदाहरण से यह स्पष्ट है कि सज्जन व्यक्तियों की संगति से व्यक्ति में अच्छे गुणों का उदय होता है, उसके दुर्गुण नष्ट हो जाते हैं। जीवन में उसे सुख शान्ति प्राप्त होती है। समाज में उसकी प्रतिष्ठा होती है। कबीर जी ने इसीलिए कहा है कि 'कविरा संगति साधु की हरै और की व्याधि। ओच्छी संगति नीच की, आठों पहर उपाधि।' इसी कारण कहा गया है कि मनुष्य अपनी संगति से पहचाना जाता है। बुरी संगति करने वाला अच्छा व्यक्ति भी बुरा ही समझा जाता है। गोस्वामी तुलसीदास जी ने ठीक ही लिखा है कि 'बिन संगति विवेक न होई' अर्थात् बिना सत्संगति के मनुष्य को ज्ञान प्राप्त नहीं होता। ज्ञान प्राप्त करके 'इह लोक और परलोक सुधार सकता है।' धन प्राप्त करके नहीं जैसा कि आम लोग समझते हैं। धन सम्पत्ति तो मनुष्य की यहीं रह जाएगी, साथ जाएगा तो उसका यश, उसके सत्कर्म जिन्हें वह एक मात्र सत्संगति से प्राप्त कर सकता है। जिन लोगों को सज्जन पुरुषों की, साधुजनों की संगति करने का अवसर नहीं मिलता है (आज के युग में सज्जन और साधु पुरुष रह ही कितने गए हैं) वे लोग अच्छी पुस्तकों की संगति करके भी सत्संगति का लाभ उठा सकते हैं। सत्संगति का यह एक सरल सूत्र है। इस से हींग लगे न फटकरी और रंग भी चोखा आए वाली बात सत्य सिद्ध हो जाती है। पुस्तकें भी हमें ज्ञान देती हैं। इसीलिए कहा गया है 'ज्ञान काटे ज्ञान से मूरख काटे रोय'। हमने सत्संगति के प्रभाव से चोर डाकू को साधु बनते देखा है और कुसंगति के प्रभाव से सदा कक्षा में प्रथम आने वाले विद्यार्थी को फेल होते भी देखा है। इसीलिए विशेषकर विद्यार्थी जीवन में कुसंगति से बचने का उपदेश दिया गया है। कुसंगति में, बुरी बातों में रस तो मिलता है पर वह क्षणिक ही होता है जबकि सत्संगति का प्रभाव चिरस्थायी होता है। काजल की कोठरी में जाओगे तो कालिख लगेगी ही। इसलिए कालिख से बचने के लिए हमें स्वयं ही उपाय सोचने हैं। हमारा स्वार्थ भी इसी में है। किसी उपदेश से मन में ऐसी भावना नहीं जागती। मार कर जय नहीं करवाई जा सकती। जय करने की भावना हमारे मन से उठनी चाहिए। सत्संगति के फल पर, परिणाम पर आप को स्वयं ही सोचना है और निर्णय लेना है।

सांस्कृतिक कार्यक्रम कितने असांस्कृतिक

आज हमारे देश में सांस्कृतिक कार्यक्रमों की सर्वत्र धूम है। पंजाब में सभ्याचारक मेलों के नाम पर ऐसे कार्यक्रम सरकार द्वारा भी जगह-जगह करवाये जा रहे हैं। इन सांस्कृतिक कार्यक्रमों में लचरपने को देखकर हमारा सिर शर्म से झुक जाता है और हम यह सोचने पर विवश हो जाते हैं कि क्या यही हमारी संस्कृति है जिसके बूते पर हम संसार का गुरु होने का दावा सदियों तक करते रहे हैं। आज किसी शिक्षण संस्था को देखिए, किसी राष्ट्रीय पर्व में शामिल होइए या किसी विदेशी अतिथि के स्वागत समारोह में जाइए – आपको सर्वत्र पायलों की झंकार और नुपुलों की मधुर रुनझुन सुनाई देगी।

Notes

आज प्राइमरी स्कूलों के नन्हें-मुन्ने बालक-बालिकाओं से लेकर विश्वविद्यालयों के विकसित मस्तिष्क वाले युवक-युवतियां भी इन तथाकथित सांस्कृतिक कार्यक्रमों में मग्न दिखाई दे रहे हैं। प्रश्न उठता है कि हमारे देश की संस्कृति केवल नृत्य, गीत, राग-रस तक ही सीमित रह गयी है। संस्कृति के उदात्त तत्त्व को केवल संगीत और अभिनय तक ही सीमित कर देना कहाँ का न्याय है? हमारे देश के विद्यालयों के अधिकांश छात्रों का पर्याप्त समय इन कार्यक्रमों की तैयारी में ही नष्ट हो जाता है। आज 15 अगस्त है तो कल 26 जनवरी। आज युवक समारोह (Youth Festival) है तो कल कुछ और। छात्रों को शिक्षा और उनके चरित्र के विषय में कुछ भी अवगत न कराया जाए परन्तु एक रसिक आयोजन अवश्य होगा। इन आयोजनों की तैयारी में छात्रों का अमूल्य समय और उससे भी मूल्यवान चरित्र कितना नष्ट होता है, इसकी ओर किसी का ध्यान ही नहीं है। आज विदेशी अतिथि आते हैं, हमारी सभ्यता, विचारधारा और जीवन निर्वाह के साधन देखने के लिए, परन्तु हम भारत की वास्तविकता दिखाने की अपेक्षा 'कल्चरल प्रोग्राम' के नाम पर उन्हें दिखाते हैं अपनी जवान बहिन-बेटियों का नाच? क्या हमारे पास कोई अच्छी वस्तु दिखाने को नहीं है। क्या हम उन्हें अरविन्द आश्रम, शान्ति-निकेतन और गुरुकुलों की सैर नहीं करा सकते? जो लोग इन नाचों को कराते हैं, चाहे वे माता-पिता हों या शिक्षक हों या सरकारी अधिकारी हों अथवा मन्त्री हों वे अवश्य ही पापों को प्रोत्साहन देने वाले हैं। हम शिक्षकों और शिक्षिकाओं से निवेदन करते हैं कि कृपया वे बालिकाओं को नाचना न सिखायें और उनका जीवन विलासिताप्रिय न बनाएं। प्रसिद्ध आचार्य श्री क्षति मोहन सेन ने ठीक ही कहा था कि – 'मुझे तो ऐसा लगता है कि हम लोग संस्कृति शब्द का अर्थ ही भूल गये हैं।'

स्व:मूल्यांकन

निम्न कथनों में से सत्य और असत्य बताएँ:

1. अनुच्छेद लेखन से मौलिक सूझ-बूझ, कल्पना शक्ति, स्मरण शक्ति का विकास नहीं होता।
2. अनुच्छेद लेखन में भाषा की स्पष्टता, सरलता, शुद्धता आवश्यक होती है।
3. अनुच्छेद लेखन में अनावश्यक वाक्यों का कोई स्थान नहीं होता।

4.3 सारांश (Summary)

- किसी एक भाव विचार को व्यक्त करने के लिए लिखे गए संबद्ध और लघु वाक्य समूह को अनुच्छेद लेखन कहते हैं। एक विषय पर विचारों को इस तरह प्रकट किया जाता है कि सभी वाक्य एक दूसरे से बँधे होते हैं।
- अनुच्छेद लेखन में विचारों को एक क्रम में रखा जाता है उनका आरम्भ, मध्य और अन्त आसानी से व्यक्त हो जाता है।
- अनुच्छेद के वाक्य-समूह में उद्देश्य की एकता रहती है। अप्रासंगिक बातों को हटा दिया जाता है।
- अनुच्छेद के विषय निजी अनुभव या कथन, विशेष घटना, महापुरुष के कथन, किसी मुहावरे या विचारात्मक विषय से संबंधित होते हैं।

- अनुच्छेद लेखन से लेखक की मौलिक सूझ-बूझ, कल्पना शक्ति, स्मरण शक्ति का विकास होता है।
- अनुच्छेद एक स्वतंत्र और पूर्ण रचना है, जिसका कोई भी वाक्य अनावश्यक नहीं होता।

4.4 शब्दकोश (Keywords)

अवलंबित: आश्रित, लटकाया हुआ।

अनावश्यक: जो जरूरी न हो।

संबद्ध: सम्बंधित।

4.5 अभ्यास प्रश्न (Review Questions)

1. अनुच्छेद लेखन का अर्थ और परिभाषा बताईए।
2. अनुच्छेद लेखन का उद्देश्य और विशेषताएं लिखते हुए उसके भेदों का वर्णन करें।
3. निम्न विषयों पर अनुच्छेद लिखें:
 - (क) आत्मसम्मान
 - (ख) सूर्योदय का दृश्य
 - (ग) परीक्षा भवन का दृश्य
 - (घ) मेरे जीवन की अविस्मरणीय घटना
 - (ङ) शिक्षा और नारी जागरण।

उत्तर: स्व:मूल्यांकन

1. असत्य
2. सत्य
3. सत्य

4.6 संदर्भ पुस्तकें (Further Readings)



Books

व्याकरण भारती – प्रो. सुरेन्द्र कुमार झा, डॉ. अनुपमा सेठ, एच जी पब्लिकेशंस, दिल्ली।

आधुनिक हिंदी व्याकरण एवं रचना – डॉ. वासुदेव नंदन प्रसाद, भारती भवन, पटना।

इकाई 5: विज्ञापन लेखन

अनुक्रमणिका (CONTENTS)

उद्देश्य (Objectives)

प्रस्तावना (Introduction)

5.1 विज्ञापन लेखन

5.1.1 विज्ञापन: अर्थ एवं परिभाषा

5.1.2 विज्ञापन का उद्देश्य

5.1.3 विज्ञापन के प्रकार

5.1.4 विज्ञापन का वर्गीकरण

5.1.5 विज्ञापन के मुख्य तत्व

5.2 सारांश (Summary)

5.3 शब्दकोश (Keywords)

5.4 अभ्यास प्रश्न (Review Questions)

5.5 संदर्भ पुस्तकें (Further Readings)

उद्देश्य (Objectives)

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी:

- विज्ञापन लेखन का अर्थ और परिभाषा को समझ सकेंगे।
- विज्ञापन लेखन का उद्देश्य, प्रकार एवं तत्वों की जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।

प्रस्तावना (Introduction)

विज्ञापन वाणिज्यिक, व्यावसायिक या किसी भी संस्था के प्रति जनमत तैयार करने का प्रतिष्ठित माध्यम है। विज्ञापन उतना ही पुराना है जितना की वाणिज्य। आदान-प्रदान या वस्तु विनिमय के दौर से ही विज्ञापन का प्रयोग वस्तु विशेषों की तरफ ध्यान आकर्षित करवाने, ग्राहकीयता तथा बिक्री बढ़ाने के कार्य के लिए होता आ रहा है। चिन्ह, प्रतीक, ढिंढोरा आदि के शुरूआती दौर से बहुत आगे बढ़ते हुए आज विज्ञापन एक पूर्ण विकसित उद्योग के रूप में उभरा है। यह व्यावसायिक एवं औद्योगिक क्षेत्रों में उनके निरन्तर उत्पाद सम्बन्धी मांग वृद्धि एवं नवीन उत्पाद को उपभोक्ताओं तक पहुँचाने, विक्रय में वृद्धि करने तथा प्रतिष्ठान के प्रति उपभोक्ताओं या जनता में रुचि एवं विश्वास पैदा करने में सहायक होता है।

5.1 विज्ञापन लेखन

किसी वस्तु के प्रति लोगों का ध्यान आकर्षित करने के लिए और बिक्री बढ़ाने के लिए विज्ञापन बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। वस्तु या सेवा की खरीद के लिए उत्सुकता जगाना या प्रसारित विचार के प्रति सहमति पैदा करना, विज्ञापन का प्रमुख लक्ष्य है। विज्ञापन में जितना महत्व विज्ञापन सामग्री का होता है उतना ही महत्व उसकी भाषा का भी होता है। उसकी भाषा में आकर्षण, स्मरणीयता, विक्रयशीलता, श्रव्य या पठनीयता आदि गुण होने चाहिए। इसमें प्रतिलेखन शब्दों के साथ खेलना है, परन्तु उपयुक्त शब्द में सुनियोजिता, संयोजन तथा वाक्यों की मोहक संरचना शामिल होती है। इसके लिए विशेष रणनीति, अभियोजना, अभिकल्पना तथा कठिन परिश्रम की आवश्यकता होती है।

5.1.1 विज्ञापन: अर्थ एवं परिभाषा

विज्ञापन या एडवर्टाइजिंग की उत्पत्ति लैटिन भाषा के शब्द 'एडवर्टर' से हुई है। जिसका अर्थ है— 'टू टर्न टू' अर्थात् किसी ओर मुड़ना है। हिन्दी में विज्ञापन का अर्थ है — वि + ज्ञापन = विशेष + सूचना अर्थात् विशेष सूचना देना। किसी वस्तु के लिए इसके प्रयोग का अर्थ है लोगों का ध्यान आकृष्ट करना। इसी सन्दर्भ में राष्ट्रीय विज्ञापनदाता एवं प्रकाशक सूचना आदि के अनुसार विज्ञापन का अर्थ है — विज्ञापन उत्पाद या सेवा की सीधी बिक्री से आगे उद्देश्य पूर्ति के लिए किए गए समवेत प्रयासों के रूप पर आधारित है।

एस. आर. हाल के अनुसार "विज्ञापन लिखित, मुद्रित या चित्रित विक्रय कला है अथवा लिखित एवं मुद्रित शब्दों के माध्यम से सूचना का प्रसारण है।"

लस्कर का मत है "विज्ञापन मुद्रण के रूप में विक्रय कला है।"

ब्रिटेनिका विश्वकोष के अनुसार "विज्ञापन विज्ञापक द्वारा इच्छित भुगतान प्रदत्त वह घोषणा है जो किसी वस्तु या सेवा की बिक्री प्रोत्साहन, किसी विचार के विकास अथवा कोई अन्य प्रभाव उत्पन्न करने के उद्देश्य से की गई हो।"

विज्ञापन आज प्रसार एवं प्रचार का एक सर्वव्यापी एवं शक्तिमान साधन बन चुका है। आज समकालीन समाज का भी अटूट अंग बन चुका है। सारे जनसंचार माध्यमों (समाचार पत्रों से लेकर इन्टरनेट तक) की मुख्य आमदनी विज्ञापन से ही होती है।

ब्रिटेन की एक मुख्य संस्था (Institution of Practitioners in Advertising) IPA के अनुसार "विज्ञापन व्यवसाय एवं कला का मोहक एवं चित्ताकर्षक सम्मिलित रूप है। इसमें योजनाकार, परक्रामक, प्रतिलेखक, चित्रकार, विज्ञापन निर्माण विशेषज्ञ तथा संयोजक एवं प्रबन्धक आदि समूह रूप में संगत, प्रासंगिक एवं उपयुक्त विज्ञापन का निर्माण करके विज्ञापक के व्यावसायिक लक्ष्य साधन में सहायता करते हैं।"

विज्ञापन के अन्तर्गत उन समस्त कार्यवाहियों का समावेश होता है जिनका उद्देश्य अपने खर्च पर निर्वैयक्तिक भाव रूप से किसी विचार, वस्तु या सेवा के विषय में जानकारी प्रसारित करना हो, जिससे प्रस्तुतकर्ता की इच्छा के अनुसार व्यक्ति कार्यवाही करने को मनशः बाध्य हो जाए। इस जानकारी के प्रचार-प्रसार का उद्देश्य होता है ग्राहकों को प्रभावित करना। इस प्रकार जानकारी का यह प्रसारण निर्वैयक्तिक होता है क्योंकि वह एक व्यक्ति को ध्यान में रखकर नहीं बल्कि व्यक्ति समूह को ध्यान में रखकर प्रसारित की जाती है।

Notes



Notes विज्ञापन का उद्देश्य वस्तु या सेवा की खरीद के लिए उत्सुकता जगाना है। ये सहमति या खरीद विज्ञापन के अनुसार होती है।

5.1.2 विज्ञापन का उद्देश्य

विज्ञापन, प्रोत्साहन एवं प्रचार का ही रूप है जो किसी न किसी स्तर पर एक दूसरे के परिपूरक होते हैं, पर एक दूसरे के स्थानापन्न नहीं होते हैं। क्योंकि उत्पाद के विज्ञापन और उसके बिक्री प्रोत्साहन कला में अन्तर होता है। जहाँ बिक्री प्रोत्साहन में प्रदर्शन (Exhibition), सजावट (Decoration), दिखावट (Show) तथा प्रचार (Publicity) सम्मिलित है वहीं विज्ञापन केवल वस्तु या उत्पाद की बिक्री प्रोत्साहन का एक अंग होता है। विज्ञापन के विभिन्न प्रेरक तत्वों में उत्पाद को उपभोक्ता तक पहुँचाने की चिन्ता सर्वप्रमुख होती है। अतः व्यावसायिक क्षेत्र में विज्ञापन का मूल उद्देश्य उत्पादित माल के साथ-साथ जनमत निर्माण की प्रक्रिया को सुस्थिरता प्रदान करना होता है।

औद्योगिक या व्यवसाय की प्रगति का अनिवार्य परिणाम विज्ञापन है। विज्ञापन ही ग्राहकों को सन्तुष्ट करने का काम करता है। प्रतिस्पर्धा को खत्म कर उसकी ख्याति में वृद्धि करता है। इस प्रकार सामाजिक विकास में ही विज्ञापन के उद्देश्य की पूर्ति होती है क्योंकि उपभोक्ता समाज की आवश्यकताओं एवं आकांक्षाओं की पूर्ति में सामाजिक स्पर्धा जगाने का काम विज्ञापन करता है तथा जनता की दृष्टि को अपनी ओर आकृष्ट करता है। विज्ञापन के उद्देश्य निम्नलिखित हैं—

1. **विश्वसनीयता जगाना:** विज्ञापन का मूल उद्देश्य विक्रय कला में वृद्धि करना होता है परन्तु इसे दीर्घ-कालिक स्वरूप देने के लिए उत्पाद एवं संस्था के प्रति विश्वास उत्पन्न करना आवश्यक होता है। बिना विश्वास के उपभोक्ता क्रय नहीं करेगा। इसलिए विज्ञापन का अप्रत्यक्ष रूप से सबसे महत्वपूर्ण उद्देश्य विश्वसनीयता जगाना ही है।
2. **परिचय देना:** विज्ञापन ही नवनिर्मित वस्तुओं की सूचना उपभोक्ता को देता है क्योंकि इसके बाद ही उपभोक्ता उस उत्पाद विशेष में अपनी रुचि लेता है। अतः विज्ञापन का प्राथमिक उद्देश्य उपभोक्ता एवं उत्पाद के बीच सम्बन्ध स्थापित करना है।
3. **बिक्री वृद्धि:** विज्ञापन का एक उद्देश्य उत्पाद वस्तु की बिक्री में वृद्धि करना भी है। उसके बाकी सभी उद्देश्य की अन्तः परिणति बिक्री में वृद्धि की होती है।
4. **ध्यानाकर्षण करना:** उपभोक्ता पर मनोवैज्ञानिक दबाव डालने के लिए विज्ञापन माध्यमों द्वारा अपने उत्पाद का बार-बार प्रचार किया जाता है जिससे उपभोक्ता का ध्यान उस वस्तु की ओर आकर्षित हो। इस प्रक्रिया में डिस्पले या सजावटी विज्ञापन का खासा महत्त्व होता है।
5. **छवि निर्माण:** प्रत्येक उत्पाद या संस्था के प्रति दीर्घकालिक विश्वसनीयता का अगला चरण है छवि निर्माण। यह कार्य बड़ा दुरुह है परन्तु यदि एक बार छवि निर्माण हो जाती है तो इसके परिणाम काफी सुखद होते हैं। ब्रांडेड कम्पनी के नए उत्पाद उपभोक्ता बगैर किसी सोच-विचार के इस्तेमाल कर लेते हैं। इस प्रकार विज्ञापन का एक मुख्य उद्देश्य पुख्ता छवि निर्माण भी है।

स्पष्ट है कि विज्ञापन के प्रकाशन से संस्थान अपने उत्पाद का मात्र प्रचार ही नहीं करता अपितु अपनी नीतियों के अनुरूप एक ऐसा व्यवहार पैदा करता है जो उपभोक्ताओं में संस्थान की प्रतिष्ठा गहरी करता है। इसी से उसकी छवि निर्माण में वह सहयोगी बनता है। विज्ञापन के मुख्य लक्ष्य की प्राप्ति

के लिए जिन विभिन्न रूपों को अपनाया जाता है वास्तव में वही विज्ञापन के माध्यम हैं। विज्ञापन ही सम्प्रेषण का ऐसा सटीक माध्यम है जो मितव्ययी रूप में जनसम्पर्क का सन्देश असंख्य पाठकों, दर्शकों, श्रोताओं तक पहुँचाता है। विज्ञापन ही किसी प्रतिष्ठान की रीति-नीति, उद्देश्य, विचारधारा और उसकी मानक सम्बन्धी सूचनाओं द्वारा जनता को उत्पाद वस्तु की सूचना देता है उसे प्रभावित करता है तथा प्रतिष्ठान की समर्थता, कार्यक्षमता के सम्बन्ध में उचित जन समर्थन प्राप्त करने तथा उसके लिए धन राशि लगाये जाने के प्रति आर्थिक विश्वसनीयता निर्मित करता है।

5.1.3 विज्ञापन के प्रकार

आज बाजार में छोटे-बड़े एवं मध्यम आदि विभिन्न वर्ग एवं प्रकार के विज्ञापन हैं। अनेक प्रकार के वस्तु विशेष (उत्पाद, सेवा, विचारधारा, स्थान, घटना, राजनीतिक दल, उम्मीदवार) विज्ञापित होते हैं। सूचना प्रदान करना, ब्रांड नाम दर्ज करना, ब्रांड की छवि बनाना, ब्रांड के प्रति निष्ठता एवं वफादारी उत्पन्न करना आदि अनेक उद्देश्यों के लिए विज्ञापन किये जाते हैं। इन्हीं कारणवश विज्ञापन के विभिन्न प्रकार होते हैं—

1. **प्रत्यक्ष डाक विज्ञापन:** यह एक ऐसा माध्यम है जिससे उपभोक्ता तक प्रत्यक्ष रूप से पहुँचा जा सकता है। इसके माध्यम से इच्छित व्यक्ति या व्यक्ति समूह तक पहुँचना आसान हो जाता है। इसमें विज्ञापित वस्तु की अधिक विस्तार से जानकारी दी जा सकती है। इसके साथ ही आर्डर फार्म, डाक-शुल्क लगा हुआ लिफाफा भेज कर उपभोक्ता को त्वरित कार्यवाई करने के लिए प्रेरित किया जा सकता है।

इस माध्यम को अपनाने से एक छोटे और सीमित वर्ग तक ही अपने उत्पाद की जानकारी पहुँचाई जा सकती है। इसके लिए ग्राहकों के सही नाम-पत्तों की जानकारी भी आवश्यक होती है। विज्ञापन सामग्री-निर्माण भी विशेष रूप से तैयार करनी होती है। इसमें प्रयास और राशि दोनों का खर्च अधिक होता है। अतः इस माध्यम से अपने लक्षित ग्राहकों को मुद्रिक सामग्री भेजकर उत्पाद विचार के विषय में जानकारी दी जाती है और विक्रय क्षमता का भी विकास किया जाता है।

2. **व्यावसायिक पत्रिकाओं का प्रकाशन:** पेशेवर विज्ञापन व्यावसायिक विज्ञापन का वह प्रकार है जो डाक्टर, इंजीनियर, शिक्षक, वकील, कृषक, वास्तुकार आदि के लिए होता है। उत्पाद कम्पनियों द्वारा व्यवसायिक पत्रिकाओं में प्रकाशित होते हैं। उत्पाद कम्पनियों द्वारा व्यवसायिक पत्रिकाओं का स्वयं प्रकाशन इसमें किया जाता है या विशिष्ट विषयों की व्यावसायिक पत्रिकाओं के माध्यम से। इस तरह के प्रकाशन से दीर्घकालिक छवि का निर्माण हो सकता है। प्रति इकाई कम खर्च पर राष्ट्रव्यापी वर्ग-विशेष तक इस माध्यम से पहुँचा जा सकता है।

इस विज्ञापन का लाभ तभी हो सकता है जब वस्तु या उत्पाद या सेवा की खपत राष्ट्रव्यापी स्तर पर हो और इसके लिए नियमित स्पष्ट बजट हो। इस माध्यम से विशेष उपभोक्ता वर्ग पर तत्कालिक प्रभाव कमजोर ही रहता है।

3. **प्रेस विज्ञापन:** यह माध्यम सबसे महत्वपूर्ण माध्यम होता है। जिससे जनता के साधन समूह तक पहुँचना संभव हो जाता है। इसके अन्तर्गत दैनिक, साप्ताहिक, मासिक, समाचार-पत्र एवं पत्रिकाएँ आदि आते हैं। इससे ना केवल सन्देश जनता तक पहुँचता है बल्कि उनकी अभिरुचि और प्रतिक्रिया के मद्देनजर फीडबैक तैयार करने का कार्य भी होता है। इसका क्षेत्रीय प्रचार-प्रसार भी संभव होता है।

Notes

समाचार पत्रों का जीवन काल मात्र एक दिन का होता है अतः इस प्रकार के विज्ञापनों को बार-बार प्रसारित करना होता है। समाचार-पत्रों की व्यापक पहुँच, वर्ग-विशेष को लक्षित करने वाले विज्ञापनों हेतु भी फायदेमंद नहीं होता है।

4. **प्रसारण विज्ञापन:** यह विज्ञापन राष्ट्रव्यापी परिप्रेक्ष्य में प्रसारित हो सकते हैं। इसके अन्तर्गत रेडियो तथा टेलीविजन का प्रयोग आता है। यह माध्यम विज्ञापन का सबसे उपयोगी माध्यम माना जाता है। इस प्रकार के विज्ञापनों में आम प्रचलन की सारी वस्तु, सेवा एवं विचारधाराओं को आम उपभोक्ताओं के सामने प्रस्तुत किया जाता है।

रेडियो विज्ञापन में केवल सुनने और न दिखने की वजह से स्मृति के स्तर पर कठिनाई उत्पन्न हो सकती है। इस आधार पर टेलीविजन विज्ञापन सबसे प्रभावकारी साधन हो सकता है। इस माध्यम में प्रस्तुतीकरण, नाटकीयता एवं संगीतात्मकता का उपयोग कर विज्ञापन मनोवैज्ञानिक रूप से उपभोक्ता के दिलो-दिमाग में घर कर देने के रूप में इसकी महत्ता बेजोड़ है। इसके बार-बार प्रसारण से उपभोक्ता इसे उपयोग करे बिना नहीं रह पाता है। परन्तु यह माध्यम काफी महंगा है। साथ ही इसके प्रसारण के तत्वों जैसे—भाषा, विचार, रूप के संबंध में काफी सावधानी बरतनी पड़ती है। छोटी सी गलती काफी हानिकारक असर डालती है।

5. **बाह्य विज्ञापन:** यह माध्यम सबसे प्राचीन माध्यम है। इसके अन्तर्गत बाह्य या सचल विज्ञापन संस्थागत या जन सेवा सन्देश के रूप में आम जनता तक पहुँच जाता है। इस माध्यम से घरों की बाहरी दीवार, सार्वजनिक स्थल, सड़क के पास वाले हिस्से, चौराहों के पास वाली दीवारें, पुल के नीचे, बस स्टैंड आदि वाले हिस्से का इस्तेमाल होता है। इस प्रकार के माध्यम में पोस्टर, बैनर, होर्डिंग, एवं स्टिकर्स आदि का प्रयोग होता है। इस माध्यम से इन सन्देशों और विचारों की महत्ता अधिक होती है क्योंकि इनका आकर्षण त्वरित रूप से प्रभाव उत्पन्न करने वाला होना आवश्यक है।



Task

विज्ञापन लेखन का अर्थ बताते हुए उसके प्रकारों का वर्णन करें।

अन्य विज्ञापन: साइनबोर्ड का प्रदर्शन रेलवे स्टेशनों, बस स्टैंड सहित अन्य सार्वजनिक स्थलों पर विज्ञापन के माध्यम के रूप में प्रयोग किया जाता है। इसके अलावा लेजर बैगों के सहारे भी विज्ञापन का प्रसार प्रयोग में लाया जाता है।

5.1.4 विज्ञापन का वर्गीकरण

विज्ञापन का वर्गीकरण कई आधारभूत तत्वों पर निर्भर करता है। सर्वप्रथम इसमें उद्देश्य के आधार पर विज्ञापन का वर्गीकरण होता है। इसके अतिरिक्त निश्चित पाठक, श्रोता, दर्शक वर्ग के आधार पर, भौगोलिक क्षेत्र के आधार पर और प्रयुक्त विज्ञापन माध्यम के आधार पर विज्ञापन का वर्गीकरण किया जाता है।

उद्देश्य के आधार पर वर्गीकरण

विभिन्न प्रकार के विज्ञापक विभिन्न उद्देश्यों को लेकर विज्ञापन प्रसारित करते हैं। विज्ञापकों के इन उद्देश्यों के अनुसार विज्ञापन का वर्गीकरण किया जा सकता है।

1. **वस्तुओं और सेवाओं के विज्ञापन:** इस तरह के विज्ञापन किसी वस्तु या सेवा की प्रतिष्ठा या बिक्री आदि बढ़ाने के लिए जारी किए जाते हैं। वस्तु, सेवा आदि के आकार, गुणों, मूल्य, विक्रेताओं आदि की जानकारी देने के साथ-साथ ग्राहकों को प्रेरित करने का भी प्रयास होता है। इन विज्ञापनों का काम ब्राण्ड नाम की पहचान बनाना होता है। जिससे बिक्री क्षमता बढ़े। इस तरह के विज्ञापन प्रतिस्पर्धात्मक होते हैं।
2. **सम्मानक विज्ञापन:** सम्मानक विज्ञापन किसी संस्था की प्रतिष्ठा या छवि निर्माण कर जनमत तैयार करने के उद्देश्य से जारी किये जाते हैं। यह माध्यमों में कठिन श्रृंखला के माने जाते हैं क्योंकि इनका उद्देश्य जटिल एवं अप्रत्यक्ष प्रभाव वाला होता है। लोकतांत्रिक व्यवस्था में इस प्रकार के विज्ञापनों का विशेष महत्त्व है।

संसदीय विधानसभा या अन्य प्रकार के चुनावों में चुनावी घोषणापत्र द्वारा जनता का विश्वास अर्जित करने का प्रयास इसके अन्तर्गत आता है।

संस्थागत विज्ञापन

ये संस्थाएं अन्तर्राष्ट्रीय तथा राष्ट्रीय विज्ञापन के सहारे अपनी वस्तु एवं सेवाओं को बढ़ावा देने का प्रयास करती हैं। इसके अन्तर्गत टाइम्स, न्यूज वीक, रीडरस् डाइजेस्ट आदि पत्रिकाएं तथा सारे मुख्य अन्तर्राष्ट्रीय टी.वी. चैनलों का प्रयोग किया जाता है। इसके कई प्रकार हो सकते हैं—

1. **राष्ट्रहित सम्बन्धी विज्ञापन:** इसमें राष्ट्रहित में किये जाने वाले कार्यों की सूचना देकर जनता का अभिमत तैयार करने का प्रयास किया जाता है। राष्ट्रीयकृत बैंक, बीमा कम्पनियाँ तथा तेल एवं शिपिंग कम्पनियाँ इस तरह के विज्ञापन देती हैं।
2. **जनकल्याण सम्बन्धी विज्ञापन:** नगरनिगम, पंचायत एवं अन्य कल्याणकारी संस्थाएँ जनकल्याण विषयक विज्ञापन प्रसारित करके जनता को समय-समय पर शिक्षित करने का कार्य करती हैं।
3. **चेतना सम्बन्धी विज्ञापन:** पर्यावरण, जन स्वास्थ्य आदि के विज्ञापनों का प्रसार कई औद्योगिक प्रतिष्ठान तथा राष्ट्रीय अन्तर्राष्ट्रीय संस्थाओं द्वारा किया जाता है।

5.1.5 विज्ञापन के मुख्य तत्व

विज्ञापन के मुख्य तत्वों का विवरण निम्नांकित है—

1. **ध्यानाकर्षण:** विज्ञापन व्यावहारिक रूप में एक महत्त्वपूर्ण कला है जिसके लिए ध्यानाकर्षण आवश्यक है। इसके लिए स्थान, प्रस्तुति, सजावट, तुलनात्मक स्पर्धा आदि सभी को ध्यान में रखा जाता है। इसके अन्तर्गत मनोवैज्ञानिक आधार पर उपभोक्ता का ध्यान आकृष्ट करने का प्रयास भी किया जाता है। शब्दों के चमत्कार और भाषिक योजना से इसे संभव बनाया जाता है।
2. **रुचि सम्प्रेषण:** उपभोक्ता की रुचि का निर्माण करना विज्ञापन का विशेष कार्य होता है। इसके माध्यम से उपभोक्ताओं की रुचि के अनुसार प्रचार किया जाता है। उपहार वितरण द्वारा भी नए उत्पाद के प्रति रुचि उत्पन्न करने का प्रयत्न किया जाता है। सजावटी विज्ञापन इसमें अधिक रुचिकर होते हैं।

Notes

3. **संतुष्टि सृजन:** विज्ञापन को दीर्घकालिक रूप प्रदान करने हेतु संतुष्टि सृजन आवश्यक होता है। इसके लिए उपभोक्ता के मन में उचित रख-रखाव, उपलब्धता एवं स्वच्छता अथवा उपयोगिता के विषय में विश्वास जगाना आवश्यक होता है।
4. **इच्छा सृजन:** यह विज्ञापन का मनोवैज्ञानिक सम्प्रेषण रूप है इसी के आधार पर उपभोक्ता उत्पाद वस्तु को इस्तेमाल करने के लिए तैयार हो जाते हैं। विज्ञापन के आकर्षण एवं 'कैची' स्वरूप को बार-बार प्रस्तुत करने से ऐसी स्थिति उत्पन्न की जाती है।
5. **प्रेरक प्रतिक्रिया:** विज्ञापन की भाषा का उपयुक्त प्रयोग कर सन्देश से प्रेरक प्रतिक्रिया उत्पन्न की जाती है। उपभोक्ता की रुचि, मनोविज्ञान को दृष्टि में रखकर ही इसका प्रस्तुतीकरण होता है। इसमें वस्तु नापसंद आने पर पैसा वापस या सामान बदल देने जैसे विशेष ऑफर भी दिये जाते हैं।
6. **विज्ञापन में रचनात्मकता:** रचनात्मकता से तात्पर्य किसी चीज़ की रचना या सृजन से है। किन्तु विज्ञापन के क्षेत्र में रचनात्मकता का संबंध आत्माभिव्यक्ति से नहीं है। यह सुनियोजित, सुव्यवस्थित होती है। विज्ञापन में रचनात्मकता एक निश्चित लक्ष्य को लेकर कार्य करना है जैसे सूचना प्रदान करना, जागरूकता बढ़ाना, छवि बनाना, बिक्री क्षमता बढ़ाना।

स्व:मूल्यांकन

रिक्त स्थान भरें:

1. विज्ञापन शब्द की उत्पत्ति लैटिन भाषा के शब्द से हुई है।
2. विज्ञापन के प्रकार प्रेस विज्ञापन और हैं।
3. विज्ञापन के मुख्य तत्व और हैं।

5.2 सारांश (Summary)

- सभी विज्ञापन सूचना की आधार शिला पर खड़े होते हैं। प्रत्येक विज्ञापन का पहला एवं मूलभूत काम है सूचना देना या कोई तर्क प्रस्तुत करना या कोई प्रभाव स्थापित करना। विज्ञापन संचार प्रभावी एवं द्रुत होना चाहिए और उसका अर्थ लोगों की समझ में आसानी से आना चाहिए। इसमें जानकारी सही होने के साथ-साथ तार्किक भी होनी चाहिए।
- विज्ञापन का उद्देश्य साफ होता है – वस्तु या सेवा की खरीद के लिए उत्सुकता जगाना या प्रसारित विचार के प्रति सहमति अर्जित करना। यह सहमति और खरीद विज्ञापक के अनुसार ही होनी चाहिए।
- विज्ञापन-वस्तु, सेवा बेचने का एक निर्व्यक्तिक एवं सशक्त माध्यम है जिसमें एक साथ ही बहुत से लोगों तक अपनी बात पहुँचाने का प्रयास किया जाता है।
- प्रचार और विज्ञापन का घनिष्ठ सम्बन्ध होता है। विज्ञापन प्रचार का ऐसा साधन है जो बिना किसी राजनैतिक और धार्मिक अथवा साम्प्रदायिक दबावों के जनता या उपभोक्ता में अपने लिए आवश्यकता उत्पन्न करता है और अपनी उत्तमता एवं उपयोगिता दुहराकर उपभोक्ता की क्रय

सामर्थ्य की सीमाओं को विकसित करता है जिससे उपभोक्ता वस्तु को प्रयोग करने के लिए बाध्य हो जाता है।

- विज्ञापन का उद्देश्य अपने उत्पादों की विशेषताओं की ओर ग्राहकों को आकृष्ट करना और अपनी मत पुष्टि के लिए आवश्यक वातावरण तैयार करना है।

5.3 शब्दकोश (Keywords)

विज्ञापन: विशेष सूचना देना।

वाणिज्यिक: व्यापार से सम्बन्धित।

5.4 अभ्यास प्रश्न (Review Questions)

1. विज्ञापन लेखन का अर्थ और उसके उद्देश्य को स्पष्ट करें।
2. विज्ञापन लेखन कितनी प्रकार के होते हैं? स्पष्ट करें।
3. विज्ञापन लेखन के तत्वों की सविस्तार जानकारी दें।

उत्तर: स्व:मूल्यांकन

1. एडवर्टर
2. प्रसारण विज्ञापन, बाह्य विज्ञापन
3. इच्छा सृजन, रुचि सम्प्रेषण

5.5 संदर्भ पुस्तकें (Further Readings)



Books

हिन्दी भाषा शिक्षण — मुकेश अग्रवाल, तरुण प्रकाशन।

जनसंचार एवं पत्रकारिता — डॉ. प्रभात रंजन।

हिन्दी भाषा का विकास एवं व्यावहारिक प्रयोजन/मुकेश अग्रवाल, तरुण प्रकाशन।

इकाई 6: कार्यालयी पत्र लेखन

अनुक्रमणिका (CONTENTS)

उद्देश्य (Objectives)

प्रस्तावना (Introduction)

6.1 कला के रूप में कार्यालयी पत्र लेखन

6.2 कार्यालयी पत्र लेखन की विधि

6.2.1 कार्यालयी पत्र लेखन की रूपरेखा और पत्र

6.3 सारांश (Summary)

6.4 शब्दकोश (Keywords)

6.5 अभ्यास प्रश्न (Review Questions)

6.6 संदर्भ पुस्तकें (Further Readings)

उद्देश्य (Objectives)

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी:

- कार्यालयी पत्र लेखन का विवरण दे सकेंगे।
- कार्यालयी पत्र लेखन विधि को जानने में सक्षम होंगे।
- कार्यालयी पत्र लेखन की रूपरेखा का वर्णन कर सकेंगे।

प्रस्तावना (Introduction)

प्रत्येक सरकारी अथवा निजी संस्थान को अपना दैनिक कार्य सुचारु रूप से चलाने के लिए विभिन्न संस्थानों से पत्र-व्यवहार करना पड़ता है। इस प्रकार का पत्र व्यवहार कार्यालयी पत्र व्यवहार कहलाता है। ऐसे पत्र प्रायः एक कार्यालय से दूसरे कार्यालय को लिखे जाते हैं। किसी व्यक्ति द्वारा किसी सरकारी कार्यालय को या किसी कार्यालय द्वारा किसी व्यक्ति या अन्य कार्यालय को लिखा पत्र कार्यालय पत्र कहलाता है।

6.1 कला के रूप में कार्यालयी पत्र लेखन

पत्र लिखना एक कला है। इस कला में निपुण व्यक्ति किसी दफ्तर या संस्थान में कई सालों से अटके हुए काम को भी प्रभावी पत्र द्वारा करवा लेता है। अन्य कलाओं की तरह इस कला में भी निपुणता प्राप्त करने के लिए अभ्यास की आवश्यकता होती है। कार्यालयी पत्र लेखन ऐसा साधन है, जो दूरस्थ व्यक्तियों की भावना को एक संगम भूमि पर ला खड़ा करता है और दोनों में आत्मीय सम्बन्ध स्थापित करता है। सुप्रसिद्ध अंग्रेज लेखक जेम्स हाडल का कथन सच है कि “जिस प्रकार कुँजियां मंजुषाओं के अंतराल को खोल देती हैं, उसी प्रकार पत्र हृदय के विभिन्न पटलों को खोल देते हैं।”

कार्यालयी पत्र लेखन शैली के विभिन्न रूप होते हैं जिनमें से प्रमुख कार्यालय आदेश, सूचना, प्रस्ताव टिप्पणी, अधिसूचना, ज्ञापन, अर्द्ध सरकारी पत्र, परिपत्र, अनुस्मारक, अध्यादेश आदि हैं।



Did u know? पत्र सामान्यतः छः प्रकार के होते हैं। (1) परिवारिक पत्र, (2) सामाजिक पत्र, (3) व्यावसायिक पत्र, (4) सम्पादक के नाम पत्र, (5) सरकारी कार्यालयों के पत्र और (6) आवेदन पत्र।

6.2 कार्यालयी पत्र लेखन की विधि

कार्यालयी पत्र लेखन और शैली पत्र लेखन में काफी भिन्नता होती है। कार्यालयी पत्र संयत, औपचारिक तथा नियमानुकूल होते हैं इनमें अनर्गल प्रलाप अथवा विषय के विस्तार के लिए स्थान नहीं होता। इन पत्रों में सर्वप्रथम पत्र की संख्या और तिथि दी जाती है, बायीं ओर प्रेषक का नाम और पद दिया जाता है और फिर सेवा में प्रेषिती का नाम और पद दिया जाता है। विषय सम्बोधन पत्र का मूल कलेवर, अभिनिवेदन और अंत में प्रेषक के हस्ताक्षर होते हैं। हस्ताक्षर के नीचे प्रेषक के पद का उल्लेख किया जाता है। पत्र के नीचे बायीं ओर संलग्न प्रपत्रों आदि का विवरण दिया जाता है।

कार्यालयी पत्रों में सम्बोधन/समापन

प्रारम्भ	सम्बोधन	समापन
प्रेषक कार्यालय का पता/दिनांक क्रमांक	प्राप्तकर्ता कार्यालय का पद सहित पता/उसके बाद महोदय/महोदया/प्रिय महोदय/महोदया	भवदीय/भवदीया तथा हस्ताक्षर के पश्चात् प्रेषण अधिकारी के पद का नाम

कार्यालयी पत्र के मुख्य अंग निम्नांकित हैं:

- भेजने वाले का पता:** कार्यालयी पत्र लेखन करते समय पत्र लिखने वाले को चाहिए कि वह सबसे पहले अपना पूरा पता लिखें। यदि अपना पता नहीं लिखेगा, तो कार्यालय उसको जवाब नहीं भेज सकेगा। इसमें निम्न बातों का ध्यान रखना चाहिए—
(क) यह पता मुख्यतः बायीं तरफ होना चाहिए।
(ख) पता, तिथि स्पष्ट और ठीक होनी चाहिए।
- सेवा में (प्राप्त करने वाले का पता):** इस शीर्षक के अधीन अधिकारी या अफसर का पता लिखना होता है।
- विषय:** कार्यालयी पत्र लेखन में विषय लिखना अति आवश्यक है तभी उस विषय को पढ़ कर पत्र को उससे संबंधित अधिकारी के पास भेजा जाता है तथा जल्द ही उस पत्र के ऊपर कार्यवाही की जाती है। विषय 'सेवा में' शीर्षक के नीचे और सम्बोधन पद से ऊपर लिखा जाता है।
- सम्बोधन पद:** जिस स्तर के व्यक्ति या अफसर को पत्र लिखा जाए उसी के अनुसार स्वनिर्देश शब्द 'भवदीय', 'आपका सद्भावी', 'आपका सुहृदय' या 'आपका विश्वासपात्र' आदि शब्द लिखे जाते हैं।
- स्वनिर्देश शब्द लिखने के बाद प्रेषक अपने हस्ताक्षर कर देता है।

Notes



Task

कार्यालयी पत्र लेखन में कौन-कौन से पत्र आते हैं, तथा इनका क्या महत्त्व है?

6.2.1 कार्यालयी पत्र लेखन की रूपरेखा और पत्र

आपके मुहल्ले की समय पर सफाई नहीं होती। अपने नगर की नगरपालिका के प्रधान को पत्र लिखकर मुहल्ले की सफाई न होने की शिकायत कीजिये।

सेवा में,

मान्यवर स्वास्थ्य अधिकारी महोदय,

नगर निगम,

अमृतसर

विषय: शिवाजी नगर में सफाई न होने की शिकायत

महोदय,

निवेदन यह है कि मैं शिवाजी नगर का एक निवासी हूँ। यह नगर सफाई की दृष्टि से पूरी तरह उपेक्षित है। इसे देखकर कभी-कभी तो ऐसा लगता है, जैसे यह नगर-निगम के क्षेत्र से बाहर है। गाँव की गन्दगी के विषय में तो केवल सुना था लेकिन यहाँ की गन्दगी को प्रतिदिन आँखों से देखता हूँ। यहाँ पर सफाई सेवक की नियुक्ति तो अवश्य हुई है लेकिन वह कभी-कभी ही दिखाई देता है। उसके व्यवहार में अशिष्टता भी है। इधर-उधर कही भी गन्दगी के ढेर लगाकर चला जाता है। नालियों का भी ठीक से प्रबन्ध नहीं है। पानी निचले स्थान पर आकर रुक जाता है। मच्छरों के जमघट ने नाक में दम कर रखा है। जिससे अनेक प्रकार की बीमारियों के फैलने का भय बना हुआ है।

आपसे नम्र निवेदन है, कि आप एक बार स्वयं इस नरक को आकर देख जाएँ। तभी आप हमारी कठिनाई का अनुभव करेंगे। एक बार पहले भी आपकी सेवा में प्रार्थना कर चुके हैं। लगता है हमारी बात आप तक पहुँची नहीं अन्यथा इस नगर की दशा ऐसी न होती। कृपया सफाई सेवक को चेतावनी दें ताकि वह अपने काम को ईमानदारी से करे।

आशा है कि आप मेरी प्रार्थना पर ध्यान देंगे और शिवाजी नगर की सफाई का उचित प्रबंध करेंगे।

भवदीय,

सुरेश अरोड़ा,

तिथि: 20 अगस्त, 2013

3/203, अमृतसर

दिल्ली परिवहन निगम के जनरल मैनेजर को पत्र लिखकर किसी बस कण्डक्टर के दुर्व्यवहार की शिकायत कीजिए।

सेवा में,

जनरल मैनेजर,
दिल्ली परिवहन निगम,
दिल्ली

विषय: कॅनाट प्लेस बस कण्डक्टर द्वारा दुर्व्यवहार

मान्यवर,

माननीय महोदय जी, कल मैं जब कॅनाट प्लेस से नई दिल्ली स्टेशन के लिए जा रही बस में सवार हुआ तो बस का कण्डक्टर किसी सवारी से झगड़ा कर रहा था। मैंने जब इस झगड़े का कारण पूछा तो वह अकारण मुझ पर बरस पड़ा और गालियां देने लगा। अन्य यात्रियों ने उसके इस दुर्व्यवहार की निंदा की पर उस पर कुछ असर न हुआ। मुझे लगता है उसने शराब पी रखी थी। उस कण्डक्टर का नाम रामपाल तथा बस का नं. DHD 525 है।

आपसे निवेदन है कि आप इस कण्डक्टर के विषय में पूछताछ करें तथा उसके लिए उचित दण्ड की व्यवस्था करें ताकि भविष्य में किसी अन्य यात्री से वह दुर्व्यवहार करने का साहस न कर सके।

तिथि: 14 मार्च, 2013

भवदीय,
राकेश मेहता,
कॅनाट प्लेस
नई दिल्ली

दिल्ली विद्युत-प्रदाय संस्थान के महाप्रबन्धक को एक शिकायती पत्र लिखिए जिसमें परीक्षा के दिनों में बार-बार बिजली चले जाने के कारण उत्पन्न असुविधा का वर्णन किया गया हो।

सेवा में,

महाप्रबन्धक
दिल्ली विद्युत-प्रदाय संस्थान,
दिल्ली

विषय: बिजली जाने के कारण उत्पन्न होने वाली असुविधा

आदरणीय महोदय,

कल-कारखानों तथा अन्य उत्पादक यंत्रों के बढ़ जाने के कारण देश भर में बिजली का संकट व्याप्त है। सरकार इस दिशा में सम्भव प्रयत्न भी कर रही है, पर अभी भी इस संकट के तत्काल दूर हो जाने की कोई संभावना नहीं है। आपसे विनम्र निवेदन है कि दिल्ली में बिजली का जो अभाव है, उसकी पूर्ति रात की अपेक्षा बिजली की दिन में कटौती से की जाए। छात्र दिन में तो सूर्य की रोशनी में अध्ययन कर सकते हैं परन्तु रात के अंधेरे में बिजली के अभाव में अध्ययन रुक जाता है। परीक्षा

Notes

के दिन होने के कारण हमारे लिए रात को बिजली की रोशनी अत्यन्त आवश्यक है। अचानक बिजली का चला जाना तो बड़ा ही हानिकारक है। ऐसी स्थिति में तत्काल कोई प्रबन्ध भी नहीं हो पाता। निर्धन छात्रों के लिए रात को बिजली का अभाव एक प्रकार का अभिशाप है। अतः आपसे विनम्र प्रार्थना है कि आप बिजली बन्द करने के समय में परिवर्तन लाएं। इन दिनों बिजली अधिक-से-अधिक प्राप्त हो और अगर बंद करना आवश्यक हो तो दिन के समय ही बन्द करें।

आशा है कि आप हम छात्रों की इस शिकायत को दूर करने का प्रयास करेंगे।

तिथि: 5 मार्च, 2013

भवदीय,
नरेश,
छात्र प्रतिनिधि

किसी समाचार-पत्र के सम्पादक को पत्र लिखिए जिसमें नगर में व्याप्त बिजली की अव्यवस्था का वर्णन किया गया हो।

सेवा में,

श्रीमान सम्पादक महोदय,
हिन्दुस्तान टाइम्स,
नई दिल्ली

विषय: नगर में बिजली की अव्यवस्था सम्बन्धित

मान्यवर,

मैं आपके लोकप्रिय दैनिक समाचार-पत्र के माध्यम से अपने नगर लुधियाना में फैली बिजली की अव्यवस्था की ओर बिजली-विभाग के उच्च अधिकारियों का ध्यान आकर्षित कराना चाहता हूँ। सबसे पहले नगर की सड़कों को ही लीजिए। एक तो ये सड़कें तंग हैं, दूसरे इन पर यातायात का आवागमन दिन की अपेक्षा रात को अधिक होता है। ट्रकों से सड़कें घिरी रहती हैं। सड़क के दोनों ओर बिजली के खम्भे हैं पर उन पर प्रकाश प्रायः गायब रहता है। परिणामस्वरूप दुर्घटनाओं की संभावना बनी रहती है। ऐसी अवस्था में सड़क पर जाने वाला व्यक्ति अपने को असुरक्षित समझता है।

बिजली के न होने से अनेक स्थानों पर काम-काज ठप्प हो जाता है। इससे उत्पादन कम होता है, श्रमजीवी का आर्थिक संकट बढ़ता है। बिजली की यह आंख-मिचौली छात्र-छात्राओं की पढ़ाई में भी बाधा डालती है। बिजली का अभाव अनेक प्रकार के संकटों को जन्म देता है।

अधिकारी वर्ग हमारी शिकायतों को उपेक्षा की दृष्टि से देखता है। कुछ लोगों ने उसके विरुद्ध प्रदर्शन भी किये हैं, पर उनके कानों पर जूँ तक नहीं रेंगी। आपके समाचार पत्र की बड़ी धाक है। यदि आप हमारा साथ दें, तो हम अवश्य ही इस संकट से मुक्त हो सकते हैं। इस पत्र को प्रकाशित करने की कृपया करने के साथ-साथ यदि इस विषय पर एक सम्पादकीय भी लिख दें, तो हम आपके अत्यन्त आभारी होंगे।

धन्यवाद

तिथि: 7 मई, 2013

भवदीय,
.....नाम

आपके मुहल्ले में चोरी की घटनाएं बहुत होने लगी हैं। नगर के पुलिस-अधीक्षक को मुहल्ले की सुरक्षा के लिए पत्र लिखिए।

सेवा में,
पुलिस अधीक्षक,
अमृतसर

विषय: मुहल्ले की सुरक्षा

मान्यवर,

प्रार्थना है कि मैं जवाहर नगर का एक निवासी हूँ। हमारा यह नगर शहर से लगभग 3 किलोमीटर की दूरी पर है। यहाँ के अधिकांश निवासी निर्धन हैं। निर्धनता में चोरी हो जाना एक अभिशाप के समान है। गत एक सप्ताह में तीन चोरियाँ हो चुकी हैं। इन चोरियों में दो साइकिल, 500 रुपये की नकदी और एक भैंस शामिल है।

इन तीनों चोरियों की शिकायत निकटवर्ती थाने में लिखवा चुके हैं लेकिन अभी तक कोई परिणाम सामने नहीं आया। लोगों में निराशा का भाव दिन-प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है। कुछ परिवार तो इस नगर को छोड़ने का विचार कर रहे हैं। इस नगर में निवासियों के लिए चौकीदार का प्रबन्ध करना भी सम्भव नहीं। आप से प्रार्थना है कि आप इस नगर की सुरक्षा की ओर ध्यान दें अन्यथा यह बसा-बसाया नगर उजड़ जाएगा।

कृपया एक सिपाही की नियुक्ति स्थायी रूप से कर दें। हम उसे पूरा सहयोग देंगे। आशा है कि आप हमारी प्रार्थना की ओर ध्यान देंगे और इस दिशा में शीघ्र ही कोई ठोस प्रबन्ध करेंगे।

प्रार्थी,
क, ख, ग
जवाहर नगर

तिथि: 7 अगस्त, 20.....

समाचार-पत्र में विज्ञापन-कर्ता को नौकरी के लिए प्रार्थना-पत्र लिखो।

83, नौरोजी नगर,
दिल्ली
12 सितम्बर 20.....

सेवा में,
प्रबन्धक,
डी.ए.वी. कॉलेज,
जालन्धर

मान्यवर महोदय,

दिनांक 10 अगस्त, 20... के दैनिक "हिन्दोस्तान" से ज्ञात हुआ है कि आपके यहाँ हिन्दी विषय के तीन प्राध्यापकों के स्थान रिक्त हैं। प्राध्यापक के पद की नियुक्ति के लिए आपने जो शैक्षणिक योग्यताएं

Notes

मांगी हैं, मैं उसके लिए अपने आपको पूर्ण समर्थ समझता हूँ। अतः मैं आपकी सेवा में यह प्रार्थना-पत्र भेज रहा हूँ। मेरी शैक्षणिक योग्यता तथा अनुभव का विवरण इस प्रकार है—

1. मैंने 1999 ई. में पंजाब विश्वविद्यालय से हिन्दी विषय में एम.ए. प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की हैं।
2. एक वर्ष तक डी.ए.वी. कॉलेज, चण्डीगढ़ में अस्थायी रूप से रिक्त प्राध्यापक के पद पर भी कार्य किया है।
3. स्कूल तथा कॉलेज जीवन में क्रिकेट तथा बैडमिंटन में विशेष रुचि रही है।
4. भाषण तथा वाद-विवाद प्रतियोगिताओं में भी अनेक बार प्रथम स्थान प्राप्त किया है।

आवश्यक प्रमाण-पत्र इस प्रार्थना-पत्र के साथ भेज रहा हूँ। मुझे पूर्ण आशा है कि मेरे प्रार्थना-पत्र पर सहानुभूतिपूर्वक विचार करेंगे और मुझे अपनी ख्याति प्राप्त संस्था में काम करने का अवसर प्रदान करेंगे।

धन्यवाद सहित

आपका आज्ञाकारी,
क, ख, ग

गलत माल मिलने की शिकायत करते हुए सामान बेचने वाले प्रतिष्ठान 'क्रीड़ा विहार' को पत्र लिखिए।

सेवा में,
व्यवस्थापक,
'क्रीड़ा विहार'
जालन्धर

विषय: गलत सामान मिलने की शिकायत

महोदय,

हमने दिनांक 18 मई, 20... को सामान का आदेश भेजा था। इस आदेश का क्रमांक नं. 713 है। हमने दो दर्जन क्रिकेट के गेंद, 6 बल्ले तथा 12 रैकेट मंगवाये थे, लेकिन आपने सारा माल गलत भेजा है। लगता है कि यह सामान किसी दूसरी जगह पर जाना था लेकिन आपके कर्मचारी ने भूल से ऐसा कर दिया है।

कृपया आप अपना माल वापिस मंगवा लें और हमारे आदेश के अनुसार हमारा माल शीघ्र भिजवा दें। अतिरिक्त व्यय भार आपको वहन करना होगा।

तिथि: 22 अप्रैल, 20...

भवदीय,
क, ख, ग

किसी दैनिक समाचार-पत्र के सम्पादक को एक पत्र लिखिए जिसमें सामान्य नागरिकों की कठिनाइयों का वर्णन हो।

सेवा में,

मुख्य सम्पादक,
नवभारत टाइम्स,
नई दिल्ली

विषय: नागरिकों के समक्ष आने वाली कठिनाइयाँ

आदरणीय महोदय,

मैं आपके लोकप्रिय-पत्र के माध्यम से अपने निम्नांकित विचार अपने प्रदेश के अधिकारियों तक पहुँचाना चाहता हूँ—

- (क) पानीपत नगर का नितान्त विकास हो रहा है। दूर-दूर बस्तियाँ बन गई हैं। इन बस्तियों तक पहुँचने के लिए प्रदेश सरकार की ओर से बहुत कम स्थानीय बसें चलाई गई हैं। बस सेवा उपलब्ध न होने के कारण नागरिकों को अनेक प्रकार की कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है।
- (ख) नगर-निगम भी अपने कर्तव्य का पालन नहीं कर सकी है। स्थान-स्थान पर गन्दगी के ढेर पड़े रहते हैं, जिनसे बीमारियाँ फैलने का भय रहता है।
- (ग) बिजली का संकट भी दिन-प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है। बिजली के बन्द रहने के कारण नलों में जल का अभाव रहता है, पानी के जमाव के कारण भी नागरिकों को अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है।

मेरा आपसे नम्र निवेदन है कि उक्त कठिनाइयों की ओर सम्बन्धित अधिकारी ध्यान दें और इनके निवारण का समुचित प्रबन्ध करें।

तिथि: 17-20-.....

भवदीय,
क, ख, ग

स्व:मूल्यांकन

रिक्त स्थान भरें:

- कार्यालयी पत्र संयत, ... और होते हैं।
- कार्यालयी पत्र में पता मुख्यतः ओर लिखा जाता है।
- कार्यालयी पत्र लेखन में विधिनुसार प्रारम्भ, सम्बोधन और होता है।

6.3 सारांश (Summary)

- कार्यालयी पत्र एक कार्यालय से दूसरे कार्यालय को लिखे जाते हैं। कार्यालयी पत्र संयत, औपचारिक तथा नियमानुकूल होते हैं।

Notes

- कार्यालयी पत्र लेखन एक कला है। इस कला में निपुण व्यक्ति किसी कार्यालय में सालों से अटके काम को निकलवा सकता है, इस में निपुणता एवं अभ्यास अति आवश्यक है।
- कार्यालयी पत्र की लेखन शैली के विभिन्न रूप होते हैं जिनमें से प्रमुख कार्यालय आदेश, सूचना, प्रस्ताव, टिप्पणी ज्ञापन, अध्यादेश आदि हैं।
- कार्यालयी पत्रों में प्रारम्भ, सम्बोधन और समापन में विषय बंटा होता है।

6.4 शब्दकोश (Keywords)

प्रारम्भ: शुरुआत, शुरु करना।

प्रेषक: भेजने वाला।

6.5 अभ्यास प्रश्न (Review Questions)

1. कार्यालयी पत्र लेखन कला का उल्लेख करें।
2. कार्यालयी पत्र लेखन की विधि और रूपरेखा लिखें।
3. निम्न विषयों पर पत्र लिखें:
 - (क) दिल्ली परिवहन निगम के जनरल मैनेजर को पत्र लिखकर किसी बस कण्डक्टर के दुर्यवहार की शिकायत कीजिए।
 - (ख) अपने मुहल्ले में वर्षा के कारण उत्पन्न हुई जल भराव की समस्या की ओर ध्यान आकृष्ट करने के लिए नगरपालिका अधिकारी को पत्र लिखिए।
 - (ग) अपने राज्य के शिक्षा मंत्री को एक पत्र लिखकर विनम्र निवेदन कीजिए कि आपके क्षेत्र में एक कॉलेज खोला जाए।

उत्तर: स्व:मूल्यांकन

1. औपचारिक, नियमानुकूल
2. बाई
3. समापन

6.6 संदर्भ पुस्तकें (Further Readings)



Books

व्याकरण भारती – डॉ. सुरेन्द्र कुमार जैन एवं डॉ. वीणा मनचन्दा, जयंती प्रकाशन, काबुल नगर, शाहदरा, दिल्ली।

आधुनिक हिन्दी व्याकरण और रचना – डॉ. वासुदेव नंदन प्रसाद, भारती भवन, पटना।

इकाई 7: अनेक शब्दों के लिए एक शब्द

Notes

अनुक्रमणिका (CONTENTS)

उद्देश्य (Objectives)

प्रस्तावना (Introduction)

7.1 अनेक शब्दों के लिए एक शब्द

7.2 सारांश (Summary)

7.3 शब्दकोश (Keywords)

7.4 अभ्यास प्रश्न (Review Questions)

7.5 संदर्भ पुस्तकें (Further Readings)

उद्देश्य (Objective)

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी:

- अनेक शब्दों के लिए एक शब्द के प्रयोग से परिचित होंगे।

प्रस्तावना (Introduction)

भाषा को सुंदर, प्रभावशाली एवं सारगर्भित तथा सशक्त बनाने के लिए यह आवश्यक है कि लेखक शब्दों का प्रयोग सयंम के साथ करें। जिस प्रकार कम व्यय करके अधिक लाभ की वस्तु खरीदना समझदारी है, उसी प्रकार कम शब्दों के प्रयोग द्वारा विस्तृत अर्थ को व्यक्त करना अथवा 'गागर में सागर भर देना' अच्छे लेखन का गुण है।

7.1 अनेक शब्दों के लिए एक शब्द

वाक्यांश अथवा वाक्य को एक शब्द अथवा सामसिक पद का भी रूप दिया जा सकता है। अभ्यास के लिए यहाँ कुछ महत्वपूर्ण वाक्य खण्डों के लिए एक शब्द अथवा सामसिक पद दिए जा रहे हैं:

वाक्य खण्ड

एक शब्द

जिसके आने की तिथि (मालूम) न हो

अतिथि

जिसके समान द्वितीय नहीं है

अद्वितीय

जिसके पार न देखा जा सके

अपारदर्शक

जिसकी ग्रीवा सुन्दर हो

सुग्रीव

जिसका कोई नाथ न हो

अनाथ

जिसका आदि न हो

अनादि

Notes	जिसका अन्त न हो	अनन्त
	जिसका ईश्वर में विश्वास हो	आस्तिक
	जिसका ईश्वर में विश्वास न हो	नास्तिक
	जो पहले पैदा हुआ हो	ज्येष्ठ, अग्रज
	जो बाद में पैदा हुआ हो	कनिष्ठ, अनुज
	जिसे अक्षरों का ज्ञान हो	साक्षर
	जिसे अक्षरों का ज्ञान न हो	निरक्षर
	जो कभी मर न सके	अमर
	जो कभी बूढ़ा न हो	अजर
	नो नष्ट हो सके	नश्वर
	जिसके माँ-बाप न हों	अनाथ
	जो भविष्य में आने वाला हो	आगामी
	जो किए हुए उपकार को माने	कृतज्ञ
	जो किए हुए उपकार को न माने	कृतघ्न
	जो व्याकरण का पण्डित हो	वैयाकरण
	जिसका कोई आधार न हो	निराधार
	जिसका आधार हो	साधार
	जो गुणहीन हो	निर्गुण
	जो गुण सम्पन्न हो	सगुण
	जो कम खर्च करता हो	मितव्ययी
	जो अधिक खर्च करता हो	अपव्ययी
	जो कम भोजन करता हो	मिताहारी
	जो कम बोलता हो	मितभाषी
	जो अधिक बोलता हो	वाचाल
	जो दूसरे के स्थान पर काम करे	स्थानापन्न
	बाप-दादा से मिलने वाला धन	पैतृक
	जिसका सम्बन्ध राज्य-व्यवस्था से हो	राजकीय
	जो अच्छी तरह शिक्षा ग्रहण कर चुका हो	सुशिक्षित
	जो राष्ट्र से संबंधित हो	राष्ट्रीय

		Notes
जिसकी चार भुजाएं हों	चतुर्भुज	
जिसके दस आनन (मुख) हों	दशानन	
जिसके पाँच आनन हों अथवा पाँच मुखों वाला देवता	पंचानन	
जिसके शेखर (मस्तक) पर चन्द्र हो	चन्द्रशेखर (शिव)	
जिसके पार देखा जा सके	पारदर्शक	
जिसके पार न देखा जा सके	अपारदर्शक	
जानने की इच्छा रखने वाला	जिज्ञासु	
जो कहा न जा सके	अकथनीय	
जिसके हृदय में ममता नहीं	निर्मम	
जो दया से रहित है	निर्दयी	
जानने की इच्छा रखना	जिज्ञासा	
जिसके चार पांव हैं	चौपाया	
जिसका पति जीवित हो	सधवा	
जल से जन्म लेने वाला	जलज	
जिसे टाला न जा सके	अटल, अनिवार्य	
जो दूर की सोचे	दूरदर्शी	
जो दूर की न सोचे	अदूरदर्शी	
जो बिना वेतन के काम करे	अवैतनिक	
आलोचना करने वाला	आलोचक	
जिसकी बुद्धि तेज़ हो	कुशाग्रबुद्धि	
हाथ से लिखा हुआ	हस्तलिखित	
काव्य रचना करने वाला	कवि	
जो बात पहले हो चुकी हो	भूतपूर्व	
जो बात पहले न हुई हो	अभूतपूर्व	
जिसकी पत्नी मर गई हो	विधुर	
मांस खाने वाला	आमिषभोजी, मांसाहारी	
मांस न खाने वाला	निरामिषभोजी	
जो किसी पक्ष में न हो	तटस्थ, निष्पक्ष	
शिव का उपासक	शैव	

Notes	शक्ति का उपासक	शाक्त
	विष्णु का उपासक	वैष्णव
	जहां पहुँचना सम्भव न हो	अगम, अगम्य
	जहां पहुँचना सरल हो	सुगम
	जहां पहुँचना कठिन हो	दुर्गम
	जिसे समझना सरल हो	सुबोध
	जिसे समझना कठिन हो	दुर्बोध
	जिसे प्राप्त करना सरल हो	सुलभ
	जिसे प्राप्त करना कठिन हो	दुर्लभ
	जो कुछ भी न जानता हो	अज्ञ
	जो सब कुछ जानता हो	सर्वज्ञ
	जो थोड़ा जानता हो	अल्पज्ञ
	जो अधिक जानता हो	बहुज्ञ
	जो अच्छे कुल में पैदा हुआ हो	कुलीन
	जो सब में व्याप्त है	सर्वव्यापक
	जो किसी की ओर से हो	प्रतिनिधि
	जो आँखों के सामने हो	प्रत्यक्ष
	जो आँखों के सामने न हो	परोक्ष
	प्रतिकूल पक्ष का	विपक्ष
	सहन करना जिसका स्वभाव है	सहनशील, सहिष्णु
	जो मुक्त होना चाहे	मुमुक्षु
	मुक्ति प्राप्त करने की इच्छा	मुमुक्षा
	जो मृत्यु के निकट हो	मुमुर्षु
	सत्य के लिए आग्रह	सत्याग्रह
	जो हमेशा रहे	शाश्वत
	पथ का प्रदर्शन करने वाला	पथप्रदर्शक
	संगीत को जानने वाला	संगीतज्ञ
	जो दूसरे के अधीन है	पराधीन
	जो देखने में प्रिय है	प्रियदर्शी

		Notes
जो जन्म से अन्धा है	जन्मांध	
बुद्धि ही जिसकी आँखें हों	प्रज्ञाचक्षु	
जो स्त्री कविता करती है	कवयित्री	
जो पुरुष अभिनय करे	अभिनेता	
जो स्त्री अभिनय करे	अभिनेत्री	
जो फलों का आहार (भोजन) करता है	फलाहारी	
जो अपनी हत्या आप करता है	आत्महत्यारा, आत्मघाती, आत्महंता	
निशा (रात्रि) में घूमने वाला	निशाचर	
जो आकाश में चलता है	नभचर	
जो पृथ्वी पर चलता (वास) करता है	स्थलचर	
जो जल में विचरता है	जलचर	
जो घर बसा कर रहता है	गृहस्थ	
जो स्वयं स्वीकार कर ले	स्वयंसेवक	
जो शास्त्र जानता है	शास्त्रज्ञ	
जो किसी का अंकुश न माने	निरंकुश	
किसी विषय की विशेष जानकारी रखने वाला	विशेषज्ञ	
जो कानून के विरुद्ध हो	अवैध	
जो मन को हर ले	मनोहर	
शक्ति के अनुसार	यथाशक्ति	
पीछे-पीछे गमन करने वाला	अनुयायी, अनुगामी	
जो विश्वास के योग्य हो	विश्वासपात्र, विश्वस्त, विश्वसनीय	
देखने योग्य	दर्शनीय	
पूछने योग्य	प्रष्टव्य	
सुनने योग्य	श्रवणीय, श्रव्य	
पढ़ने योग्य	पठनीय	
जिसे जीता न जा सके	अजेय	
चलने फिरने वाली सम्पत्ति	चलसम्पत्ति	
अनुकरण के योग्य	अनुकरणीय	
जंगल की आग	दावानल	

Notes	जठर (पेट) की आग	जठरानल
	समुद्र की आग	बड़वानल
	रात और संध्या के बीच का समय	गोधूलि
	जो धर्माचरण करता है	धर्मात्मा
	जहां औषधियाँ रखी जाती हैं	औषधालय
	जहां समाचार-पत्र पढ़ने के लिए रखे जाते हैं	वाचनालय
	जल में चलने वाला यान	जलयान
	वायु में चलने वाला यान	वायुयान
	एक ही उदर (पेट) से जन्म लेने वाले	सहोदर
	जो स्त्री संतान उत्पन्न करने में असमर्थ हो	बांझ, बन्ध्या
	आत्मा से संबंध रखने वाला	आत्मिक
	जो इच्छा के अधीन है	ऐच्छिक
	जीने की इच्छा	जिजीषा
	पाने की इच्छा	लिप्सा
	पाने की इच्छा रखने वाला	लिप्तु
	काम करने में कुशल	कर्मठ
	जिसे कठिनाई से भेदा जा सके	दुर्भेद्य
	जिसका दमन न हो सके	अदम्य
	जिसका दमन कठिन हों	दुर्दम्य
	जिसकी भुजाएं लम्बी हों	दीर्घबाहु
	जो प्रत्येक काम में देर करे	दीर्घसूत्री
	एक ही समय में रहने वाला	समसामयिक
	जिसकी प्रतिज्ञा दृढ़ हो	दृढ़ प्रतिज्ञ
	जिसका उदर लम्बा हो	लम्बोदर
	जिसकी हजार भुजाएं हों	सहस्रबाहु
	जहां छात्र निवास करते हैं	छात्रावास
	जो क्षमा न किया जा सके	अक्षम्य
	जिसके वास का किसी को पता न हो	अज्ञातवास
	दूसरों के मन की बात जानने वाला	अन्तर्यामी

नीचे लिखा हुआ	निम्नलिखित, अधोलिखित	Notes
ऊपर कहा हुआ	उपर्युक्त	
जो कुछ काम न कर सके	अकर्मण्य	
बिना विचारे किया जाने वाला विश्वास	अन्धविश्वास	



Did u know? कम शब्दों के प्रयोग द्वारा विस्तृत अर्थ व्यक्त करना अनेक शब्दों के लिए एक शब्द की विशेषता है।

स्व:मूल्यांकन

निम्न कथनों में से सत्य और असत्य बताएँ:

- भाषा को प्रभावशाली, सुन्दर बनाने के लिए शब्दों का प्रयोग सावधानी से करना चाहिए।
- शक्ति का उपासक 'वैष्णव' और विष्णु का उपासक 'शाक्त' कहलाता है।
- जिसकी हजार भुजाएँ हों उसे 'लम्बोदर' कहा जाता है।



Task इस इकाई के वाक्यांश को छोड़कर कुछ नए वाक्यांश तथा उनके लिए एक शब्द दीजिए।

7.2 सारांश (Summary)

- जिन शब्दों से एक से अधिक अर्थ—बोध होता है, उन्हें अनेकार्थक (Homonym) कहते हैं।
- हिंदी साहित्य में अनेकार्थक शब्दों का प्रयोग अधिकतर काव्य में ही मिलता है। काव्य के रसास्वादन के लिए इनका ज्ञान आवश्यक है। इन्हीं शब्दों द्वारा कवियों ने यमक और श्लेष अलंकारों का भरपूर प्रयोग किया है। कविवर सेनापति के अनुसार कवि वही है, जिसकी कविता कम-से-कम दो अर्थों का निर्वाह करने वाली हो— “सेनापति कवि सोई, जाकी द्वै अरथ कविताई निर्वाह की।”

7.3 शब्दकोश (Keywords)

अल्पज्ञः थोड़ा जानना।

शाश्वत्: हमेशा रहने वाला।

प्रशिप्तांशः मिलाया हुआ अंश, व्यर्थ जुड़ा हुआ अंश।

पच्चीकारी: नगीने जड़ने आदि की प्रक्रिया।

प्रेमान्बुधि: प्रेम का सागर।

Notes

7.4 अभ्यास प्रश्न (Review Questions)

1. वाक्यांश के लिए एक शब्द का प्रयोग भावों की अभिव्यक्ति में किस प्रकार सहायक है?
2. इस इकाई के अतिरिक्त 30 (तीस) अनेक शब्दों के लिए एक शब्द लिखें।

उत्तर: स्व:मूल्यांकन

1. सत्य
2. असत्य
3. असत्य

7.5 संदर्भ पुस्तकें (Further Readings)



Books

व्याकरण भारती – प्रो. सुरेन्द्र कुमार झा, डॉ. अनुपमा सेठ, एच जी पब्लिकेशंस, दिल्ली।

आधुनिक हिंदी व्याकरण और रचना – डॉ. वासुदेव नंदन प्रसाद, भारती भवन, पटना।

अभिनव हिंदी व्याकरण – डॉ. मीनाक्षी अग्रवाल, राधाकृष्ण प्रकाशन।

इकाई 8: अनेकार्थक शब्द

Notes

अनुक्रमणिका (CONTENTS)

उद्देश्य (Objectives)

प्रस्तावना (Introduction)

8.1 अनेकार्थक शब्द का अर्थ

8.2 अनेकार्थक शब्दों की तालिका

8.3 सारांश (Summary)

8.4 शब्दकोश (Keywords)

8.5 अभ्यास प्रश्न (Review Questions)

8.6 संदर्भ पुस्तकें (Further Readings)

उद्देश्य (Objectives)

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी:

- अनेकार्थक शब्द का अर्थ जान सकेंगे।
- अनेकार्थक शब्दों के प्रयोग की जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।

प्रस्तावना (Introduction)

प्रत्येक भाषा में अनेक ऐसे शब्द होते हैं जिनके अर्थ एक से अधिक होते हैं। हिन्दी में भी कुछ ऐसे शब्द प्रयुक्त होते हैं जिनके अर्थ प्रसंगानुसार भिन्न-भिन्न होते हैं।

हिन्दी साहित्य में ऐसे शब्दों का अधिक प्रयोग काव्य में ही मिलता है। काव्य को प्रभावशाली बनाने के लिए और पूर्ण रसास्वादन के लिए अनेकार्थक शब्दों का ज्ञान अति आवश्यक है।

8.1 अनेकार्थक शब्द का अर्थ

अनेकार्थक शब्द का अर्थ है – अनेक अर्थ वाला, अर्थात् जिन शब्दों से एक से अधिक अर्थों का बोध हो, उन्हें अनेकार्थक शब्द कहते हैं।

अर्थ विस्तार में कभी-कभी शब्द नवीन अर्थ धारण करते जाते हैं पर वे पुराने अर्थ नहीं छोड़ते। इस प्रकार एक ही समय में एक शब्द के कई अर्थ चलते रहते हैं। ये कई अर्थ कभी वाचक होते हैं और कभी लवक, कभी सीमित होते हैं और कभी व्यापक, कभी सूक्ष्म तो कभी स्थूल। उदाहरण के लिए: हाथ मनुष्य के ही होता है किन्तु घड़ी की सूई भी हाथ (hand) है। मनुष्य का हाथ, कुर्सी का हाथ, साइकिल का हाथ तथा कुर्सी पर हाथ रखने की जगह को भी हाथ कहते हैं। हाथ से साम्य रखने तथा हाथ से काम करने के कारण, सूँड को हाथ कहा गया और सूँड धारी जीव को हाथी कहा गया।

Notes



Notes अनेकार्थक शब्द का अर्थ है – अनेक अर्थ वाला।

8.2 अनेकार्थक शब्दों की तालिका

(अ)

अंक: गोद, संख्या, चिह्न, अध्याय।

अंग: भाग, उपाय, देह, अवयव।

अक्ष: सूर्य, धुरी, रथ, ज्ञान, आत्मा।

अक्षर: वर्ण, शब्द, अविनाशी, शिव।

अग्र: सिरा, मुख्य, अगुआ।

अच्छा: उचित, भद्र, शुभ, श्रेष्ठ।

अज: शिव, दशरथ के पिता, कामदेव, ब्रह्मा।

अजित: अज्ञेय, अदम्य, अपराजित, दुर्दान्त।

अग्नि: आग, पावक, अनल, वह्नि, कृशानु।

अतिथि: अभ्यागत, पाहुन, आगन्तुक।

अधम: नीच, पतित, निकृष्ट।

अधर: होठ, धरती, आसमान के बीच का भाग।

अनार: दाड़िम, शुकप्रिय, रामबीज।

अनी: सेना, दल, कटक, नोक, चमू।

अनुचर: दास, सेवक, नौकर, किंकर, भृत्य।

अनुपम: अपूर्व, अनोखा।

अन्तर: आकाश, अवधि, मध्य, अवकाश।

अन्ध: नेत्रहीन, सूरदास, अन्धा।

अन्न: अनाज, शस्य, धान्य।

अन्य: अपर, दूसरा, पृथक्, भिन्न।

अपमान: तिरस्कार, अनादर, अवमान, बेइज्जती।

अपवाद: कलंक, निन्दा, नियम से बाहर।

अर्थ: हेतु, धन, कारण, प्रयोजन।

अम्बर: आकाश, कपड़ा।

अम्बुजः कमल, नीरज, जलज, पंकज ।

अमृतः पीयूष, सुधा, सोम, अमिय ।

अलिः पंक्ति, सखी ।

अश्वः घोड़ा, तुरंग, सैधव, वाजि ।

असंगतः अनर्गल, अनुपयुक्त, असम्बद्ध ।

असुरः राक्षस, दानव, निशाचर, रजनीचर ।

अहंकारः घमण्ड, अभिमान, दर्प, दम्भ ।

(आ)

आँखः चक्षु, दृग, नयन, नेत्र, लोचन ।

आंगनः अजिर, अंगना, प्रांगण, बाखर, बगर ।

आँसूः अश्रु, नयन जल, लोचन वारि ।

आकाशः गगन, अम्बर, अनन्त, अन्तरिक्ष ।

आज्ञाः आदेश, निर्देश, अनुमति, हुक्म ।

आतुरः अशक्त, उत्सुक, विकल, रोगी ।

आत्माः चैतन्य, जीव, प्राण, देही ।

आनन्दः हर्ष, मोद, प्रसन्नता, सुख, उल्लास ।

आमः फल का नाम, सामान्य, रसाल, आम्र, पिकबन्धु ।

आरामः चैन, आरोग्य, बाग, विश्राम ।

आह्वानः चुनौती, बुलावा, ललकार, पुकारना ।

(इ-ई)

इच्छाः चाह, कामना, मनोरथ, आकांक्षा, अभिलाषा, लालसा ।

इन्द्रः देवेन्द्र, सुरेन्द्र, देवराज, पुरन्दर, सुरपति, शचीपति ।

इन्द्राणीः शची, इन्द्रवधू, इन्दिरा ।

इन्दूः चन्द्रमा, मयंक, राजा अज की पत्नी ।

ईश्वरः प्रभु, परमेश्वर, परमात्मा, जगदीश ।

(उ-ऊ)

उत्तमः श्रेष्ठ, बढ़िया ।

उत्तरः उत्तर, दिशा, जवाब, पीछे ।

उत्सवः पर्व, समारोह ।

Notes

उदण्डः अभयार्द, अविनीत, असभ्य, घृष्ट ।

उदारः उच्चाशय, महान्, दानशील ।

उद्यानः उपवन, फूलवारी, बगीचा, बाग, वाटिका, आराम ।

उद्योगः उद्यम, धन्धा, परिश्रम, प्रयत्न, प्रयास ।

उन्नतिः उत्थान, उत्कर्ष विकास, वृद्धि, समृद्धि ।

उपचारः इलाज, सेवा, उपाय ।

ऊटः उष्ट्र, क्रमेलक ।

(ऋ, ए, ओ, औ)

कृषिः महामुनि, सन्त, मन्त्रदृष्टा ।

एकताः संगठन, मेल, मिलाप ।

ओष्ठः होठ, अधर, ओठ ।

औरः अन्य, दूसरा भिन्न ।

(क)

कंचनः सोना, कांच, धन-दौलत, निर्मल ।

कक्षः दोष, सूखी घास, कमरा, बगल ।

कनकः सोना, धतूरा, गेहूं ।

कपटः छल, धोखा, वंचना ।

कपड़ाः चीर, पट, वसन, वस्त्र, परिधान ।

कमलः अरविन्द, इन्दीवर, कंज, जलज, नलिन, पंकज, पद्म, पुण्डरीक, पुष्कर, राजीव, वारिज, शतदल, सरोज ।

करः हाथ, हाथी की सूंड, किरण, टैक्स ।

कर्णः कुन्ती पुत्र, कान, पतवार, त्रिकोण में सामने की भुजा ।

कलः सुन्दर, चैन, मशीन, बीता हुआ कल, आने वाला दिन, मधुर शब्द ।

कलाः सोलहवां भाग, हुनर, शोभा, तेज, गुण, छन्द की मात्रा ।

कलीः कलिका, मुकुल, जालक, कोरक ।

कल्याणः मंगल, शिव, शुभ, श्रेय ।

कष्टः संकट, आपत्ति, आपदा, दुःख, पीड़ा, विवाद ।

कान्तिः आभा, छटा, प्रभा, विभा, शोभा, सुषमा ।

कामः इच्छा, कार्य, कामदेव, पेशा, धन्धा ।

कामदेवः अनंग, कंजन, कन्दर्प, मदन, मनसिज, मनोज, मन्मथ, रतिपति ।

किनारा: कूल, तीर, कगार।

किरण: मयूख, मरीचि, कर, रश्मि, अंशु।

किला: दुर्ग, कोट, गढ़।

कुल: समस्त, सब, वंश, खानदान।

कुशल: सुख, चैन, निपुण।

कृपा: दया, अनुग्रह, अनुकम्पा।

कृष्ण: केशव, गिरिधर, माधव, दामोदर, मुरलीधर, मधु सूदन, वासुदेव, मुरारि, नन्दनंदन, द्वारिकाधीश, राधा, वल्लभ।

केश: सिर के बाल, विष्णु, किरण।

केसर: कुंकुम, पराग, परिमल, मकरन्द, किंजल्क।

कोमल: नर्म, मृदुल, सुकुमार, मंजुल।

कोयल: कोकिला, पिक, वसन्त, दूत, परमृत।

क्रोध: अमर्ष, कोप, गुस्सा, रोष।

कौशल: कुशलता, चतुरता, दक्षता, पटुता, प्रवीणता।

(ख)

खड्ग: असि, तलवार, कृपाण, चन्द्रहास, करवाल।

खर: गधा, बगुआ, कौआ, तिनका, तीक्ष्ण, खट्टा।

खल: दुष्ट, धूर्त, शठ, दुर्जन, कुटिल।

(ग)

गंगा: मन्दाकिनी, जाह्नवी, देवनदी, सुरसरिता, भागीरथी।

गणेश: एकदन्त, गजबदन, गजानन, गणपति, गौरी पुत्र।

गदहा / गधा: खर, गर्दभ, वैशाख, नन्दन, लम्ब कर्ण।

गृह: घर, आगार, आयतन, आवा, ओक, धाम, गेह।

गाय: गो, धेनु, सुरभि।

(घ)

घट: घड़ा, कुम्भ, कलश, कुट, निप।

घन: बादल, हथौड़ा, भारी, घना।

घर: मकान, आवास, कुल, बैठने का स्थान, कार्यालय।

घी: घृत, आज्य, सर्पि, हव्य।

घोड़ा: सैधव, तुरंग, अश्व, घोटक, हय।

Notes

(च)

चन्द्रमा: इन्द्र, कलाधर, कला निधि, निशाकर, मयंक ।

चन्द्रिका: चान्दनी, ज्योत्स्ना, कौमुदी ।

चतुर: कुशल, दक्ष, निपुण, प्रवीण, विशारद ।

चपला: लक्ष्मी, बिजली, चंचल स्त्री ।

चांदी: रज, खजूर, रूप्य ।

चोर: तस्कर, दस्यु, रजनीचर ।

(छ)

छन्द: अभिलाषा, ढंग, रंग, स्वेच्छाचार ।

छली: कपटी, धूर्त, मायावी ।

(ज)

जंगल: कानन, वन, अरण्य ।

जड़: आधार, मूर्ख, अचेतन, मूल, नींव ।

जन्म: उत्पत्ति, उदय, उद्भव ।

जमुना: कालिन्दी, तरणिजा, रवितनया, कृष्णा ।

जीभ: जिह्वा, रसन, रसज्ञा ।

जलधर: सागर, बादल ।

(झ)

झण्डा: ध्वज, पताका, केतु ।

झण्डी: ध्वजा, वैजन्यती ।

झव: मछली, मीन, मत्स्य, माछ ।

झूठ: असत्य, मिथ्या, मृषा, अयथार्थ ।

(त)

तन: अंग, काया, गात, गात्र, शरीर, देह ।

तनु: देह, कृश, छोटा ।

तम: अन्धेरा, तमोगुण, पाप, राहु ।

तरंग: लहर, वीचि, उर्मि, मौज, हिलोर ।

तात: पिता, भाई, बड़ा, मित्र, प्यारा ।

तारा: वृहस्पति की पत्नी, बाली की पत्नी, आँख की पुतली, नक्षत्र ।

ताल: स्वर ताल, ताड़ का वृक्ष, जलाशय, पोखर।

तालाब: तड़ाग, सर, सरोवर, पुष्कर।

तीर: वाण, नदी का किनारा, शर, इषु।

(द)

दक्ष: चतुर, ब्रह्मा के पुत्र का नाम।

दण्ड: डंडा, सज़ा।

दल: पत्ता, पक्ष, हिस्सा, समूह, सेना।

दिन: दिवस, वार, वासर।

द्विज: ब्राह्मण, भूदेव, विप्र, पक्षी, दांत, चन्द्रमा।

दीन: गरीब, बेचारा, निर्धन, मलिन।

दुर्गा: चण्डिका, सिंहवाहिनी, चामुण्डा, कामाक्षी।

दूध: दुग्ध, अमृत, क्षीर, पय, स्तन्य।

द्रौपदी: पांचाली, श्यामा, कृष्णा, नित्य, यौवना।

(ध)

धनुष: चाप, धनु, कोदंड, पिनाक, शरासन, सारंग।

धरती: धरणी, पृथ्वी, मही, अवनि, अचला, वसुधा।

(न)

नदी: सरिता, तटनि, तरंगिणी, प्रवाहिनी।

नरक: यमपुर, यमलोक, दंड, धरालय।

नाग: नागकेशर, सर्प, हाथी।

नाव: तरी, तरणी, बेड़ी, नौका।

निर्मल: पवित्र, विमल, शुद्ध, स्वच्छ।

(प)

पंच: पाँच की संख्या, मध्यस्थ, विचारक।

पंथ: मार्ग, मत, सम्प्रदाय।

पंडित: सुधी, गोविन्द, प्राज्ञ, विचक्षण।

पक्षी: अण्डज, खग, विहग, पखेरु, शकुन्त।

पत्थर: उपल, पाषाण, पाहन, प्रस्तर।

पत्ता: दल, पत्र, पर्ण, पल्लव, किसलय।

Notes

पवनः मारुत, वायु, वात, समीर ।
परागः केसर, पुष्परज, मकरन्द, परिमल ।
पर्वतः अचल, नग, गिरि, पहाड़, भूधर ।
पानीः जल, कान्ति, प्रतिष्ठा ।
पार्वतीः गौरी, उमा, गिरिजा, दुर्गा, भवानी ।
पुत्रः तनय, बेटा, सुत, नन्दन ।
पुष्पः फूल, सुमन, प्रसून, कुसुम, पहुप ।
पेड़ः वृक्ष, विटप, तरु, पादप ।
प्रेमः अनुराग, प्रीति, प्यार, स्नेह ।

(ब)

ब्रह्माः चतुरानन, प्रजापति, विधाता, विरंचि ।
बादलः घन, जलधर, नीरद, पयोद, पयोधर ।
बालः कच, केश, कुंतल, अलक ।
बिजलीः चपला, चंचला, तड़ित, दामिनी, विद्युत् ।

(भ)

भवः महादेव, संसार, बादल, कामदेव, जन्म ।
भ्रमरः अलि, चंचरीक, भृंग, मधुकर, मधुप, मलिन्द, षट्पद ।
भास्करः शिव, सूर्य, अग्नि, सोना ।

(म)

मछलीः मत्स्य, मीन, शफरी ।
मधुः शहद, शराब, चैत का महीना, एक दैत्य ।
मयूरः मोर, शिखी, नीलकंठ, कलापी, केकी ।
मस्तकः भाल, ललाट, माथा, मौलि ।
महादेवः कैलाशनाथ, गिरिजा पति, गिरिश, चन्द्र शेखर, त्रिलोचन, नीलकण्ठ, पशुपति, भवन, भूतेश, भूतनाथ, मदनारि, महेश्वर ।
माताः अम्बा, अम्बिका, जननी, माँ ।
माधवः श्रीकृष्ण, वसन्त ऋतु, वैशाख, महुआ ।
मुखः आनन, बदन, मुँह ।
मूर्खः अज्ञ, जड़, मूढ़ ।

(र)

Notes

रक्तः खून, लहू, रुधिर, शोणित ।**रमाः** इन्दिरा, कमला, पद्मा, लक्ष्मी, श्री, विष्णुप्रिया ।**राजाः** महेन्द्र, भूपति, नरेश, नरपति, महीप ।**रात्रिः** निशा, रजनी, यामिनी, रैण, विभावरी ।

(ल)

लक्ष्मणः सौमित्र, सुमित्रानन्दन, शेषावतार, रामानुज ।**लघुः** ह्रस्व अक्षर, छोटा, नीचा, एकमात्रा वाला स्वर ।**लहरः** तरंग, उर्मी, वीचि ।**लोचनः** आँख, दृग, नयन, नेत्र ।

(व)

वंशः गन्ना, शहतीर, कुल, बांस ।**वरः** दूल्हा, वरदान, श्रेष्ठ, सुन्दर ।**वसन्तः** ऋतुराज, मधुमास, माधव, कुसुमाकर ।**विधिः** ब्रह्मा, रति, ईश्वर, भाग्य ।

(श)

शत्रुः अरि, दुश्मन, रितु, विपक्षी ।**शरीरः** काया, गात, गात्र, तन, तनु ।**श्यामः** काला, श्रीकृष्ण, सांवला ।**शिखाः** चोटी, आग की लपट, नोक, पेड़ की जड़ ।

(स)

समुद्रः सागर, उदधि, जलधि, सागर, सिन्धु ।**सरस्वतीः** भारती, वीणा, पाणि, ब्राह्मी ।**सर्पः** अहिनाग, पन्नग, भुजंग, व्याल ।**सारंगः** हिरण, सांप, मोर, बादल, कमल, हंस ।**सिंहः** केहरीस पंचानन, मृगपति, वनराज, हरि ।**सूर्यः** अंशुमाली, आदित्य, दिनकर, दिवाकर, प्रभाकर ।

(ह)

हंसः एक पक्षी, आत्मा, गुरु ।**हाथीः** गज, नाग, मतंग, हस्ती, कुञ्जर ।

Notes



Did u know? हिन्दी साहित्य में अनेकार्थक शब्दों का प्रयोग अधिकतर काव्य में ही मिलता है।

स्व:मूल्यांकन

निम्न कथनों में से सत्य और असत्य बताएँ:

1. अनेकार्थक शब्द का अर्थ केवल एक ही अर्थ वाला शब्द होता है।
2. हिन्दी साहित्य में अनेकार्थक शब्दों का प्रयोग काव्य में अधिक किया जाता है।
3. अनुचर का एक अर्थ दास है और दूसरा धरती है।

8.3 सारांश (Summary)

- जिन शब्दों से एक से अधिक अर्थ का बोध होता है, उन्हें अनेकार्थक शब्द कहते हैं।
- अर्थ विस्तार में कभी-कभी शब्द नवीन अर्थ धारण करते जाते हैं इस प्रकार एक ही समय में एक शब्द के कई अर्थ चलते रहते हैं।
- अनेकार्थक शब्दों का अधिकतर प्रयोग काव्य के रसास्वादन के लिए होता है।

8.4 शब्दकोश (Keywords)

अपवाद: निन्दा, नियम से बाहर।

आतुर: उत्सुक, विकल।

8.5 अभ्यास प्रश्न (Review Questions)

1. अनेकार्थक शब्द से क्या तात्पर्य है? सोदाहरण स्पष्ट करें।
2. इकाई में दी गई तालिका के अतिरिक्त कोई 10 अनेकार्थक शब्द लिखें।

उत्तर: स्व:मूल्यांकन

1. असत्य
2. सत्य
3. असत्य

8.6 संदर्भ पुस्तकें (Further Readings)



Books

सरल भाषा विज्ञान — डॉ. मनमोहन गौतम, हिन्दी साहित्य संसार।

परिष्कृत हिन्दी व्याकरण — बद्रीनाथ कपूर, प्रभात प्रकाशन।

अभिनव हिन्दी व्याकरण — रूपनारायण त्रिपाठी, श्याम प्रकाशन।

इकाई 9: तकनीकी शब्दावली – अंग्रेजी से हिन्दी

Notes

अनुक्रमणिका (CONTENTS)

उद्देश्य (Objectives)

प्रस्तावना (Introduction)

9.1 तकनीकी शब्दावली

9.1.1 तकनीकी शब्दावली का अर्थ एवं परिभाषा

9.1.2 तकनीकी शब्दावली का स्वरूप

9.1.3 अंग्रेजी से हिन्दी के तकनीकी शब्द

9.2 सारांश (Summary)

9.3 शब्दकोश (Keywords)

9.4 अभ्यास प्रश्न (Review Questions)

9.5 संदर्भ पुस्तकें (Further Readings)

उद्देश्य (Objectives)

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी:

- तकनीकी शब्दावली के अर्थ एवं परिभाषा का ज्ञान प्राप्त करेंगे।
- तकनीकी शब्दावली के स्वरूप को जान सकेंगे।
- अंग्रेजी से हिन्दी शब्दों के लिए प्रयुक्त होने वाले तकनीकी शब्दों से परिचित होंगे।

प्रस्तावना (Introduction)

परिवर्तन प्रकृति का नियम है भाषा भी परिवर्तन की प्रक्रिया से अछूती नहीं रह सकती। आवश्यकता और समयानुसार हिन्दी भाषा ने भी अपना चेहरा और चरित्र बदला। भाषा की समृद्धता की यही पहचान है कि उसका शब्द भण्डार व्यापक हो, प्रसंगों और संदर्भों के अनुकूल भाव अभिव्यक्ति की क्षमता हो क्योंकि हिन्दी अब व्याकरण, भाषा विज्ञान, साहित्यिक अभिव्यक्ति तथा समीक्षापरक पारम्परिक स्वरूप को छोड़कर “कामकाज” की भी भाषा बनी है। भाषा का प्रयोग जितने अधिक क्षेत्रों में विस्तृत और व्यापक होता जाता है उतने ही क्षेत्रों के अनुकूल उसकी शब्दावली का विकास होता जाता है।

9.1 तकनीकी शब्दावली

भाषा की सार्थक एवं स्वतंत्र इकाई को शब्द कहते हैं। प्रत्येक भाषा की अपनी कुछ ध्वनियाँ होती हैं। एक या एक से अधिक ध्वनियों के मेल से अक्षर बनते हैं वास्तव में ये अक्षर एक पूर्ण ध्वनि तो

Notes

होते हैं लेकिन अपने आप में कोई अर्थ नहीं रखते। जैसे यदि 'र' और 'थ' दो अक्षरों का अलग-अलग उच्चारण करें, तो सुनने वाले को कोई अर्थ स्पष्ट नहीं होगा, लेकिन दोनों अक्षरों के समूह से निश्चित अर्थ की प्रतीति होगी जैसे— रथ। अतः अक्षरों के समूह से शब्द बनते हैं जो अपने आपमें सार्थक होते हैं, लेकिन अक्षरों का हर समूह शब्द नहीं हो जाता। जैसे 'तरल' के स्थान पर 'लरत' अथवा 'रलत' लिखा जाए तो यह निरर्थक अक्षर समूह होगा।

9.1.1 तकनीकी शब्दावली का अर्थ एवं परिभाषा

तकनीकी शब्द वे शब्द होते हैं जिनकी अपनी एक निश्चित परिभाषा हो अर्थात् जिनकी सीमाएँ बांध दी गई हों। जिनका क्षेत्र एक निश्चित अर्थ तक सीमित कर दिया गया हो और उस क्षेत्र विशेष में उन्हें उसी अर्थ के रूप में प्रयोग किया जाता हो, किसी अन्य अर्थ में नहीं। उदाहरणतः खाता, बचत खाता, लेखा आदि। इस प्रकार के शब्दों का प्रयोग 'बैंकिंग व्यवहार-क्षेत्र' में ही स्पष्ट होता है। इस तरह तकनीकी शब्द से तात्पर्य उस शब्द से है जो किसी क्षेत्र विशेष से संबंधित हो और जिसका अर्थ परिसीमित कर दिया गया हो।



Notes ज्ञान-विज्ञान की असीम परिधि को व्यक्त करने वाली विशेष शब्दावली, तकनीकी शब्दावली की संज्ञा पाती है।

विद्वानों ने तकनीकी शब्दावली को अपने-अपने ढंग से तराश कर पारिभाषित करने की कोशिश की है। इन सभी परिभाषाओं को यदि परखकर देखा जाए तो हम निष्कर्ष के इस पड़ाव पर पहुँचते हैं कि इनमें से कुछ कई स्तरों पर अधूरी और आंशिक हैं कई अपने अन्तर्विरोधों की शिकार हैं, फिर भी, सभी परिभाषाओं को नकारना संभव नहीं। कुछ प्रमुख परिभाषाओं को निम्नवत देखा जा सकता है—

1. रेण्डम डिक्शनरी ने पारिभाषिक शब्दावली को परिभाषित करते हुए लिखा है कि,

A word or phrase used in definite or precise sense in some particular subject as a science or are a technical impression.

अर्थात् विशिष्ट विषय जैसे विज्ञान अथवा कला विषय की तकनीकी अभिव्यक्ति के लिए निश्चित अथवा विशिष्ट अर्थ में प्रयुक्त एक शब्द, अधिकांशतः साधारण शब्द होते हैं।

2. डॉ. देवेन्द्र नाथ शर्मा का विचार है कि तकनीकी शब्दावली ही वह कच्चा माल है, जिससे कुछ भी बनाया जा सकता है। शिक्षा में, शासन में, विधि में, चाहे कहीं भी हिन्दी का प्रयोग करना है, तो उपयुक्त शब्दावली होनी चाहिए और उसके अभाव में न तो कार्यालयों में कार्य ही हो सकता है, न विश्वविद्यालयों में शिक्षा दी जा सकती है और न न्यायालयों में न्याय की व्यवस्था संभव है।
3. डॉ. भोलानाथ तिवारी के अनुसार पारिभाषिक शब्द ऐसे शब्दों को कहते हैं, जो सामान्य व्यवहार की भाषा के शब्द न होकर ज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों (जैसे— रसायन, भौतिकी वनस्पति विज्ञान, समाज शास्त्र, अलंकार शास्त्र, तर्कशास्त्र, राजनीति शास्त्र, अर्थशास्त्र, मनोविज्ञान, आदि) के होते हैं तथा विशिष्ट ज्ञान, विज्ञान या शास्त्र में जिनकी अर्थ सीमा पारिभाषित या निश्चित रहती है।

4. डॉ. दंगल झाल्टे का कहना है कि जो शब्द सामान्य व्यवहार की भाषा में प्रयुक्त न होकर ज्ञान-विज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों में विषय एवं संदर्भ के अनुसार विशिष्ट, किन्तु निश्चित अर्थ में प्रयुक्त होते हैं, उन्हें पारिभाषिक शब्द कहते हैं।
5. डॉ. रघुवीर के अनुसार, तकनीकी शब्द उनको कहते हैं जिसकी विशेष तकनीक हो, जिसकी सीमाएँ बाँध दी गई हों और जिनकी सीमा नहीं बाँधी जाती, वे साधारण शब्द होते हैं।
6. डॉ. माईदयाल जैन के विचार से तकनीकी शब्दों से अभिप्राय उन शब्दों से है, जो किसी विशेष विज्ञान, शिल्प, रेल, तार-डाक, राज शासन, न्याय, साहित्य तथा कला आदि में किसी विशेष अर्थ को बताते हैं।

उपरोक्त परिभाषाओं के अध्ययन के बाद हम कह सकते हैं कि पारिभाषिक शब्द दैनिक व्यवहार के शब्द नहीं होते। वस्तुतः ज्ञान की विशिष्ट या निश्चित शाखा में दक्षता प्राप्त करने वाले लोग ही इस तरह के शब्दों का इस्तेमाल करते हैं।



Task

डाक-तार, रेल विभाग में प्रयुक्त होने वाले कुछ तकनीकी शब्दों के उदाहरण दीजिए।

9.1.2 तकनीकी शब्दावली का स्वरूप

तकनीकी शब्दावली का निर्माण भाषा की आधुनिकीकरण की प्रक्रिया का अभिन्न अंग है। भाषा के आधुनिकीकरण का संबंध भाषा के नवीनीकरण से है, जिसके अन्तर्गत भाषा की क्षमता को कालानुसरण की क्षमता से संबंध स्थापित करते हुए समय और नित्य नूतन संदर्भों में भाषा को सक्षम, समर्थ बनाने का प्रयास किया जाता है।

किसी भी तकनीकी भाषा का व्याकरण उस भाषा के सामान्य व्याकरण से अलग नहीं होता। वह उसी का अंग होता है और उसी के सामान्य नियमों से परिचालित होता है। तकनीकी शब्दों का जन्म सामान्य शब्दों की कोख से ही होता है। दोनों के बीच मूल अन्तर अर्थ-संरचना के स्तर पर ही होता है। व्याकरण और भाषा संरचना की दृष्टि से सामान्य शब्द और तकनीकी शब्द में कोई अंतर नहीं होता।

निम्न पक्षों के आधार पर तकनीकी शब्दों के स्वरूप को आसानी से समझा जा सकता है।

1. **विषय सापेक्षता:** तकनीकी शब्द किसी न किसी रूप में विषय-क्षेत्र से जुड़ा होता है। जैसे—बचत खाता, चालू खाता, रेखित खाता आदि शब्दों के अभीष्ट अर्थ बैंकिंग व्यवहार क्षेत्र में ही स्पष्ट होते हैं।
2. **पारदर्शी और अपारदर्शी:** तकनीकी शब्द पारदर्शी और अपारदर्शी दोनों प्रकार के होते हैं। कुछ तकनीकी शब्दों का अर्थ स्वतः स्पष्ट होता है जैसे — शरीर-रचना (anatomy), स्त्री रोग विज्ञान (Gynaecology), आकस्मिक अवकाश (Casual leave)।
3. **अर्थ का सूक्ष्मीकरण:** तकनीकी शब्द किसी सूक्ष्म या विशिष्ट अर्थ का वाचक बन जाता है। विज्ञान शब्दार्थ को सूक्ष्मता की ओर प्रस्तुत करता है तथा साहित्य शब्दार्थ को विस्तार की ओर ले जाता है। विज्ञान शब्दों के अर्थ को संकुचित कर देता है। जैसे— चाल (speed),

Notes

वेग (velocity), आदि। वह 'ताप', 'गर्मी', 'उष्मा' और 'उष्णता' के अर्थों को संकुचित कर उनके बीच भेद करता है।

इसके विपरीत सामान्य शब्द लोक व्यवहार की विविधता के फलस्वरूप अनेकार्थता की ओर शब्दों को ले जाता है। जैसे— लौह-पुरुष, लंगड़ी मानवता, आदि।

4. $\text{vfi}^{\text{h}}\text{k}^{\text{e}}\text{k}^{\text{k}}\text{f}^{\text{k}}\text{f}^{\text{k}}$ तकनीकी शब्द अभिधार्थ प्रधान होते हैं। इनमें लक्षणा या व्यंजना नहीं होती। जबकि सामान्य शब्द आवश्यकतानुसार अभिधा, लक्षणा या व्यंजना कोई भी रूप ग्रहण कर सकते हैं। जैसे — आशा की किरणें, तुम उल्लू हो, बदचलन इच्छाएँ। सभी के भीतर लक्षणा है। इसके विपरीत तकनीकी या पारिभाषिक शब्दों में इन शब्दों का अलग अर्थ होगा जैसे, भौतिक विज्ञान में 'किरण' का अभिधार्थ — 'प्रकाश की किरण' के अर्थ में है न कि 'आशा की किरण'।
5. $\text{<hdj.k } \frac{1}{4}\text{vfk}^{\text{v}}\text{kjki.k}^{\text{h}}$ जब मौलिक चिन्तक या सर्जनकर्ता अन्वेषक किसी वस्तु अथवा नयी संकल्पना को जन्म देता है तो वही उस संकल्पना का नामकरण भी करता है वह अपनी भाषा में मौजूद निकटतम शब्दों को लेकर उनमें नया शब्द जोड़कर कोई शब्द बना लेता है और उसी में अपना नया अर्थ आरोपित कर देता है। जैसे— वीडियो, टेप, सॉफ्टवेयर, हार्डवेयर, कम्प्यूटर वाइरस आदि शब्द नवीन तकनीकी प्रक्रिया के अर्थ में रूढ़ हुए हैं। निरन्तर व्यवहार में प्रयुक्त होने के कारण ये ग्राह्य बन जाते हैं।

जो शब्द व्यवहार और प्रयोग में नहीं आ पाते वे समय की धार के प्रवाह में लुप्त हो जाते हैं। जैसे — पंजीकरण, परिसर, पर्यावरण आदि अनेक शब्द तकनीकी अर्थों में प्रयुक्त होकर सामाजिक मान्यता प्राप्त कर चुके हैं।



Did u know? स्वतंत्र देश की अपनी राजभाषा में तकनीकी शब्दों का महत्त्व एवं उपयोगिता अधिक हो जाती है क्योंकि शासन संबंधी सभी कार्य उसकी अपनी भाषा में होते हैं।

तकनीकी शब्द भाषा की प्रकृति और उच्चारण पद्धति के अनुकूल होना चाहिए। जिन शब्दों को अन्य भाषाओं से ग्रहण किया गया है परन्तु हिन्दी भाषा में प्रयुक्त होते हैं, वे शब्द तो उसकी प्रकृति में ढल गए हैं लेकिन जो अधिक प्रयोग में नहीं आते, उनका अनुकूलन अपेक्षित होता है।

9-1-3 $\text{vix}^{\text{t}}\text{h } \text{I} \text{ fgUnh } \text{d} \text{ rduhdh } ^{\text{'k}}\text{Cn}$

$\text{ifj}^{\text{'k}}\text{V}$
 $\text{ikfj}^{\text{Hkkf}}\text{'kd } ^{\text{'k}}\text{Cn} \& \text{I} \text{ xg}$
 $\text{vix}^{\text{t}}\text{h} \& \text{fgUnh}$

A

Ablaut	अपिश्रुति
Accent	स्वराघात
Accented	सस्वर, सबल

		Notes
Accoustic quality	श्रावणगुण	
Acute	उदात्त	
Adjective	विशेष	
Adverb	क्रियाविशेषण	
Affix	प्रत्यय	
Affricate	घर्ष-स्पर्श, स्पर्श-संघर्षी, स्पर्श-घर्ष	
Agglutinating	संयोग-प्रधान, प्रत्यय-प्रधान	
Agglutination	संयोग	
Agreement Theory	स्वीकारवाद, निर्णयसिद्धान्त	
Alveolar, Post-dental	वस्व्य, वत्सर्य	
Alveoli	वस्व, वत्स	
Analogy	औपम्य, सादृश्य, उपमान	
Analytic	व्यवहित	
Anaptyxis	युक्त-विकर्ष, विप्रकर्ष (विशेष प्रसंग में)	
Anthropology	मानव-विज्ञान	
Apocope	अन्त्यवर्ण-लोप	
Apophony, Gradation, Ablaut	अपश्रुति, अक्षरावस्थान, अक्षर श्रेणीकरण	
Aphaeresis (Aphesis)	आदिवर्ण-लोप	
Arbitrary Connection	यदृच्छा सम्बन्ध	
Archaeology	पुरातत्व	
Archaic	आर्ष	
Art	कला	
Artical	उपपद	
Articulate	व्यक्त	
Articulate Sound	व्यक्त-ध्वनि	
Articulation	उच्चारण	
Aspirated Sound	प्राण-ध्वनि	
Aspirated	सप्राण, महाप्राण	
Aspirated stop	सप्राण स्पर्श	

Notes

Aspiration	प्राण (सप्राणत्व)
Assibilation	ऊष्मीकरण
Assimilation	सावर्ण्य, सारूप्य
Association	संसर्ग अर्थात् सम्बन्ध, साहचर्य

B

Back of the Tongue	पश्च-चिह्वा, जिह्वा-मध्य
Base	प्रकृति, प्रतिपदक
Belonging to the same Organ of Speech	संस्थान
Bilabial	द्वयोष्ठ्य
Blade of the Tongue	जिह्वाफलक, जिह्वाग्र
Bow-wow Theory	अनुकरणमूलकतावाद
Breath	प्राण-वायु, श्वास, ऊष्मा
Breathed	श्वास
Breathe in	श्वास
Breathe out	निःश्वास, प्रश्वास
Breath-group	श्वासवर्ग
Building language	रचनात्मक भाषा

C

Cardinal Vowel	प्रधान-स्वर, प्रमाणाक्षर, प्रधान अक्षर, मानाक्षर
Case	कारक
Causative	प्रेरणार्थक धातु
Cavity from lip up to Larynx	वाग्यंत्र, आस्य
Central Group	केन्द्रवर्ती समुदाय
Central Vowel	मध्यस्वर
Cerebral	मूर्धन्य
Cerebralisation	मूर्धन्यभाव
Cerebrum	मूर्धा
Change	परिवर्तन, विकार

Confirmation	पुष्टि	Notes
Consolidated Fund	समेकित निधि	
Conveyance Allowance	वाहन भत्ता	
Covering Letter	सहपत्र	

D

Dealing Assistant	संबंधित सहायक
Dearness Allowance	मंहगार्ई भत्ता
Department	विभाग
Deputy Secretary	उपसचिव
Dissent	असहमति, विसम्मति
Duplicate	दूसरी प्रति, अनुलिपि
Duration	अवधि
Duty	काम, कर्तव्य, शुल्क

E

Empty word	रिक्त शब्द
Enumeration	नामोद्देश
Epenthesis	अपिनिहित
Epiglottis	अभिकाकल
Esperanto	ऐसपिरेंतो
Ethnology	वंशान्वय-शास्त्र
Etymology	व्युत्पत्ति-शास्त्र
Euphonic Combination	संधि, संहिता
Eurasia	यूरेशिया
Evolution Theory	विकासवाद
Example	लक्ष्य, उदाहरण
Exception	अपवाद
Exclusion	बहिर्भाव
Exhale	प्रश्वास, निःश्वास

Notes	Expansion of Meaning	अर्थ-विस्तार
	Experimental	परीक्षा-मूलक
	Explanatory Grammar	व्याख्यात्मक व्याकरण
	Explosion of one Indivisible Sentence	अखंड-वाक्य-स्फोट
	Explosive Sound	स्फोट वर्ण
	Expression	अभिव्यक्ति
		F
	Factor	कारक
	Facts	तथ्य
	False Analogy	अंधसादृश्य
	False Palate	कृत्रिम तालू
	First Teutonic Sound Shifting	प्रथम वर्ण परिवर्तन
	Family of Speech	भाषा-कुल
	Flapped	उत्क्षिप्त
	Formal and Grammatical Derivation	अलौकिक अथवा शास्त्रीय व्युत्पत्ति
	Formative Affix	रचनात्मक उपसर्ग तथा प्रत्यय (रचनात्मक अनुबंध)
		G
	Group of Speech	भाषा-समुदाय
	Gullet	भोजन नालिका
	Guttur	कंठ
	Guttural	कंठ्य
	Gutturo-palatal	कंठ-तालव्य
	Gutturo-labial	कंठयोष्ठ्य
	Dack-guttural	जिह्वामूलीय
		H
	Haplology	अक्षर-लोप, सरूपाक्षर-नाश
	Half close	अर्द्धसंवृत
	Half open	अर्द्धविवृत

		Notes
Hard	कठोर	
Hard Palate	कठोर तालु	
Hiatus	विवृति, विच्छेद	
High Grade	उच्च श्रेणी, उच्चावस्था	
High Vowel	उच्चस्थानीय स्वर	
Hieroglyphics	चित्रलिपि	
Historical	ऐतिहासिक	
Historical Syntax	ऐतिहासिक वाक्य-विचार	
History	इतिहास	
Hustorical Etymology	ऐतिहासिक व्युत्पत्ति	
Historical Grammar	ऐतिहासिक व्याकरण	
Hissing Sound	ऊष्म-ध्वनि	
Holophrastic	अव्यक्त योगात्मक	
Homonym	भिन्नार्थक शब्द	
Homophone	समध्वनिक शब्द	

I

Idea	योजना, कल्पना
Ideography	भावलिपि
Imitation of Sounds	अव्यक्तानुकरण, शब्दानुकृति
Imitational	अनुकृति, अनुकरणमूलक
Imperfect Imitation	अपूर्ण, अनुकरण
Implication	अन्तर्भाग, निहितार्थ, अन्तर्भावितार्थ
Inorganic	निरिन्द्रिय, निरवयव
Inscription	उत्कीर्ण लेख
Insertion	अंतर्न्यास
Instrument	करण
Intellectual Law	बौद्ध नियम
Intention, Sense	अभिप्राय, विवेक
Interjectional	मनोभावाभिव्यंजक, विस्मयादिबोधक, अनुभावक

Notes	Intermediate, Mediate	अंतर्वर्ती
	Internal Inflectional	अंतर्मुखी श्लिष्टि
	International Phonetic Association	अन्तर्राष्ट्रीय ध्वनि-परिषत्
	Institution	संस्थान
	Irregularity	अनियमितता
	Isolating	व्यासप्रधान, अयोगात्मक
	Isolating Stage	अयोगात्मक अर्थात् धातु अवस्था
	Isophone	ध्वनिरेखा
		J
	Job	नौकरी, कार्य
	Joining Date	कार्य आरम्भ तारीख
	Joint Secretary	संयुक्त सचिव
		K
	Knot Writing	ग्रंथ लिपि
	Kymograph	ध्वनियंत्र
		L
	Labial	ओष्ठ्य
	Language	भाषा
	Language in General	भाषा-सामान्य
	Larynx	स्वर-यन्त्र
	Laryngeal Explosive (or Spirit-us lenis)	काकल्य स्पर्श
	Lateral (Side Consonant)	पार्श्वक
	Law	नियम
	Law of Differentiation	भेदभाव का नियम
	Law of Polarity	ध्रुवाभिमुख का नियम
	Law of Palatisation	तालव्य भाव का नियम
	Lax	शिथिल स्वर

	M	Notes
Method	प्रक्रिया	
Middle of the Tongue	जिह्वामध्य	
Middle Indo-Aryan	मध्यकालीन भारतीय आर्य भाषा	
Mixed	मिश्र	
Mixed Vowel	मिश्रित स्वर	
Mono-Syllabic	एकाक्षर, एकाच्	
Mono-Synthetic	एक-संहित	
More	अत्यधिक मात्रा	
Morpheme	रूप-मात्र	
Morphology	रूप-विचार	
Morphological	आकृतिमूलक	
Morphological Change	रूप-परिवर्तन	
Mouth	आस्य, वाग्यंत्र	
Mouth Cavity	मुख-विवर	
Musical Accent	संगीतात्मक स्वराघात	
Mutual Assimilation	पारस्परिक व्यंजन समीकरण	
Mute	स्पर्श	
Mutation, Vowel-Mutation, Umlaut	अभिभ्रुति	
	N	
Nasal	अनुनासिक, सानुनासिक	
Nasal Cavity	नासिका-विवर	
Nasalization	अनुनासिकता	
Neutral Vowel	उदासीन स्वर	
Neck	ग्रीवा	
Nationality	राष्ट्रीयता	
Necessary Action	आवश्यक कार्यवाही	
Non-objection	अनापत्ति	

Notes

Objection
 Offence
 Offer
 Office
 Office Copies
 Office Hours
 Option
 Original Copy
 Outstanding
 Overtime

Palaeontology
 Part
 Party Incorporative
 Particle
 Particular
 Patois
 Penultimate
 Person
 First
 Second
 Third
 Pharynx
 Pharyngeal
 Philology
 Philosophic Study

O

आपत्ति
 अपराध
 नियुक्त प्रस्ताव
 कार्यालय, दफ्तर, पद
 कार्यालय प्रति
 कार्यालय समय
 विकल्प
 मूल प्रति
 बकाया, उत्कृष्ट
 अतिरिक्त समय

P

प्राचीन शोध
 अंग
 आंशिक प्रश्लिष्ट योगात्मक
 निपात
 विशेष
 बोली
 उपधा, उपांत्य
 पुरुष
 उत्तम
 मध्यम
 अधम
 कंठबिल, कंठमार्ग, गलबिल
 उपालिजिह्व
 भाषा-विज्ञान
 दार्शनिक अध्ययन

		Notes
Phoneme	ध्वनि-श्रेणी, ध्वनिमात्र, ध्वनिग्राम, ध्वनितत्त्व	
Phonetic	ध्वन्यनुरूप	
Phonetic Contamination	ध्वनि-सम्मिश्रण	
Phonetic Change	ध्वनि-परिवर्तन	
Phonetic Law	ध्वनि-नियम	
Phonetics	ध्वनि-शास्त्र	
Phonogram	ध्वनि-लिपि	
Phonology	ध्वनि-विचार, ध्वनि-विज्ञान	
Phonetic Tendency	ध्वनि प्रवृत्ति	
Phonetic Transcription	ध्वन्यानुकूल अनुलिपि	
Phonetic Script	वैज्ञानिक लिपि	
Phrygian	फ्रीजियन (एक प्राचीन देश)	
Physical	भौतिक	
Physics	भौतिक-शास्त्र	
Honorific	आदरवाचक	
Pronunciation	उच्चारण	
Prothesis	आदिस्वरागम	
Q		
Quality (of a Vowel)	स्थानभेद	
Quantity (of a Vowel)	मात्राकाल	
Qualitative Ablaut	गौण अक्षरावस्थान	
Quantitative Ablaut	मात्रिक अपश्रुति	
R		
Regressive Dissimilation	पश्चगामी विषमीकरण	
Regressive Assimilation	पर-सावर्ण्य, पर-सारूप्य	
Retroflex	मूर्द्धन्य	
Rhmatology	अर्थ-विचार	

Notes	Rolled	लुठित या लोड़ित
	Root	धातु
	Primary	मूल
	Secondary	यौगिक
	Denominative	नाम
	Compound	संयुक्त
	Onomatopoeic	अनुकरणमूलक
	Root of the Tongue	जिह्वामूल
	Root of the Teeth	दंतमूल
	Root Theory	धातु-सिद्धांत
	Rounded	वृत्ताकार
		S
	Sanskritic	सांस्कृतिक
	Saving of effort	प्रयत्न-लाघव
	Science	विज्ञान
	Script	लिपि
	Secondary	तद्धित
	Second Teutonic Sound-Shifting	द्वितीय वर्ण-परिवर्तन
	Semanteme	अर्थ-तत्त्व
	Semantic Change	अर्थ-परिवर्तन
	Semantics	अर्थ-विचार, अर्थ-विज्ञान, शब्दार्थ-विज्ञान
		T
	Transference of Meaning	अर्थादेश
	Transliteration	प्रत्यक्षरीकरण, अनुलिपि
	Trilled	जिह्वोत्कंपी
	Tri-Syllabic	त्र्यक्षर
	Tenues	अघोष (विशेष प्रसंग में)

	U	Notes
Umlaut	अभिश्चुति	
Unaspirated	अल्पप्राण	
Unconditional	स्वयंभू	
Underived	निर्याग	
Unit	चरमावयव, अवयुति	
Unlike	विरूप	
Unrounded	अवृत्ताकार	
Unvoiced	अघोष	
Urgeschichte	प्रागैतिहासिक खोज	
Uvula	अलिजिह्व, कौवा	
Uvular	जिह्वामूलीय	
	V	
Velar	कंठ्य	
Verb	क्रिया	
Verbal Noun	क्रियार्थक संज्ञा	
Vibration (With)	सघोष, घोषवत्, घोष	
Vibration	कंपन, घोष	
View	मति	
Visarga	विसर्जनीय	
Vocal Chords	स्वर-तंत्री, ध्वनि-तंत्री	
Vocabulary	शब्द-समूह	
Vocalic Ablaut	स्वरीय अपिश्चुति, अपिश्चुति	
Vocalization	घोषीकरण	
Voice	वाच्य	
	W	
Waiting List	प्रतीक्षा सूची	
Warning	चेतावनी	

Notes

Working Days	कार्य दिवस, काम के दिन
Working Hours	कार्य समय, काम के घण्टे
Working Knowledge	कार्य साधक ज्ञान
Write off	बट्टे खाते डालना
Wind-pipe	खास-प्रणाली, श्वासा-मार्ग
Word	शब्द
Without Vibration	अघोष

X

Xenogamy	दो पौधों में गर्भाधान क्रिया
Xebec	तीन मस्तूलों का छोटा जहाज
Xylograph	लकड़ी के ठप्पे की छाप
Xyter	हड्डी खुरचने का औजार

Y

Yo-he-ho Theory	श्रमपरिहरण सिद्धांत
Yore	प्राचीन काल
Yokel	देहाती

Z

Zenith	शिखर
Zero Grade	शून्य श्रेणी
Zone	अंचल
Zoology	प्राणि-विज्ञान
Zoo	चिड़ियाघर

स्व:मूल्यांकन

रिक्त स्थान भरें:

1. तकनीकी शब्द वह है जिनकी अपनी एक हो।
2. तकनीकी शब्द एक विशेष से संबंधित होते हैं।

3. तकनीकी शब्द और विभाग में किसी विशेष अर्थ को बताते हैं।
4. तकनीकी शब्दों को और के आधार पर आसानी से समझा जा सकता है।

Notes

9.2 सारांश (Summary)

- तकनीकी शब्दावली में वे शब्द होते हैं जिनकी अपनी एक निश्चित परिभाषा होती है। जिनका अर्थ एक निश्चित अर्थ तक सीमित कर दिया गया होता है और उस क्षेत्र विशेष में उन्हें उसी अर्थ में प्रयोग किया जाता हो। उदाहरणतः खाता, बचत खाता, लेखा आदि।
- विभिन्न काल खण्डों का भाषायी इतिहास हमें यह बताता है कि पारिभाषिक शब्द अपनी सीमा और दायरे में सहज-सामान्य बोलचाल की भाषा में कतई प्रयुक्त नहीं होते, बल्कि इस तरह के शब्दों का प्रयोग बेलाग रूप में, किसी अर्थ विशेष के संदर्भ और संकेत के रूप में ही हुआ करता है।
- तकनीकी शब्दावली से कुछ भी बनाया जा सकता है शिक्षा, शासन, विधि हर क्षेत्र में कहीं भी हिन्दी का प्रयोग करने के लिए उपयुक्त शब्दावली की आवश्यकता पड़ती है जिसके अभाव में कार्य पूर्ण नहीं हो सकता।
- तकनीकी शब्द किसी विशेष क्षेत्र उदाहरणतः विज्ञान, शिल्प, रेल, तार-डाक, न्याय, साहित्य, कला क्षेत्र आदि में विशेष अर्थ को बताते हैं।
- जीवन में नए-नए आविष्कार एवं अनेकानेक नई वस्तुओं के आने से तत्संबंधी क्रियाओं और विचारों में नए-नए शब्दों का प्रवेश होता जा रहा है। परिणामस्वरूप अन्य विदेशी भाषाओं तथा अंग्रेजी के अनेक शब्द हिन्दी शब्दावली के प्रमुख अंग बन गए हैं।
- डॉ. भोलानाथ तिवारी कहते हैं कि विभिन्न शास्त्रीय विषयों की अभिव्यक्ति के लिए पारिभाषिक शब्द बड़े ही महत्वपूर्ण होते हैं। शास्त्रीय विषयों में यह बहुत आवश्यक होता है कि वक्ता या लेखक जो कहना या लिखना चाहे, श्रोता या पाठक तक वह बात ठीक उसी रूप में बिना अर्थ-विस्तार या अर्थ-संकोच के स्पष्ट एवं असंदिग्ध रूप में पहुँच जाए। ऐसा तभी हो सकता है जब उस विषय के संकल्पना सूचक या वस्तुसूचक पारिभाषिक शब्द सुनिश्चित हों।

9.3 शब्दकोश (Keywords)

प्रवृत्त: ले जाना।

उपयुक्त: सही।

9.4 अभ्यास प्रश्न (Review Questions)

1. पारिभाषिक शब्दावली से आप क्या समझते हैं? संक्षेप में बताएँ।
2. तकनीकी शब्दावली का अर्थ और परिभाषा लिखते हुए उसके स्वरूप को स्पष्ट करें।

Notes

3. निम्नलिखित पर नोट लिखें:
(क) तकनीकी शब्दावली में अर्थ का सूक्ष्मीकरण
(ख) तकनीकी शब्दावली में अभियार्थ
(ग) तकनीकी शब्दावली में रुढ़ीकरण
4. तकनीकी शब्दावली में अंग्रेजी से हिन्दी में प्रयुक्त बीस शब्द लिखें।

उत्तर: स्व:मूल्यांकन

- | | |
|------------------------|---------------------------------------|
| 1. निश्चित परिभाषा | 2. क्षेत्र |
| 3. रेल, तार-डाक, न्याय | 4. विषय सापेक्षता पारदर्शी, अपारदर्शी |

9.5 संदर्भ पुस्तकें (Further Readings)



प्रयोजनमूलक हिन्दी – माधव सोनटक्के, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।

सरल भाषा विज्ञान – डॉ. मनमोहन गौतम, हिन्दी साहित्य संसार, दिल्ली।

प्रयोजनमूलक हिन्दी की नयी भूमिका – कैलाश नाथ पाण्डेय, लोक भारती प्रकाशन, दिल्ली।

इकाई 10: तकनीकी शब्दावली – हिन्दी से अंग्रेजी

Notes

अनुक्रमणिका (CONTENTS)

उद्देश्य (Objectives)

प्रस्तावना (Introduction)

10.1 तकनीकी शब्दावली

10.1.1 तकनीकी शब्दावली का निर्माण

10.1.2 तकनीकी शब्दावली की विचारधाराएं

10.1.3 हिन्दी से अंग्रेजी के तकनीकी शब्द

10.2 सारांश (Summary)

10.3 शब्दकोश (Keywords)

10.4 अभ्यास प्रश्न (Review Questions)

10.5 संदर्भ पुस्तकें (Further Readings)

उद्देश्य (Objectives)

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी:

- तकनीकी शब्दावली के निर्माण की प्रक्रिया जानने में सक्षम होंगे।
- तकनीकी शब्दावली सम्बन्धी हिन्दुस्तानवादी विचारधारा को जानेंगे।
- हिन्दी के शब्दों की अंग्रेजी में तकनीकी शब्दावली जानने में निपुणता प्राप्त करेंगे।

प्रस्तावना (Introduction)

परिवर्तन की प्रक्रिया और आवश्यकता के कारण हिन्दी भाषा ने भी धीरे-धीरे अपना चेहरा और चरित्र बदलना शुरू किया। अपने पारंपरिक स्वरूप को छोड़कर हिन्दी कामकाज की भाषा भी बन गई है। हिन्दी तकनीकी शब्दावली का प्रयोग दैनिक व्यवहार, विचार-विनिमय, औपचारिक रूप से पढ़ने लिखने के लिए भी दिन-प्रतिदिन बढ़ रहा है।

10.1 तकनीकी शब्दावली

तकनीकी शब्दावली के अन्तर्गत उसके निर्माण, विचारधारा तथा हिन्दी से अंग्रेजी के तकनीकी शब्द की जानकारी प्राप्त करेंगे। किसी विशिष्ट ज्ञान शाखा की विशिष्ट शक्ति के लिए प्रयुक्त, विशिष्ट पारिभाषिक शब्द कहलाता है। जीवन में नए-नए आविष्कार एवं अनेकानेक नयी वस्तुओं के आने से कई विदेशी भाषाओं तथा अंग्रेजी के अनेक शब्द हिन्दी शब्दावली के प्रमुख अंग बन गए हैं।

Notes

10.1.1 तकनीकी शब्दावली का निर्माण

तकनीकी शब्दावली का निर्माण किस प्रक्रिया से किया जाता है? इस जिज्ञासा को शान्त करने के लिए इसकी शब्द निर्माण की युक्तियों को जानना आवश्यक है। जिन शब्दों के लिए हिन्दी या अन्य भारतीय भाषाओं में पर्याय प्रचलित हैं उनके लिए उन पर्यायों का ही इस्तेमाल किया जाता है। उदाहरण के लिए 'hour' का समकक्ष 'घंटा' शब्द मौजूद है वैसे तो उसे ही रखा गया है। जबकि 'मिनट' और 'सैकेण्ड' आदि शब्दों को यथावत भी ग्रहण किया गया है। इसके लिए उनके अर्थ को कभी संकुचित किया जाता है तो कभी विस्तृत करना पड़ता है। इस प्रकार विभिन्न श्रेणियों के शब्दों को मिलाकर तकनीकी शब्दावली को विकसित किया गया है। जिसमें परम्परागत, आगत: और नवनिर्मित तीनों तरह के शब्द होते हैं।



Notes तकनीकी, शब्दावली में अंगीकृत, नवनिर्माण (शब्द निर्माण) अनुकूलन, अनुवाद, शब्द निर्माण प्रक्रिया का अभिन्न अंग हैं।

1. **अंगीकृत:** तकनीकी शब्दावली का निर्माण करते हुए वैज्ञानिक शब्दावली आयोग ने बड़ी मात्रा में अन्तर्राष्ट्रीय शब्दों का चयन किया है। उदाहरणार्थ— रासायनिक तत्त्वों और यौगिकों के नाम जैसे कार्बन-डाईऑक्साइड, ऑक्सीजन आदि, लिए गए हैं। व्यक्तियों के नामों पर बनाए गए शब्दों में, एम्पियर, वोल्ट, मीटर आदि। नामावली के आधार पर निर्मित शब्द – सराका, इन्डिका आदि शब्दों को अंगीकृत कर लिया गया है। तकनीकी शब्दावली में इन शब्दों को अंगीकृत करते हुए भारतीय भाषाओं की प्रकृति को ध्यान में रखा जाता है।
2. **नवनिर्माण (शब्द निर्माण):** तकनीकी शब्दावली में शब्द उपलब्ध न होने पर नये शब्दों का निर्माण करना पड़ता है। हिन्दी में इस तरह के नए शब्द प्रायः संस्कृत की मूल धातु लेकर उसमें उपसर्ग और प्रत्यय लगाकर बनाए जाते हैं। उदाहरण के लिए 'क्रिया' शब्द से 'प्रक्रिया', 'संक्रिया', 'अनुक्रिया', 'अभिक्रिया' आदि शब्द बनाए गए हैं। तकनीकी शब्दावली में शब्द निर्माण की यह संकल्पना बहुत ही उपयोगी और व्यावहारिक है। उदाहरण के लिए—

(क) Conservation – संरक्षण

(ख) Reservation – आरक्षण

(ग) Preservation – परिरक्षण

आदि शब्द समास पद्धति के सहारे बनाए गए हैं। इस पद्धति में प्रत्यय और उपसर्ग लगाकर अनेक शब्दों का निर्माण किया जाता है। जैसे:

प्राधिकार Authority

अधिकृत Authorised

प्राधिकरण Authority

इसी प्रकार अंग्रेजी उपसर्गों और प्रत्ययों के आधार पर भी शब्दों का निर्माण किया जाता है। जैसे— Sub, Joint, Assistant, Deputy, General आदि।

इसलिए शब्दों में 'उप' संयुक्त सहायक 'उप' और महा शब्दों का प्रयोग होता है। परन्तु हिन्दी में इसका उपयोग उपसर्ग के रूप में होता है।

Notes



Task अंग्रेजी उपसर्गों प्रत्ययों के आधार पर शब्दों के उदाहरण दें।

3. **अनुकूलन:** अनुकूलन से अभिप्राय है – 'शब्दों' को भाषा के अनुकूल बनाना जब तकनीकी शब्दावली में किसी विदेशी भाषा के शब्दों को ग्रहण किया जाता है तो उसे उस भाषा के अनुकूल ढालकर उसका प्रयोग किया जाता है। जैसे – वोल्टता, साबुनीकारक आदि। यहाँ वोल्ट के साथ 'ता' साबुनी के साथ 'कारक' तथा आयन का प्रयोग किया गया है। अर्थात् विदेशी शब्दों में हिन्दी प्रत्यय लगाकर उनका प्रयोग किया जाता है। अनुकूलन की यह भाषा ही सहज प्रकृति होती है। उदाहरण के लिए रेलगाड़ी, बस अड़्डा जैसे शब्द हिन्दी में प्रारम्भ से मौजूद हैं।

इस पद्धति के माध्यम से ही विदेशी शब्दों को ज्यों का त्यों प्रयोग न करके लक्ष्य भाषा के अनुसार उनका अनुकूलन किया जाता है। जैसे—

(क) Comedy कादमी

(ख) Tragedy त्रासदी

(ग) Reportage रिपोर्टेज आदि।

इस पद्धति से भाषा का सहज वाक्य विन्यास बना रहता है।

4. **अनुवाद:** तकनीकी शब्दावली के निर्माण की प्रक्रिया में अनुवाद का विशेष महत्त्व है। अनुवाद की प्रक्रिया के साथ-साथ जीवन पद्धतियों में बदलाव किया जाता है। दिन-प्रतिदिन नवीन संकल्पनाओं का जन्म होता है जिसके लिए नई शब्दावली बनती है। तकनीकी शब्दावली का अनुवाद जब सहज लगने लगे तब उनका शाब्दिक अनुवाद से शब्द ग्रहण कर लिया जाता है। जैसे कालाधन, श्वेत पक्ष आदि। इस पद्धति में कभी-कभी संकल्पना को प्रकट करने वाले पूरे शब्द समूह का ही अनुवाद कर लिया जाता है।

उदाहरण के लिए—

(क) Universal condemnation of War युद्ध की सर्वव्यापी भर्त्सना

(ख) International Monetary Fund अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष

(ग) West Asia Peace Conference पश्चिम एशिया शांति वार्ता

10.1.2 तकनीकी शब्दावली की विचारधाराएँ

हिन्दी में शब्दावली निर्माण का प्रयास स्वाधीनता संग्राम काल से ही प्रारम्भ हो गया था। आजादी के पश्चात् प्रशासनिक और शैक्षिक जरूरतों की पूर्ति के लिए इसे और अधिक व्यवस्थित तथा योजनाबद्ध तरीके से आरम्भ करने का प्रयास किया गया। मूलतः ये प्रयास तीन आधारों पर हुए हैं—

Notes

- (क) शैक्षिक और साहित्यिक संस्थाओं के आधार पर जिसमें नागरी प्रचारिणी सभा, साहित्य सम्मेलन प्रयाग, बंगाल साहित्य परिषद् उस्मानिया विश्वविद्यालय, हिन्दुस्तानी कल्चर आदि प्रमुख हैं।
- (ख) डॉ. रघुवीर, पं. सुन्दरलाल, डॉ. जाफर हसन आदि विद्वानों के प्रयासों के द्वारा।
- (ग) मानव संसाधन विकास मंत्रालय (भारत सरकार के शिक्षा और समाज कल्याण मंत्रालय) द्वारा गठित "वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली आयोग" के द्वारा।

तकनीकी शब्दावली की विचारधाराओं का उल्लेख निम्नांकित है—

1. **शुद्धतावादी विचारधारा:** इस विचारधारा का नेतृत्व डॉ. रघुवीर ने किया इसलिए उन्हें पारिभाषिक निर्माण का पुरोधा भी कहा जाता है। साथ ही उनका कहना था कि रूसी, जर्मन, फ्रेंच, अंग्रेजी और जापानी इन पाँच भाषाओं में तकनीकी शब्दावली संपूर्ण मानी जाती है। डॉ. रघुवीर का मत है कि 'प्रत्यय' और 'उपसर्ग' ही पारिभाषिक है। उसी प्रकार संस्कृत की मूल धातु का उपयोग भारतीय संदर्भों में प्रयुक्त होता है।

डॉ. रघुवीर ने शब्दावली निर्माण के लिए अंग्रेजी के शब्दों का पूर्णतः बाहिष्कार किया। रेडियो स्टेशन, पुलिस जैसे अंग्रेजी शब्द भी उन्हें सहनीय नहीं थे। अतः उनका मत चाहे कितना ही तर्कसंगत और वैज्ञानिक क्यों न रहा हो, परन्तु व्यवहार के आधार पर मान्य नहीं हुआ क्योंकि उनकी विचारधारा में खुलेपन का अभाव था जिससे विदेशी शब्दों की कोई गुंजाइश ही नहीं थी। उनके द्वारा बनाए गए कई शब्द जो अंग्रेजी शब्द निर्माण प्रक्रिया के अनुकरण पर आधारित थे वे शब्द हिन्दी की प्रकृति के अनुकूल नहीं थे।

जैसे—

Radio वित्ततूपयोग

Train संयान

2. **अंग्रेजीवादी विचारधारा (शब्दग्रहणवादी):** यह विचारधारा पश्चिम के उदित और विकसित नव ज्ञान को अविलंब भारत में लाने के लिए अंग्रेजी और अन्तर्राष्ट्रीय शब्दावली को हिंदी में लेने की पक्षधर थी। इस विचारधारा के अनुसार हिन्दी/अंग्रेजी मिश्रित शब्दों का प्रयोग जैसे मूल भाषा में है वैसे ही लक्ष्य भाषा में भी स्वीकार कर उन्हें मान्यता दे देनी चाहिए। इस विचारधारा से अधिकांश लोग सहमत थे क्योंकि हिन्दी में रचपच गए अंग्रेजी शब्दों और अन्तर्राष्ट्रीय शब्दों को यथावत् स्वीकार कर लिया गया था।

जैसे — Blood, Concept, Radiation, मीटर, स्टेशन, पुलिस, लीटर, टन आदि शब्दों को ग्रहण कर लिया गया था।



Did u know? तकनीकी शब्दावली के निर्माण में अंग्रेजी विचारधारा के समय राजगोपालाचार्य और हिन्दुस्तानीवादी विचारधारा के पं. सुन्दरलाल तथा डॉ. जाफर हसन समर्थक थे।

3. **हिन्दुस्तानीवादी विचारधारा:** यह विचारधारा शुद्ध हिंदुस्तानी शब्दों और देशज प्रत्ययों तथा उपसर्गों के आधार पर शब्द निर्माण की पक्षधर थी। इस विचारधारा में व्याकरणिक नियमों और संगतियों को अस्वीकार कर दिया गया था। यह वर्ग हिन्दुस्तानी के नाम पर उर्दू, फारसी और बोलियों की शब्दावली का पक्षधर था जो एक सामाजिक संस्कृति का प्रचार करना चाहता था।

इस सम्प्रदाय के प्रमुख संस्थापक पं. सुदरलाल, डॉ. जाफर हसन थे। इसकी मुख्य पक्षधर संस्थाएँ उस्मानिया विश्वविद्यालय और हिन्दुस्तान कल्चर सोसायटी थी परन्तु इन दोनों ही विचारधाराओं में पूर्ण तालमेल नहीं था।

उस्मानिया विश्वविद्यालय की शब्दावली में भाषा को अत्यन्त सरल और आम लोगों के लिए ग्राह्य बनाने के लिए शब्दों में संगति-असंगति को नजरअंदाज कर दिया गया था और हिन्दुस्तानी उपसर्ग प्रत्यय के आधार पर तकनीकी शब्दावली का निर्माण किया गया। इस विचारधारा में हिन्दुस्तानी प्रत्यय और उपसर्ग लगे शब्दों का प्रयोग अधिक किया गया जो हिन्दी भाषी समाज स्वीकार नहीं कर सका।

10.1.3 हिन्दी से अंग्रेजी के तकनीकी शब्द

परिशिष्ट पारिभाषिक शब्द-संग्रह हिन्दी-अंग्रेजी

अंक	Numerals
अंकित लेख	Inscription
अंग	Part, Limb, Adjunct
अंग या विकारी रूप	Oblique form
अग्र, अगला	Front
अघोष	Voiceless, Breathed
अंत अक्षरलोप	Apocope
अंत अक्षरागम	Coming of Syllable in the end
अंत योगात्मक	Suffix Agglutinative
अंतर्मुखी श्लिष्ट	Internal Inflectional
अंत व्यंजनागम	Coming of Consonant in the end
अंतव्यंजनलोप	Elision of ending Consonant
अंतस्वरागम	Coming of Vowel
अंतस्वर लोप	Elision of ending Vowel
अंधसादृश्य	False Analogy
अंत्यागम	Final Sound Development
अंतःप्रत्यय	Infix
अंतर्भाव	Inclusion
अंतर्मुक्त (अंतर्भावित, गतार्थ)	Implied

Notes		Implication
अंतर्भाग		International Phonetic Association
अंतर्राष्ट्रीय ध्वनि-परिषत्		Semi-vowel, Intermediary
अंतस्थ		Intention, Purpose, Sense
अभिप्राय		Expression
अभिव्यक्ति		Isolating
अयोगात्मक		Meaning
अर्थ		Semanteme
अर्थमात्र, अर्थतत्त्व		Contraction of meaning
अर्थसंकोच		Transference of meaning
अर्थादेश		Semantics
अर्थातिशय, अर्थविचार		Ascending of meaning
अर्थोत्कर्ष		Desending of meaning
अर्थोपकर्ष		Semantic Change
अर्थ-परिवर्तन		Semantic Change, Change of meaning
अर्थ-विकार		Semantics, Samasiology Rhemetology
अर्थ-विचार		Expansion of meaning
अर्थ-विस्तार		Half close
अर्द्ध-संवृत		Half open
अर्द्ध-विवृत		Semi-vowel
अर्द्ध-स्वर		Uvula
अलिचिह्न		Unaspirated
अल्पप्राण		Deaspiration
अल्पप्राणीकरण		Organ, Limb, Part
अवयव (देखो शरीरावयव और चरमावयव)		Inarticulate Sound, Inarticulate Speech
अव्यक्त शब्द		Holophrastic
अव्यक्त योगात्मक		Indeclinable
अव्यय		Continuant
अव्याहृत, अनवरुद्ध, सप्रवाह		Simple Agglutinative
अलिश्ट योगात्मक		Non-pronominalized
असार्वनामिक		Place of Articulation, Organ of Pronunciation
उच्चारण-स्थान		

		Notes
उत्कीर्ण लेख	Inscription	
उत्क्षिप्त	Flapped	
उदात्त	Acute	
उदासीन स्वर	Neutral Vowel	
उद्देश्य	Subject	
उद्धृत शब्द	Loan-word	
उपकुल	Sub-family of Speech	
उपचयात्मक	Agglomerating	
उपचार	Metaphor	
उपधा, उपांत्य	Penultimate	
उपपद	Article	
उपभाषा, विभाषा	Dialect	
उपमान	Analogy	
उपशाखा	Sub-branch of Speech	
उपसर्ग	Prefix	
उपसर्गात्मक अव्यय	Preposition	
उपालिजिह्व	Pharyngeal	
उष्म	Sibilant	
ऊष्म-ध्वनि	Hissing Sound	
ऊष्मा	Breath	
ऊष्मीकरण	Assibilation	
एकांगी विपर्यय	Single-sided Metathesis	
एकाक्षर	Monosyllabic	
एकमूलीय भिन्नार्थक शब्द	Doublets	
एकसंहित	Mono-synthetic	
एकाक्षर, एकाच्	Mono-syllabic	
एकादेश, एकीभाव, स्वर-संधि	Craesis, Contraction	
कार्य	Phenomenon	
कारक	Case	
काल	Tense	
कीलाक्षर	Cuniform	

Notes	कुटिल	Crooked
	कुटुम्ब	Family
	कुटुम्बी	Member of a Family
	कृत	Primary
	कृत्रिम-तालु	False Palate
	कोमल	Sonant, Soft
	कोमल-तालु	Velum, Soft-palate
	कौआ, घंटी, काक	Uvula
	क्रमिक-प्रारम्भ	Gradual Beginning
	क्लिक	Click
	क्रिया	Verb
	क्रिया-सकर्मक	Transitive Verb
	क्रिया-अकर्मक	Intransitive Verb
	क्रियार्थक संज्ञा	Infinitive Verbal Noun
	क्रिया रूप	Conjugation
	क्रियार्थ भेद	Mood
	निश्चयार्थ	Indicative
	संभवनार्थ	Contingent
	संदेहार्थ	Presumptive
	आज्ञार्थ	Imperative
	संकेतार्थ	Negative Contingent
	आदरार्थ आज्ञा	Optative
	क्रियाविशेषण	Adverb
	कृदंत	Participle
	वर्तमानकालिक कृदंत	Present participle
	भूतकालिक कृदंत	Past participle
	पूर्वकालिक कृदंत	Conjunctive participle
	पश्चजिह्वा	Back
	जिह्वामूल	Root
	जिह्वाफल	Blade
	जिह्वामूलीय	Uvular

		Notes
जिह्वोत्कंपी	Trilled	
तद्धित	Secondary	
तर्कशास्त्र	Logic	
तात्पर्य	Sense	
तालव्य	Palatal	
तालव्य भाव	Palatalisation	
तालव्य भाव का नियम	Law of Palatalisation	
तालव्य नियम	Palatal Law	
तालु	Palate	
कठोर	Hard	
कोमल	Soft	
कृत्रिम	Artificial	
तुलनात्मक	Comparative	
तुलनात्मक प्रक्रिया या तौलनिक	Comparative Method	
तुलनात्मक भाषा-विज्ञान	Comparative Philology	
तुलनात्मक वाक्य-विचार	Comparative Syntax	
तुलनात्मक व्याकरण	Comparative Grammar	
त्रयवाद	Trilogics	
त्रिवर्ण, त्रैवर्णिक	Consisting of three letters	
त्र्यक्षर	Tri-syllabic	
दंत	Teeth	
दंतमूल	Root of the teeth	
दंत्य	Dental	
दंत्याग्रीय	Pre-dental	
दंत्यमधीय	Centro-dental	
दंत्यमूलीय	Post-dental	
ध्वनि-परिवर्तन	Phonetic Change	
ध्वनि-प्रतीक	Sound Symbolism	
ध्वनि-प्रवृत्ति	Phonetic Tendency	
ध्वनि-मात्र, ध्वनि-श्रेणी	Phoneme	
ध्वनि-यन्त्र	Kymograph	

Notes	ध्वनि-रेखा	Isophone
	ध्वनि-लिपि	Phonogram
	ध्वनि-विकार	Phonetic Change
	ध्वनि-विचार	Phonology
	ध्वनि-विज्ञान	Phonetic (Including Phonology)
	ध्वनि-शिक्षा	Phonetics
	ध्वनिश्रेणी-विज्ञान	Phonemics
	ध्वनि समिश्रण	Phonetic Contamination
	ध्वनि-संकेत	Sound Symbol
	ध्वन्यनुरूप	Phonetic
	ध्वनि सम्बन्धी चिह्न	Phonetic Sign
	ध्वन्यात्मक लेखन या लिपि	Phonetic Transcription
	नव्य शाखा	Junggrammatiker
	नाद	Voiced, Voice
	नामधातु	Denominative
	नामोद्देश	Enumeration
	नासिका-विवर	Nasal Cavity
	निघात	Absence of Accent
	निपात	Particle
	नियम, व्यापक, नियम	Law
	निरर्थक, स्वार्थिक	Pleonastic
	निम्नस्थानीय स्वर	Low Vowel
	निरवयव	Inorganic
	निर्णय सिद्धान्त	Agreement Theory
	निःश्वास	Exhale, Breath out
	फेफड़ा फुफ्फुस	Lungs
	फ्रिज़ियन	Frisian
	फ्रीजीयन	Phrygian
	बल	Stress
	वाक्य बल	Sentence stress
	अक्षर बल	Syllabic stress

शब्द बल	Word stress	Notes
बल देना	To stress	
बली	Stressed	
बलहीन	Unstressed	
बलवान्	Strong, Stressed, Emphatic	
बल का अपररण	Shift of Emphasis	
बलहीन (व्यंजन)	Weak (Consonant)	
बलात्मक स्वराघात	Stress Accent	
बली (व्यंजन)	Strong (Consonant)	
बहिर्भाव	Exclusion	
बहिर्मुखी विभक्ति-प्रधान	With External Flexion	
बहुसंश्लेषात्मक, बहुसंहित	Poly-synthetic	
बानी, बोल	Slang	
बोली	Patois	
बौद्ध नियम	Intellectual law	
भारत-ईरानी	Indo-Iranian	
भारत-यूरोपीय कुल	Indo-European Family	
भारतीय आर्य भाषा	Indo-Aryan speech	
भारोपीय	Indo-European	
भारोपीय भाषा	Indo-European language	
भाव, मनोभाव	Idea, Emotion	
भावलिपि	Indeography	
भाषण-ध्वनि	Speech-sound	
भाषणावयव	Speech-organ	
मध्य स्वरलोप	Syncope	
मनोविकार	Emotions, Feeling, Sentiments	
मनोभावभिव्यंजकतावाद (अनुभाववाद)	Interjectional Theory	
मनोभावाभिव्यक्तिवाद	Pooh-pooh Theory	
मनोविज्ञान	Psychology	
महाप्राण, महाप्राणीकरण	Aspiration	
मात्राकाल (स्वर)	Quantity (Vowel)	

Notes	मात्रिक अपश्रुति	Quantitative Ablaut
	मानव-विज्ञान	Anthropology
	मानसिक	Mental
	मान स्वर, मानाक्षर	Cardinal Vowel
	मिथ्या सादृश्य	False Analogy
	मिश्र	Mixed
	मिश्रित स्वर	Mixed Vowel
	मुखरता, व्यक्तता	Sonority
	मुखविवर	Mouth Cavity
	मुखोपदेश	Oral Instruction
	मूल धातु	Primary root
	मूर्धन्य	Retroflex
	मूर्धन्य भाव	Cerebralisation
	मूर्धा	Cerebrum
	मूलस्वर (देखो समानाक्षर)	Original Vowel, Simple Vowel
	मैलाप्रापिञ्म	Malapropism
	यदृच्छा सम्बन्ध	Arbitrary Connection, A matter of chance
	युक्त-विकर्ष, विप्रकर्ष	Anaptyxis
	यूरेशिया	Eurasia
	योगात्मक	Agglutinative
	वंशक्रमानुसार वर्गीकरण	Genealogical Classification
	वचन	Number
	वर्ग	Class
	वर्गीकरण	Classification
	वत्स्य	Alveolar
	वर्ण	Letter, Alphabetic Sound
	वर्णमाला	Alphabet
	वर्णनात्मक व्याकरण	Descriptive Grammar
	वर्ण-विचार, ध्वनि-विचार	Phonology
	वर्ण-विज्ञान	Phonetics
	वर्ण-विन्यास	Spelling

		Notes
वर्ण-विपर्यय	Metathesis	
वर्ण-शिक्षा	Phonetics	
वर्णापिनिहित, अपिनिहित	Epenthesis	
वर्त्स	Alveoli, Teeth Ridge	
वर्त्सर्य	Alveolar, Post-dental	
वर्नर-नियम	Verner's Law	
वाक्य	Sentence	
वाक्य-विचार	Syntax	
वाक्य-विन्यास	Construction	
कर्तृवाचक वाक्यविन्यास	Active Construction	
कर्मवाचक	Passive Construction	
वाक्यांश	Phrase	
वाक्यमूलक	Syntactical	
वाक्यशब्द	Sentence-word	
वाग्यंत्र, आस्य	Cavity from lips to Larynx, Mouth	
वाङ्मय	Literature	
वाच्य	Voice	
वृताकार	Rounded	
वृद्धि	Increment, Increase, Strongest	
	Vowel grade, Lengthening	
वैज्ञानिक अध्ययन	Scientific Study	
वैज्ञानिक लिपि	Phonetic Script	
वैरूप्य, असावर्ण्य	Dissimilation	
वृत्त मुखी	Rounded	
व्यंजन	Consonant	
व्यंजन-संधि	Conjunction, Combination, Phonetic Combination (Satzphonetik)	
व्यक्त	Articulate	
व्यक्त ध्वनि	Articulate Sound	
व्यक्ति-वैचित्र्य	Individual Uniqueness	
व्यत्यय	Irregularity	

Notes	व्यवस्थित	Systematic
	व्यवहित	Analytic
	व्याख्यात्मक व्याकरण	Explanatory Grammar
	व्यासप्रधान	Isolating
	व्युत्पत्ति	Derivation
	व्युत्पत्ति-शास्त्र	Etymology
	शक्ति	Power
	शब्द	Word
	शब्दांश विपर्यय	Spoonerism
	शब्दार्थ विज्ञान	Semantics
	शब्द-समूह	Vocabulary
	शब्दानुकृति, अव्यक्तानुकरण	Imitation of Sounds, or Onomatopoeia
	शब्द-विन्यास	Spelling
	शब्दांश, अक्षर	Syllable

स्वःमूल्यांकन

निम्न कथनों में से सत्य और असत्य बताएँ:

1. तकनीकी शब्दावली के निर्माण में सही शब्द न मिलने पर नये शब्द का निर्माण किया जाता है।
2. तकनीकी शब्दों में अनुवाद का कोई महत्त्व नहीं है।
3. तकनीकी शब्दावली की मुख्य विचारधाराएँ — अंग्रेजीवादी विचारधारा और हिन्दुस्तानीवादी विचारधारा हैं।

10.2 सारांश (Summary)

- तकनीकी शब्दावली के निर्माण में शब्दों को ग्रहण करने की पद्धति के अलावा प्रत्यय/उपसर्ग लगाकर नए शब्दों का निर्माण भी किया जाता है। इस कारण कभी कभार शब्दों के अर्थ को संकुचित किया जाता है और कभी विस्तृत किया जाता है।
- नये शब्दों के निर्माण में अंग्रेजी के शब्दों के पर्याय आदि का निर्धारण किया जाता है।
जैसे — Reservation – आरक्षण, Preservation – परिरक्षण।
- विदेशी भाषा के शब्दों का प्रयोग करते समय शब्दों को भाषा के अनुकूल ढाल लिया जाता है। कई बार हिन्दी प्रत्यय लगाकर शब्दों का निर्माण किया जाता है।
उदाहरणतः — Tragedy – त्रासदी, Comedy – कामदी।

Notes

- तकनीकी शब्दावली की अंग्रेजीवादी विचारधारा में अंग्रेजी और अन्तर्राष्ट्रीय शब्दों को यथावत् स्वीकार कर लिया जाता है जैसे Blood, Radiation, मीटर, स्टेशन, पुलिस, आदि।
- तकनीकी शब्दों को बोलचाल की भाषा के निकट लाने के लिए उर्दू, फारसी और बोलियों की शब्दावली का प्रयोग किया जाता था। "उस्मानिया विश्वविद्यालय" और "हिन्दुस्तानी कल्चर सोसायटी" हिन्दुस्तानीवादी विचारधारा की पक्षधर थी।

10.3 शब्दकोश (Keywords)

कयास: कल्पना, अनुमान।

शहादत: गवाही, शहीद होने का भाव।

10.4 अभ्यास प्रश्न (Review Questions)

1. तकनीकी शब्दावली के निर्माण की प्रक्रिया का वर्णन करते हुए नये शब्दों का निर्माण कैसे किया जाता है? इसकी संक्षिप्त जानकारी दें।
2. तकनीकी शब्दावली के निर्माण में विचारधाराओं का क्या योगदान है?
3. निम्नलिखित पर नोट लिखें:
(क) तकनीकी शब्दावली के निर्माण में अंगीकृत और अनुकूलन
(ख) अंग्रेजीवादी विचारधारा
(ग) हिन्दुस्तानीवादी विचारधारा

उत्तर: स्व:मूल्यांकन

1. सत्य
2. असत्य
3. सत्य

10.5 संदर्भ पुस्तकें (Further Readings)



Books

प्रयोजनमूलक हिन्दी – माधव सोनटक्के, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।

प्रयोजनमूलक हिन्दी की नयी भूमिका – कैलाश नाथ पाण्डेय, लोक भारती प्रकाशन, दिल्ली।

इकाई 11: कहानी – परिभाषा, स्वरूप और तत्व

अनुक्रमणिका (CONTENTS)

उद्देश्य (Objectives)

प्रस्तावना (Introduction)

11.1 कहानी का विकास

11.1.1 कहानी की परिभाषा

11.1.2 कहानी का स्वरूप

11.1.3 कहानी के आवश्यक तत्व

11.2 सारांश (Summary)

11.3 शब्दकोश (Keywords)

11.4 अभ्यास प्रश्न (Review Questions)

11.5 संदर्भ पुस्तकें (Further Readings)

उद्देश्य (Objectives)

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी:

- कहानी की परिभाषा और स्वरूप को जानेंगे।
- कहानी को सफल बनाने के लिए आवश्यक तत्वों की जानकारी प्राप्त करेंगे।
- कहानी की कथावस्तु, पात्रों और उनके संवादों को समझ सकेंगे।
- कहानी के उद्देश्यों की व्याख्या कर सकेंगे।

प्रस्तावना (Introduction)

गद्य विद्याओं में कहानी सबसे रोचक विधा है। कहानी सुनने-सुनाने की परम्परा आदि काल से रही है। सृष्टि के आरम्भ में जब भी पहली घटना घटी, किसी सुनाने वाले को कोई सुनने वाला मिला शायद तभी कहानी का जन्म हुआ। हिन्दी के कुछ विद्वानों ने गोस्वामी किशोरीलाल की "इन्दुमती" को हिन्दी की सर्वप्रथम कहानी स्वीकार किया है।

11.1 कहानी का विकास

11.1.1 कहानी की परिभाषा

एडगर एलन पो के अनुसार, "कहानी एक ऐसा आख्यान है, जो इतना छोटा होता है कि एक घण्टे भर में पढ़ा जा सकता है और जो पाठक पर एक ही प्रभाव उत्पन्न करने के उद्देश्य से लिखा गया होता है।"

बाबू श्यामसुन्दर दास ने भी अपनी परिभाषा में नाटकीय ढंग पर अधिक बल दिया है। उनके विचारानुसार – “आख्यायिका (कहानी) एक निश्चित लक्ष्य या प्रभाव को लेकर लिखा गया नाटकीय आख्यान है।”

हिन्दी के सुप्रसिद्ध साहित्यकार अज्ञेय जी कहते हैं— “कहानी जीवन की प्रतिच्छाया है और जीवन स्वयं एक अधूरी कहानी है, शिक्षा है, जो उम्र-भर मिलती है और समाप्त नहीं होती।

इलाचन्द्र जोशी के अनुसार, “जीवन का चक्र नाना परिस्थितियों के संघर्ष से उल्टा-सीधा चलता रहता है इस सुबृहत-चक्र की विशेष परिस्थिति का प्रदर्शन ही कहानी है।”



Did u know? सफल कहानी वही है जो बीस मिनटों में पढ़ी जा सके। इसमें घटनाओं का विवरण इस प्रकार हो कि पाठक की जिज्ञासा वृत्ति शांत हो जाए!

एच. जी. वेल्स का कहना है कि “कहानी वह कथा है जो घण्टे भर में पढ़ी जा सके।” (Fiction that can be read in one hour.)

11.1.2 कहानी का स्वरूप

कहानी मानव जीवन का एक आवश्यक अंग है। भारतीय साहित्य में वेदों, उपनिषदों संस्कृत और बौद्ध जातकों में कई कहानियाँ मिलती हैं। आज भारतीय कहानी साहित्य विषय व्यापकता, गम्भीरता, शिल्प विधान, कलात्मकता की दृष्टि से अत्यन्त समृद्ध है। कहानी किसी नाटकीय घटना, परिस्थिति, चरित्र के किसी पड़ाव, अनुभव के अंश या किसी भौतिक समस्या का वर्णन करती है।

कहानी का आकार सभी विद्वानों ने छोटा ही कहा है। अधिकांश विद्वान् कहानी को एक ही बैठक में पढ़ी जा सकने वाली रचना मानते हैं और यह बैठक 20 मिनट से दो घण्टे तक मानी गई है।

कहानी पढ़ते हुए कहानी का घटनाचक्र, उसके पात्र और वातावरण सब मिलकर ऐसा रोचक आकर्षण पैदा करते हैं कि पाठक भौतिक रूप से किसी विशेष स्थान पर बैठा हुआ भी मानसिक रूप से उन पात्रों, स्थानों और घटनाओं के पास पहुँच जाता है जो कहानी में विद्यमान हैं। पाठक को मानसिक रूप से लेखक द्वारा अपनी कलात्मक वर्णन शक्ति से कहानी के वातावरण में पहुँचा देना ही प्रभावान्विति कहलाती है।

एक अच्छी कहानी में जब तक पात्र अथवा नायक तथा नायिका के दुःख-सुख, पाठक के भी दुःख-सुख न बन जाएं तब तक कहानी प्रभावपूर्ण नहीं बनती। संवेदना कहानी कला की जान है। जब तक किसी कहानी के पात्र से हम घृणा नहीं करेंगे, प्यार न करेंगे, तथा विभिन्न परिस्थितियों के कारण दुःख से घिरे पात्र के प्रति दया का भाव नहीं उमड़ेगा तब तक कहानी प्रभावशाली नहीं हो सकती।

प्रत्येक कहानी में सफल लेखक किसी-न-किसी सत्य को सिद्ध करना चाहता है और वह सत्य जीवन और जगत् में सर्वमान्य होता है। जिस प्रकार ‘कफ़न’ कहानी में इस सत्य का उद्घाटन है कि गरीबी मानवता को हर लेती है।

एक अच्छी कहानी में लेखक अपनी वर्णन शक्ति से पाठक के मन, बुद्धि और हृदय को एक-सा प्रभावित करते हुए प्रभावपूर्णता के शिखर पर पहुँचा देता है।

Notes

लाखों कहानियाँ आरम्भ होते ही पाठक को आकर्षित कर लेती हैं। ज्यों-ज्यों कहानी पढ़ते हुए पाठक आगे बढ़ता है उसकी रुचि अधिक तीव्र होती जाती है और साथ ही कौतूहल में भी वृद्धि होती जाती है। एक अच्छी कहानी में कौतूहल, करुणा, हास्य और प्रकृति जिज्ञासा आदि को जागृत करने की क्षमता होती है।

चरित्र-चित्रण, समायोजना, भाषा शैली, वातावरण, उद्देश्य आदि तत्वों का विद्यमान होना और इसके आरम्भ, मध्य और अन्त को विधिपूर्वक सम्पूर्ण करना एक अलग और स्वतन्त्र तकनीक है।

संसार का और जीवन का सारा कार्य-व्यापार मानव से ही सम्बन्ध रखता है। जितनी भी घटनाएँ और परिवर्तन संसार में होते हैं मानव हृदय पर उसकी प्रतिक्रिया होना आवश्यक है। इसलिए कहानी में मानव का कलात्मक शोषण और सांकेतिक चरित्र-चित्रण होता है।



Notes कहानी अधिकाधिक संक्षिप्त होनी चाहिए। कहानी की सफलता इसी में है कि वह पाठक के हृदय को छू सके।

कहानी में सक्रियता का बना रहना अति आवश्यक है। यदि कहानी में से सक्रियता समाप्त हो जाए तो कहानी का न केवल विकास हो पाएगा अपितु कहानी, कहानी न रहकर घटनाओं का ब्यौरा मात्र रह जाएगी। इसी प्रकार यदि कहानी में सक्रियता समाप्त हो जाए तो वह कहानी, कहानी न रहकर घटनाओं की सूची मात्र रह जाएगी।

11.1.3 कहानी के आवश्यक तत्व

आधुनिक हिन्दी कहानी की रचना विधान पाश्चात्य ढंग पर ही विकसित की गई है। इसके आधार पर हिन्दी कहानी में निम्न मुख्य तत्व हैं—

1. कथावस्तु
2. पात्र और चरित्र-चित्रण
3. कथोपकथन
4. देशकाल-वातावरण
5. भाषा शैली
6. उद्देश्य

कहानी के इन मुख्य तत्वों का वर्णन निम्नांकित है—

1. **कथावस्तु:** कहानी का मानव जीवन से सीधा सम्बन्ध है और जीवन का क्षेत्र बहुत व्यापक है। इसी व्यापक जीवन और जगत् की परिधि में से मानव स्वभाव के विलक्षण चरित्र पर कहानी प्रकाश डालती है। इसलिए मानव जीवन में से ही कहानी को कथावस्तु अथवा कथानक की प्राप्ति होती है। कथानक की प्राप्ति के मुख्य स्थान (क) इतिहास और पुराण, (ख) पत्र-पत्रिकाएँ, (ग) दैनिक जीवन की घटनाएँ तथा साहित्य कल्पना हैं।

(क) **इतिहास और पुराण:** पुराण भारतीय संस्कृति, धर्म और दर्शन के विकास का इतिहास और स्रोत है। इसी प्रकार मानव सभ्यता और उसके उत्थान-पतन का विधिवत् ब्यौरा इतिहास

में संकलित है। अतः इतिहास और पुराण मानव जीवन के विकास का ही इतिहास है और कहानी कई ऐतिहासिक पात्रों की जीवनी और जीवन की मार्मिक घटनाओं को कथानक रूप में लेकर उसका प्रयोग करती है।

(ख) **पत्र-पत्रिकाएँ:** पत्र-पत्रिकाओं में भी मानव जीवन, जिनमें राजनीति, धार्मिक, सामाजिक पक्ष प्रधान रहते हैं, का भी वर्णन रहता है। मानव-जीवन के इन्हीं पक्षों में होने वाले परिवर्तन, घटनाएँ और दुर्घटनाएँ इसमें भरी रहती हैं। एक कुशल कहानीकार इन्हीं पत्रिकाओं से उठाई गई किसी सामाजिक समस्या को सुलझाने के लिए उसे कहानी का रूप दे देता है। किसी दुर्घटना के किसी मार्मिक पक्ष को लेकर अपनी कल्पना और कला के बल पर कहानीकार एक संवेदनशील और रोचक कहानी का निर्माण करता है।

(ग) **दैनिक जीवन की घटनाएँ तथा साहित्य कल्पना:** साधारण व्यक्ति अपने जीवन में घटने वाली विशेष घटनाओं का उचित उपयोग नहीं कर सकता, परन्तु एक कुशल साहित्यकार अपने और दूसरों के जीवन में घटने वाली घटनाओं और अपनी आँखों से देखे अनेक मार्मिक दृश्यों को कथावस्तु के रूप में चुन लेता है। क्योंकि कहानीकार बहुत संवेदनशील होता है, वह अपने मन पर पड़े प्रभावों और जीवन को मोड़ देने वाली विशेष घटनाओं को दूसरों तक पहुँचाना चाहता है। किसी स्थान पर लेखक किसी बस या रेल दुर्घटना को देखता है या मरी हुई माँ के पास बिलखते हुए नन्हें बच्चे को देखकर माता और सन्तान के स्नेहपूर्ण नाते को मार्मिक रूप देकर कहानी का कथानक जोड़ लेता है।

2. **पात्र और चरित्र-चित्रण:** उन घटनाओं, परिवर्तनों और प्रभावों से जिनका कहानी में वर्णन रहता है, पात्र ही प्रभावित होते हैं और पात्र अधिकतर मानव समाज से ही होते हैं। जिन कहानियों में चरित्र-चित्रण नहीं होता वे स्थायी, प्रभावशाली और साहित्यिक दृष्टिकोण से उच्चकोटि की कहानियाँ नहीं होतीं। प्रेमचन्द ने इस सम्बन्ध में अपने विचार प्रकट करते हुए कहा है, कि “घटनाओं का कोई स्वतन्त्र महत्त्व नहीं होता। उनका महत्त्व केवल पात्रों के मनोभावों को व्यक्त करने में ही होता है।” इस प्रकार यह बात स्पष्ट है कि चरित्र-चित्रण के बिना कहानी असफल, अधूरी और असशक्त ही रहती है।

चरित्रों के प्रकार: सामान्यतः चरित्र दो प्रकार के होते हैं—

(क) **स्थिर चरित्र अथवा पात्र:** ऐसे पात्रों का जीवन संघर्ष युक्त और प्राकृतिक होता है। ऐसे पात्र कहानी कला में भी अधिक उपयोगी सिद्ध नहीं होते क्योंकि जिस जीवन में संघर्ष और समस्या का अभाव है वह जीवन कहानी में मनोरंजन और कौतूहल उत्पन्न नहीं कर सकता।

(ख) दूसरे प्रकार के पात्रों के मन में प्रभावों, क्रियाओं, प्रतिक्रियाओं के घात-प्रतिघात चलते रहते हैं। वे घटनाओं के किसी ऐसे पेच अथवा फंदे में फँसे होते हैं जिससे उभरने के लिए वे प्रयत्नशील होते हैं। इस प्रकार इस अर्न्तद्वन्द्वपूर्ण पात्रों के जीवन में संघर्ष, समस्याओं और घटनाओं की भरमार रहती है। ऐसे पात्र सशक्त और प्रभावशाली, तथा मनोरंजक कहानियों के विकास में बड़े सफल सहायक सिद्ध होते हैं।

कहानी में पात्रों का चरित्र-चित्रण सांकेतिक मात्र होता है। कहानी में चरित्र के विकास को कम दिखाया जा सकता है। कहानी में तो केवल चरित्र-विशेष की छाया मात्र ही प्रस्तुत की जा

Notes

सकती है और किसी चरित्र को उभारने का सबसे प्रभावशाली अंग संवाद-योजना है, क्योंकि संवाद-योजना के समय पात्र अपने बारे में और अपनी समस्या के बारे में स्वयं बोलता है तब वे चरित्र अथवा पात्र अथवा पाठक आमने-सामने हो जाते हैं। कहानी की सर्वाधिक प्रभावशाली तथा व्यवहारोपयोगी चरित्रांकन पद्धति वह होती है जिनमें नाटकीय विधि का उपयोग होता है। इस विधि के अनुसार संवादों के अन्तराल में पात्र स्वयं अपने मुख से अपने चरित्र के प्रकाशक विविध गुणों, अनुभूतियों, आशाओं, निराशाओं, आकांक्षाओं, आदर्शों अथवा रुचि-अरुचि तथा भावनाओं का विवरण उपस्थित करता है। यहाँ वह अपने विषय में स्वयं बोलता है, और इस प्रकार कथन करता है कि उसके अन्तःकरण का स्वयंमेव भली-भाँति उद्घटित हो जाता है।

चरित्र-चित्रण का आधार: अब हमें यह सोचना है कि चरित्र-चित्रण का आधार यथार्थ जगत् है अथवा मनोविज्ञान। इसके बारे में हम यह सोचते हैं कि कहानियों की घटनाएँ समस्याएँ पात्र अधिकतर कल्पनात्मक जन्य होती हैं। यह कल्पना मन की उपज है। इसलिए यथार्थ जीवन में सत्य को सामने रखते हुए मनोवैज्ञानिक ढंग से चरित्र-चित्रण करना अधिक तर्कसंगत है।

चरित्र-चित्रण के समय एक और बात का ध्यान रखना आवश्यक है कि कहानी में पात्रों की संख्या कम हो। यदि पात्र अधिक होंगे तो उनका चरित्र स्पष्ट करना टेढ़ी खीर हो जाएगा। इसलिए कुशल कथाकार मुख्य पात्र, नायक अथवा नायिका के चरित्र को उभारने, विकसित करने और संवारने का अधिक प्रयत्न करता है। चरित्र-चित्रण के स्वभाव, वर्णन, वेष-भूषा, रूपाकार, और भाषा का वर्णन और प्रदर्शन करके चरित्र-चित्रण को प्रभावशाली बनाया जा सकता है।

3. **कथोपकथन:** अच्छी संवाद योजना किसी भी कहानी के प्राण कहे जा सकते हैं। कहानी में जिस स्थल पर सुन्दर संवाद योजना होगी, वहीं कहानी का प्रभाव, रोचकता, कौतूहल आदि तत्त्व अधिक प्रभावशाली तथा संवेदनापूर्ण हो जाते हैं। इसीलिए संवाद योजना युक्त कहानी का भाग पाठक को सर्वाधिक प्रभावित करता है।

संवाद योजना के मुख्य उद्देश्य निम्न हैं—

- (क) संवाद कहानी के पात्रों के चरित्र को उभारते हैं।
- (ख) इससे वर्णन में रोचकता और प्रभाव का संचार होता है।
- (ग) संवाद कथावस्तु के विकास में सहायक हैं।
- (घ) संवाद योजना से कहानी अधिक संवेदनशील बन जाती है।
- (ङ) अच्छी संवाद योजना कहानी में वातावरण का निर्माण करने और स्वाभाविकता लाने में बड़ी सहायक सिद्ध होती है।

एक अच्छी संवाद योजना के आवश्यक गुण निम्न हैं—

- (क) संवाद देश-काल, पात्र, घटना और भाव आदि के अनूकूल हों।
- (ख) संवाद योजना संक्षिप्त होनी चाहिए।
- (ग) संवाद चुटीले, तर्कयुक्त और कौतूहल उत्पन्न करने वाले होने चाहिए।

4. **देशकाल-वातावरण:** कहानी में वास्तविकता लाने के लिए, उसको प्रभावोत्पादक बनाने के लिए स्थिति-चित्रण और वातावरण निर्माण की अति आवश्यकता होती है। वातावरण के निर्माण के बिना कथा के पात्र और घटनाएँ आधारहीन होकर वास्तविकता से परे हो जाएँगे।

5. **भाषा शैली:** कहानी की भाषा सरल, रोचक और स्वाभाविक होनी चाहिए। भाषा ऐसी होनी चाहिए कि जो वस्तु, पात्र और चरित्र तथा कहानी के लक्ष्य को भली प्रकार अभिव्यक्त कर सके। विभिन्न हिन्दी कहानियों में, प्रेमचन्द की कहानियों में व्यावहारिक भाषा और प्रसाद जी की कहानियों में अलंकारिक और साहित्यिक भाषा के दर्शन होते हैं।

कहानियों में आत्मकथात्मक, नाटकीय, पत्रात्मक, डायरी, शिक्षित शैली आदि मुख्य शैलियाँ प्रचलित हैं।

6. **उद्देश्य:** कहानी का उद्देश्य केवल मनोरंजन करना ही नहीं किन्तु मानव जीवन के सत्यों का उद्घाटन करना भी है। कहानी मानव चरित्र पर प्रकाश डालती है और मानव मन का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण भी करती है। प्रेमचन्द का कथन है कि कहानी के उद्देश्य को प्रकट करने के लिए निम्न बातें सहायक होती हैं—

“वर्तमान आख्यायिका मनोवैज्ञानिक विश्लेषण और जीवन के यथार्थ और स्वाभाविक चित्रण को अपना ध्येय समझती है।”

अतः यह सिद्ध होता है कि किसी एक कहानी के तत्व एक सफल कहानी के लिए बहुत आवश्यक हैं।



Task

कहानी में संवाद या कथोपकथन कितना महत्व रखते हैं, समझाइए।

स्व:मूल्यांकन

रिक्त स्थान भरें:

1. एक अच्छी कहानी में लेखक अपनी वर्णन शक्ति से पाठक के , ... और को प्रभावित करता है।
2. का विचार है कि अनुभूतियाँ ही रचनाशील भावना से अनुरजित होकर कहानी बन जाती है।
3. रचना विधान की दृष्टि से कहानी के मुख्य तत्व , ... , ... और हैं।

11.2 सारांश (Summary)

- कहानी उतनी ही पुरानी है जितना कि मानव। ज्यों ज्यों मानव जाति का इतिहास आगे बढ़ता है, घटनाएँ अधिक होती जाती हैं, सुनने-सुनाने के लिए बहुत तरह से कुछ घटता जाता है, त्यों त्यों ही कहानी भी विभिन्न रूप धारण करती जाती है।
- कहानी एक ऐसी रचना है जिसमें लेखक का उद्देश्य जीवन के किसी एक मनोभाव या एक अंग को प्रदर्शित करना है।

Notes

- कहानी एक स्वतः पूर्ण रचना है जिसमें घटना या घटनाओं के उत्थान-पतन और मोड़ के साथ पात्रों के चरित्र पर प्रकाश डालने वाला कोतूहल पूर्ण वर्णित होता है।

11.3 शब्दकोश (Keywords)

कथोपकथन: बातचीत, संवाद।

कथानक: छोटी कथा, कथा सार।

देशकाल: स्थान और समय।

11.4 अभ्यास प्रश्न (Review Questions)

1. कहानी की परिभाषा और स्वरूप का वर्णन करें।
2. हिन्दी कहानी के विकास का संक्षिप्त वर्णन कीजिए।
3. कहानी के विभिन्न तत्वों की व्याख्या करें।

उत्तर: स्व:मूल्यांकन

1. मन, बुद्धि, हृदय
2. प्रेमचन्द
3. कथावस्तु, पात्र, कथोपकथन, भाषा शैली

11.5 संदर्भ पुस्तकें (Further Readings)



हिन्दी साहित्य युग और प्रवृत्तियां – डॉ. शिवकुमार शर्मा।
हिन्दी साहित्य का इतिहास – आचार्य रामचन्द्र शुक्ल।

इकाई 12: कहानी के प्रमुख भेद

Notes

अनुक्रमणिका (CONTENTS)

उद्देश्य (Objectives)

प्रस्तावना (Introduction)

12.1 कहानी के प्रमुख भेद

12.1.1 विषय-वस्तु की दृष्टि से कहानी का वर्गीकरण

12.1.2 उद्देश्य की दृष्टि से कहानी का वर्गीकरण

12.1.3 शिल्प अथवा शैली की दृष्टि से कहानी का वर्गीकरण

12.2 सारांश (Summary)

12.3 शब्दकोश (Keyword)

12.4 अभ्यास प्रश्न (Review Questions)

12.5 संदर्भ पुस्तक (Further Reading)

उद्देश्य (Objectives)

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी:

- कहानी के विभिन्न भेदों को समझ सकेंगे।
- कथा प्रधान, वातावरण प्रधान कहानियों का अर्थ समझ सकेंगे।
- विषय वस्तु, शिल्प, उद्देश्य की दृष्टि से कहानी का वर्गीकरण कर सकेंगे।

प्रस्तावना (Introduction)

कहानी साहित्य की गद्यात्मक विधा जिस में जीवन, जगत की किसी एक घटना, वस्तु, व्यक्ति, परिस्थिति, भावना या विचार को लेकर ऐसी संवेदनात्मक और प्रभावान्वित का सृजन किया जाता है जिससे कहानी पढ़ने वाला भाव-विभोर होकर रससिक्त होने में समर्थ हो जाता है।

12.1 कहानी के प्रमुख भेद

हिन्दी में अनेक प्रकार की कहानियाँ लिखी जा चुकी हैं और लिखी जा रही हैं, जिनका सरलता से वर्गीकरण नहीं किया जा सकता। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, प्रेमचन्द और जयशंकर प्रसाद ने कहानियों को वर्गीकृत करने का प्रयास किया है। ये वर्ग संख्या में इतने अधिक हैं कि इन्हें याद नहीं रखा जा सकता।

Notes

हिन्दी कहानियों को स्थूल रूप से तीन वर्गों (क) कथा प्रधान, (ख) वातावरण प्रधान, तथा (ग) प्रभाव प्रधान कहानियों में विभक्त किया गया है। इनका विवरण निम्न है—

1. **कथा प्रधान कहानियाँ:** ऐसी कहानियों में साधारणतः वस्तु वर्णन को महत्त्व दिया जाता है। कथा प्रधान कहानियाँ तीन प्रकार की होती हैं:
 - (क) **चरित्र प्रधान कहानियाँ:** ऐसी कहानियों में कहानीकार पात्रों के चरित्र पर ही अधिक ध्यान देता है। ऐसी कहानियों का सुन्दर रूप हमें मनोवैज्ञानिक कहानियों में देखने को मिलता है। प्रेमचन्द की 'बूढ़ी काकी' कहानी एक चरित्र प्रधान तथा जैनेन्द्र जी की 'जाह्नवी' कहानी मनोवैज्ञानिक कहानी का सुन्दर उदाहरण है।
 - (ख) **घटना प्रधान कहानियाँ:** ऐसी कहानियों में घटना की प्रधानता रहती है। इन कहानियों का मुख्य उद्देश्य मनोरंजन होता है। इनमें कौतूहल की शान्ति तो अवश्य होती है किन्तु कला और चरित्र-सौन्दर्य बहुत कम होता है। ज्वाला दत्त शर्मा और पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी की बहुत सी कहानियाँ घटना प्रधान कहानियाँ ही हैं। कौशिक जी की 'पावन पतित' कहानी भी एक ऐसी ही कहानी है।
 - (ग) **कार्य प्रधान कहानियाँ:** ऐसी कहानियों में सबसे अधिक बल कार्य पर दिया जाता है। जासूसी एवं रहस्य रोमांच की कहानियाँ कार्य प्रधान कहानियों की कोटि में आती हैं। जे० पी० श्रीवास्तव की अति प्रसंगपूर्ण हास्यमय कहानियाँ भी कार्यप्रधान कहानियाँ ही हैं।
2. **वातावरण प्रधान कहानियाँ:** ऐसी कहानियों में वातावरण चित्रण को प्राथमिकता दी जाती है। इन कहानियों में परिस्थितियों में से किसी विशेष पक्ष या अंग पर अधिक बल देकर मुख्य भावना को प्रधान रखा जाता है। प्रेमचन्द जी की कहानी 'शतरंज के खिलाड़ी' को हम वातावरण प्रधान कोटि की कहानी मान सकते हैं।
3. **प्रभाव प्रधान कहानियाँ:** ऐसी कहानियों में कहानीकार का उद्देश्य किसी प्रभाव विशेष की सृष्टि करना होता है। वातावरण, घटना, चरित्र आदि से अधिक महत्त्व कहानी के प्रभाव को दिया जाता है। इन कहानियों में कलात्मकता को विशेष महत्त्व दिया जाता है। केवल मोहनलाल मेहता और जयशंकर प्रसाद की कुछ कहानियाँ प्रभाव प्रधान कहानियों की कोटि में आती हैं।



Did u know? हिन्दी कहानियों को स्थूल रूप से तीन वर्गों—कथा प्रधान, वातावरण प्रधान और प्रभाव प्रधान कहानियों के रूप में बाँटा जाता है!

12.1.1 विषय-वस्तु की दृष्टि से कहानी का वर्गीकरण

विषय-वस्तु की दृष्टि से हिन्दी कहानियों के चार प्रमुख प्रकार हैं—

1. सामाजिक कहानियाँ
2. ऐतिहासिक कहानियाँ

3. मनोवैज्ञानिक कहानियाँ, तथा
4. राजनीतिक कहानियाँ।

इनका विवरण निम्न रूप से दिया गया है—

1. **सामाजिक कहानियाँ:** समाज की विभिन्न समस्याओं को लेकर, उन पर विचार करने की प्रेरणा देने वाली कहानियाँ सामाजिक कहानियों को कोटि में आती हैं। इन कहानियों में समाज के यथार्थ रूप का चित्रण अत्यन्त मार्मिकता एवं सजीवता से करते हुए समाज की विभिन्न समस्याओं पर प्रकाश डाला जाता है। प्रसाद जी और प्रेमचन्द जी की अधिकांश कहानियाँ इसी कोटि में आती हैं।
2. **ऐतिहासिक कहानियाँ:** ऐसी कहानियों में किसी ऐतिहासिक इतिवृत्त को आधार बनाकर, कल्पना का पुट देकर पाठकों के सम्मुख रखा जाता है। प्रसाद जी की ममता, आकाशदीप, गुण्डा, ऐतिहासिक कहानियाँ हैं।
3. **मनोवैज्ञानिक कहानियाँ:** मनोवैज्ञानिक कहानियों में मानव मन की अन्तःप्रवृत्तियों का विश्लेषण होता है। जीवन की असाधारण परिस्थितियों में मन की विभिन्न प्रवृत्तियों का स्पष्ट दिग्दर्शन करना इन कहानियों का मुख्य कार्य है। हिन्दी में सर्व श्री जैनेन्द्र कुमार, इलाचन्द्र जोशी, मोहन राकेश, अज्ञेय ने अनेक मनोवैज्ञानिक कहानियाँ लिखी हैं।
4. **राजनीतिक कहानियाँ:** राजनीतिक उथल-पुथल के कारण उत्पन्न होने वाली परिस्थितियों को आधार बनाकर लिखी जाने वाली कहानियाँ इसी वर्ग में रखी जा सकती हैं। इसी प्रकार राजनीतिक आन्दोलनों में सम्मिलित होने वाले व्यक्तियों के देश प्रेम, त्याग, साहस का चित्रण करने वाली कहानियाँ भी इसी कोटि में गिनी जाने योग्य हैं। कृष्णा सोबती की 'सिक्का बदल गया', प्रसाद जी की 'विराम चिह्न', प्रेमचन्द की 'होली का उपहार', सुदर्शन की कहानी संग्रह "सुप्रभात" की सभी कहानियाँ राजनीतिक कहानियाँ हैं।

12.1.2 उद्देश्य की दृष्टि से कहानी का वर्गीकरण

उद्देश्य की दृष्टि से कहानी को तीन वर्गों में बाँटा जाता है—

1. आदर्शवादी कहानियाँ,
2. यथार्थवादी कहानियाँ, तथा
3. आदर्शोन्मुख यथार्थवादी कहानियाँ।

इन कहानियों में निम्न रूप से वर्णित किया जा सकता है—

1. **आदर्शवादी कहानियाँ:** जिन कहानियों में मानवीय संवेदना और सहानुभूति को जगाने के लिए पाठकों के सम्मुख किसी-न-किसी आदर्श की स्थापना की जाती है उन्हें आदर्शवादी कहानियाँ कहते हैं। प्रसाद, प्रेमचन्द, सुदर्शन आदि अनेक कहानीकारों ने आदर्शवादी कहानियाँ लिखी हैं। प्रसाद जी की 'पुरस्कार', 'मीरा', 'दासी', प्रेमचन्द की 'बड़े घर की बेटी' आदर्शवादी कहानियाँ हैं।
2. **यथार्थवादी कहानियाँ:** इन कहानियों में सामाजिक जीवन की यथार्थ स्थिति का चित्रण करते हुए ऐसा मानवतावादी दृष्टिकोण अपनाया जाता है, जिसमें मानवीय संवेदना की यथार्थ झाँकी

Notes

मिलती है। प्रसाद जी की 'बेटी', 'धीसू' तथा कमलेश्वर जी की 'मांस का दरिया', 'दिल्ली में एक मौत' ऐसी ही कहानियाँ हैं।

3. **आदर्श-मुख्य यथार्थवादी कहानियाँ:** ऐसी कहानियों में लेखक जीवन की वास्तविक स्थिति का चित्रण करने के साथ-साथ पाठकों को आदर्श की ओर उन्मुख करता है। प्रसाद और प्रेमचन्द की इस प्रकार की अनेक कहानियाँ देखने को मिलती हैं।



Task

उद्देश्य की दृष्टि से कहानी के तीन वर्गों का वर्णन करें।

उपर्युक्त वर्गीकरण के अतिरिक्त भी कहानी के विविध प्रकार देखने को मिलते हैं। जैसे – धार्मिक, पौराणिक कहानियाँ, हास्यप्रधान कहानियाँ, भावना प्रधान कहानियाँ, काल्पनिक कहानियाँ, आर्थिक चेतना सम्बन्धी कहानियाँ, आदि।

12.1.3 शिल्प अथवा शैली की दृष्टि से कहानी का वर्गीकरण

कहानियों के वर्गीकरण का एक अन्य आधार, उनमें अपनाई जाने वाली अभिव्यंजना शैली है। शिल्प अथवा शैली की दृष्टि से कहानियों के पाँच प्रकार उल्लेखनीय हैं:

1. वर्णनात्मक
2. आत्मकथात्मक
3. पत्रात्मक
4. संवादात्मक, तथा
5. प्रतीकात्मक।

इन कहानियों का विवरण निम्नांकित है—

1. **वर्णनात्मक कहानियाँ:** ऐसी कहानियों में लेखक किसी घटना, स्थिति चरित्र आदि का प्रत्यक्ष वर्णन अन्य पुरुष सर्वनाम की शैली में करते हैं। हिन्दी की अधिकांश कहानियाँ वर्णनात्मक ही होती हैं।
2. **आत्मकथात्मक कहानियाँ:** जब कोई लेखक कहानी के मुख्य पात्र को 'मैं' का प्रतिरूप देकर उत्तम पुरुषवाची सर्वनाम का प्रयोग करता हुआ कहानी लिखता है तो वह आत्मकथात्मक कहानी कहलाती है। अज्ञेय और जैनेन्द्र कुमार ने आत्मकथात्मक कहानियाँ लिखी हैं। प्रसाद जी की 'छोटा जादूगर' प्रेमचन्द की 'बड़े भाई साहब' और चन्द्रगुप्त विद्यालंकर की 'काम-काज' आत्मकथात्मक कहानियों की श्रेणी की कहानियाँ हैं।
3. **पत्रात्मक कहानियाँ:** कुछ कहानियों में लेखक किसी एक पात्र या एकाधिक विभिन्न पात्रों द्वारा लिखे गए पत्र इस क्रम से प्रस्तुत करता है कि उन्हें पढ़ने से अपने आप ही एक कहानी बन जाती है। ऐसी कहानियों को पत्रात्मक कहानियाँ कहा जाता है। चन्द्रगुप्त विद्यालंकार की 'एक सप्ताह' तथा प्रसाद जी की 'देवदासी' इसी कोटि की कहानियाँ हैं।
4. **संवादात्मक कहानियाँ:** ऐसी कहानियों में पात्रों के संवादों अथवा कथोपथन या वार्तालाप के माध्यम से ही घटना, स्थिति, चरित्र या उद्देश्य की अभिव्यंजना की जाती है। नाटकीयता आ

जाने से कौतूहल और रोचकता में तो वृद्धि होती है तथापि इससे कहानी 'कहानी' न रह कर एकांकी का रूप धारण कर लेती है। जैनेन्द्र जी की 'राजपथिक' एक संवादात्मक कहानी है।

5. **प्रतीकात्मक कहानियाँ:** अधिकांश मनोवैज्ञानिक कहानियाँ प्रतीकात्मक शैली में लिखी जाती हैं। कहानीकार अपनी बात सीधे न कह कर प्रतीकों के माध्यम से वस्तु-सत्य का अन्वेषण करता है। अज्ञेय जी की 'शत्रु', 'साँप', 'कोठरी की बात', मोहन राकेश की 'ईश्वर का कुत्ता', मुक्तिबोध की 'ब्रह्म राक्षस का शिष्य' तथा जैनेन्द्र कुमार की 'तत्सत्' प्रतीकात्मक कहानियाँ हैं।

स्व:मूल्यांकन

निम्न विकल्पों में से उचित विकल्प का चयन कीजिए:

- विषय वस्तु की दृष्टि से कहानियों का प्रमुख प्रकार कौन सा है?
 (क) सामाजिक और ऐतिहासिक (ख) संवादात्मक
 (ग) पत्रात्मक (घ) आदर्शवादी
- आत्मकथात्मक कहानियाँ किन कहानीकारों ने लिखी हैं?
 (क) कृष्णा सोबती (ख) अज्ञेय और जैनेन्द्र
 (ग) प्रसाद जी (घ) सुदर्शन
- अज्ञेय जी की कौन सी कहानी पत्रात्मक कहानी है।
 (क) राजपथिक (ख) देवदासी
 (ग) एक सप्ताह (घ) कोठरी की बात

12.2 सारांश (Summary)

- आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, प्रेमचन्द और जयशंकर प्रसाद ने कहानियों का वर्गीकरण करने का प्रयास किया है।
- हिन्दी कहानियों को तीन वर्गों में विभक्त किया गया है – कथा प्रधान, वातावरण प्रधान, और प्रभाव प्रधान।
- विषय वस्तु की दृष्टि से कहानियाँ सामाजिक, ऐतिहासिक, मनोवैज्ञानिक और राजनीतिक होती हैं।
- वर्णनात्मक कहानियाँ, आत्मकथात्मक कहानियाँ, संवादात्मक कहानियाँ, प्रतीकात्मक कहानियाँ, शिल्प अथवा शैली की दृष्टि से कहानी के प्रकार हैं।

12.3 शब्दकोश (Keyword)

वर्गीकरण: प्रकार, भेद।

Notes

12.4 अभ्यास प्रश्न (Review Questions)

1. कहानी कितने प्रकार की होती है? संक्षेप में उत्तर दें।
2. उद्देश्य की दृष्टि से कहानियों का वर्गीकरण करें।
3. निम्न पर नोट लिखें:
(क) विषय वस्तु की दृष्टि से कहानी का वर्गीकरण।
(ख) वर्णनात्मक और आत्मकथात्मक कहानियाँ।
(ग) आदर्शवादी और यथार्थवादी कहानियाँ।

उत्तर: स्व:मूल्यांकन

1. (क)
2. (ख)
3. (घ)

12.5 संदर्भ पुस्तक (Further Reading)



हिन्दी साहित्य का इतिहास – आचार्य रामचंद्र शुक्ल।